

NOT FOR SALE

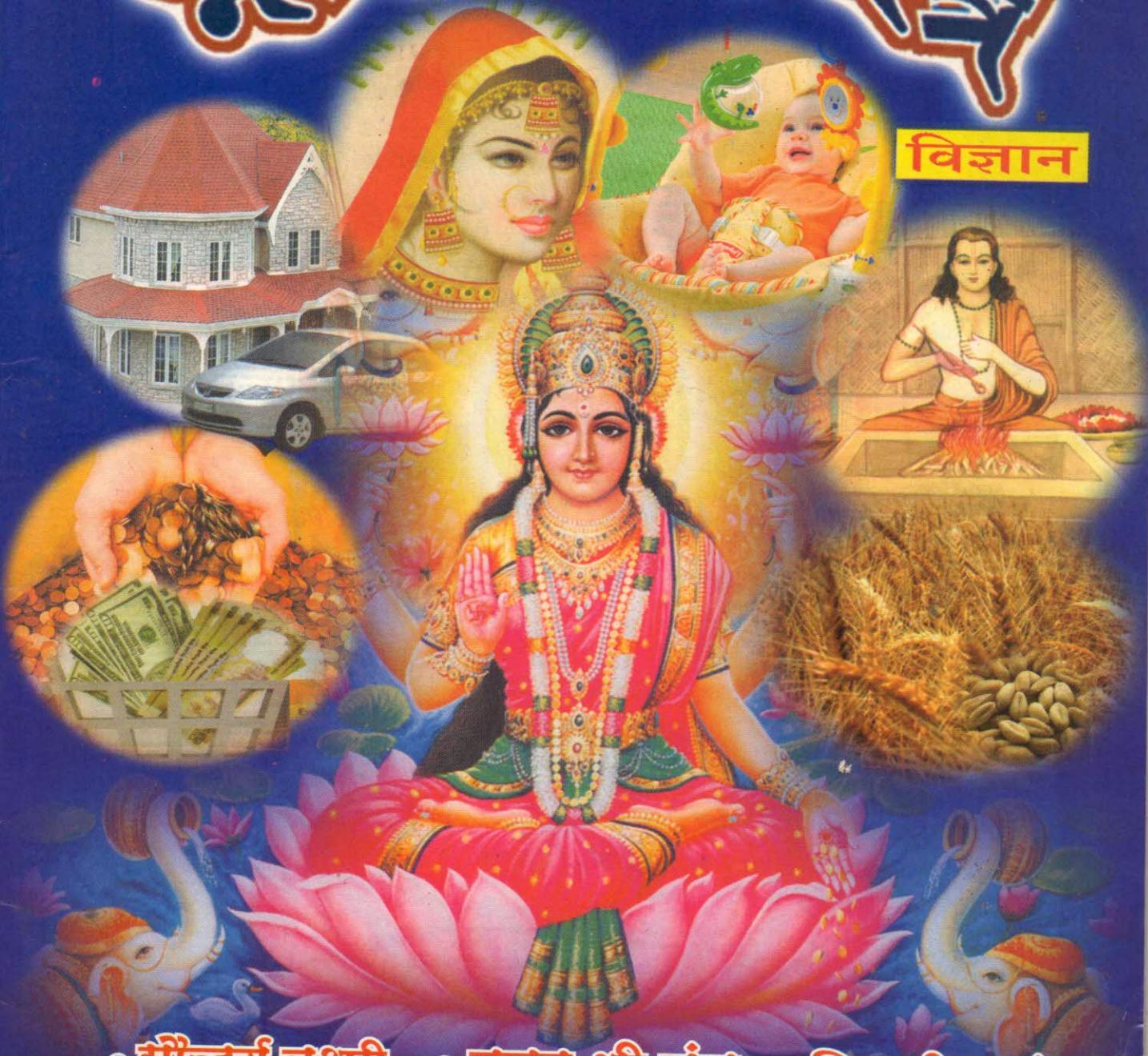
# लक्ष्मी साधना विशेषांक (प्रथम)

सितम्बर 2009

मूल्य : 24/-

# सत्तं द्वयम्

विज्ञान



- सौन्दर्य लक्ष्मी
- पारद श्री चंत्र
- सिद्ध बीसा चंत्र
- मंत्र साधना के चमत्कार
- कनकप्रभा-कनकधारा साधना





## COLLECTION OF VARIOUS

- HINDUISM SCRIPTURES
- HINDU COMICS
- AYURVEDA
- MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with



By

Avinash/Shashi

[creator of  
hinduism  
server]

# लक्ष्मी वर-वरद माल्य

ॐ ह्रीं माते माते महमाते सर्वशति श्वस्पिणी  
चतुर्वर्गस्तवद् अन्दस्तस्त अस्माने सिद्धिदा भव

माला के संबंध में शास्त्र कहते हैं कि माला धारण ही चतुर्वर्ग अथत् धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष को प्रदान करने वाली है

आप धारण करें अद्भुत लक्ष्मी वर-वरद माल्य जिसका प्रत्येक मनका लक्ष्मी के १०८ स्वरूप मंत्रों से आपूरित, मंत्र सिद्ध एवं प्राण प्रतिष्ठा युक्त है, ऐसी ही माला जब भगवान के गले में धारण होती है, तो बन जाती है वैजयन्ती माला ...

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

भगवान विष्णु की नाभि से उत्पन्न कमल पर जो देवी आस्था होती है, उनका नाम है - लक्ष्मी। उन्हें केवल कमल पर आसीन ही नहीं किया गया, उन्हें साक्षात् 'कमला' की संज्ञा दी गई। लक्ष्मी, जो कि पूर्णरूप से ऐश्वर्य, धन-धान्य और समृद्धि की देवी हैं, उनका कमल पर आसीन होना एक प्रतीक है कि किस प्रकार से भौतिक और आध्यात्मिक स्थितियां जीवन में घुली-मिली होती हैं।

यंत्र का तात्पर्य ताप्त पत्र पर उत्कीर्ण कुछ रेखाओं अथवा गोपनीय संकेताक्षरों तक ही सीमित नहीं होता। प्रत्येक वह उपाय, जो हमारे जीवन में सहजता और सरलता से अल्प समय के अन्दर इच्छित प्राप्त करा दे। लक्ष्मी वर-वरद माल्य केवल किसी माला का ही नाम नहीं, यह तो साक्षात् लक्ष्मी को अपने शरीर, प्राण और सम्पूर्ण जीवन में उतार लेने की क्रिया है।

लक्ष्मी वर-वरद माल्य ठीक ऐसी ही दिव्य माला है, जिसमें लक्ष्मी के समस्त १०८ स्वरूपों का समाहितीकरण भली-भाँति किया गया है। लक्ष्मी के १०८ स्वरूपों की साधना करना, उन्हें पूर्ण रूप से चंचला होते हुए भी सिद्ध कर लेना और केवल सिद्ध ही नहीं कर लेना वरन् उनका आबद्धीकरण भी कर देना है, केवल इस दिव्य माल्य (माला) के द्वारा ही सम्भव है।

यंत्र विद्या में तो वे उपाय हैं, जो कि कठिन से कठिन कार्य को सरलतम बना देते हैं, और यही क्रिया सम्पन्न होती है लक्ष्मी वर-वरद माल्य से। उसके प्रत्येक मनके में लक्ष्मी के एक-एक स्वरूप को लेकर उसकी पूर्ण चैतन्यता और प्रभावकारी गुण सहित उतार दिया जाता है, जो एक अत्यन्त दुर्घट और गोपनीय क्रिया है।

आनो भ्रदा: क्रतवो यन्तु विश्वतः  
मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति, प्रगति और भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक पत्रिका

# श्रीकृष्णकाश्च

॥ॐ वस्त्रात्प्रवाय नास्यद्यथाय गुरुभ्यो नमः॥



मैं रचता हूँ



निर्भिक शिष्य

सद्गुरुदेव

सद्गुरु प्रवचन

	साधना
देवी कनकधारा -	
कनकप्रभा साधना	28
शंकराचार्य विचरित	
लक्ष्योत्तमा साधना	34
पारद श्री यंत्र	38
जैन साबर तंत्र के अनृठे	
प्रयोग	46
कामेश्वरी महालक्ष्मी	
तंत्र साधना	58
नचिकेता अग्नि विद्या	
साधना	64
स्थाई लक्ष्मी साधनाएं	67
सौन्दर्योत्तम साधना	70
सिद्ध बीसा यंत्र	76
मैं समय हूँ	61
वराहमिहिर	63
इस मास जोधपुर में	80
एक दृष्टि में	83

वर्ष 29 अंक 09  
सितम्बर 2009 पृष्ठ 88



पूजन

दीपावली पूजन पैकेट

41

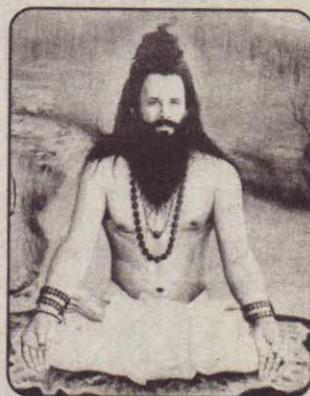


विशेष

नवरात्रि - दीपावली	
ज्ञान संदेश	23
सात स्वर्णिम सूत्र -	
समृद्धिशाली जीवन हेतु	25
जीवन का आनन्द सार	50
मंत्र साधना	
का चमत्कार	55
गुरु ध्यान -	
गुरु समर्पण	73
प्राण प्रतिष्ठित साधना	
उपकरण	77

स्तोत्र  
कनकधारा स्तोत्र

31



प्रकाशक एवं स्वामित्व  
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान  
द्वारा  
सुदर्शन प्रिन्टर्स  
487/505, पीरागढ़ी,  
रोलताक रोड, नई दिल्ली-87  
से मुद्रित तथा  
मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान हाईकोर्ट  
कॉलोनी जोधपुर से प्रकाशित

मूल्य (भारत में)

एक प्रति: 24/-  
वार्षिक: 258/-

सिद्धाश्रम, 306 कोहाट एन्कलेब, पीतमपुरा, दिल्ली-110034, फोन: 011-27352248, टेली फैक्स: 011-27356700  
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर - 342031 (राज.) फोन: 0291-2432209, टेली फैक्स: 0291-2432010  
WWW address - <http://www.siddhashram.org> E-mail add. - [mtyv@siddhashram.org](mailto:mtyv@siddhashram.org)

## नियम

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं का अधिकार पत्रिका का है। इस 'मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान' पत्रिका में प्रकाशित लेखों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। तर्क-कुर्तक करने वाले पाठक पत्रिका में प्रकाशित पूरी सामग्री को गत्य समझें। किसी नाम, स्थान या घटना का किसी से कोई सम्बन्ध नहीं है, यदि कोई घटना, नाम या तथ्य मिल जाय, तो उसे मात्र संयोग समझें। पत्रिका के लेखक घुमकड़ साधु-संत होते हैं, अतः उनके पते आदि के बारे में कुछ भी अन्य जानकारी देना सम्भव नहीं होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में वाद-विवाद या तर्क मान्य नहीं होगा और न ही इसके लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक या सम्पादक जिम्मेवार होंगे। किसी भी सम्पादक को किसी भी प्रकार का पारिश्रमिक नहीं दिया जाता। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद में जोधपुर-न्यायालय ही मान्य होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को साधक या पाठक कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं। पत्रिका कार्यालय से मंगवाने पर हम अपनी तरफ से प्रामाणिक और सही सामग्री अथवा यंत्र भेजते हैं, पर किर भी उसके बाद में, असली या नकली के बारे में अथवा प्रभाव होने या न होने के बारे में हमारी जिम्मेवारी नहीं होगी। पाठक अपने विश्वास पर ही ऐसी सामग्री पत्रिका कार्यालय से मंगवायें। सामग्री के मूल्य पर तर्क या वाद-विवाद मान्य नहीं होगा। पत्रिका का वार्षिक शुल्क वर्तमान में 258/- है, पर यदि किसी विशेष एवं अपरिहार्य कारणों से पत्रिका को त्रैमासिक या बंद करना पड़े, तो जितने भी अंक आपको प्राप्त हो चुके हैं, उसी में वार्षिक सदस्यता अथवा दो वर्ष, तीन वर्ष या पंचवर्षीय सदस्यता को पूर्ण समझें, इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति या आलोचना किसी भी रूप में स्वीकार नहीं होगी। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी साधना में सफलता-असफलता, हानि-लाभ की जिम्मेवारी साधक की स्वयं की होगी तथा साधक कोई भी ऐसी उपासना, जप या मंत्र प्रयोग न करें जो नैतिक, सामाजिक एवं कानूनी नियमों के विपरीत हों। पत्रिका में प्रकाशित लेखों के लेखक योगी या संन्यासी लेखकों के विचार मात्र होते हैं, उन पर भाषा का आवरण पत्रिका के कर्मचारियों की तरफ से होता है। पाठकों की मांग पर इस अंक में पत्रिका के पिछले लेखों का भी ज्यों का त्यों समावेश किया गया है, जिससे कि नवीन पाठक लाभ उठा सकें। साधक या लेखक अपने प्रामाणिक अनुभवों के आधार पर जो मंत्र, तंत्र या यंत्र (भले ही वे शास्त्रीय व्याख्या के इतर हों) बताते हैं, वे ही दे देते हैं, अतः इस सम्बन्ध में आलोचना करना व्यर्थ है। आवरण पृष्ठ पर या अन्दर जो भी फोटो प्रकाशित होते हैं, इस सम्बन्ध में सारी जिम्मेवारी फोटो भेजने वाले फोटोग्राफर अथवा आर्टिस्ट की होगी। दीक्षा प्राप्त करने का तात्पर्य यह नहीं है, कि साधक उससे सम्बन्धित लाभ तुरन्त प्राप्त कर सकें, यह तो धीमी और सतत प्रक्रिया है, अतः पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ ही दीक्षा प्राप्त करें। इस सम्बन्ध में किसी प्रकार की कोई भी आपत्ति या आलोचना स्वीकार्य नहीं होगी। गुरुदेव या पत्रिका परिवार इस सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की जिम्मेवारी वहन नहीं करेंगे।

## ☆ प्रार्थना ☆

शान्त्यै नमोऽस्तु शरणागतरक्षणायै,  
कान्त्यै नमोऽस्तु कमनीयगुणाश्रयायै।  
क्षान्त्यै नमोऽस्तु दुरितक्षयकारणायै;  
धर्त्र्यै नमोऽस्तु धनधान्य समृद्धिदत्यै॥

हे मात! आप शरण में आये हुए भक्तों की रक्षा करने वाली हैं, शान्तिस्वरूपा हैं, अतः मैं आपको नमन करता हूँ, सभी उदात्त गुणों की आप एकमात्र आश्रय हैं, अतः कान्तिमयी हैं, अपने उपासकों के सभी पापों को नाश करने वाली होने से आप सौम्यरूपा हैं, और सभी को धन-धान्य देकर समृद्ध बनाने वाली हैं, इसीलिए आप जगद्वात्री हैं। मैं भावपूर्ण हृदय से आपके चरणों में पुनः-पुनः नमन करता हूँ।

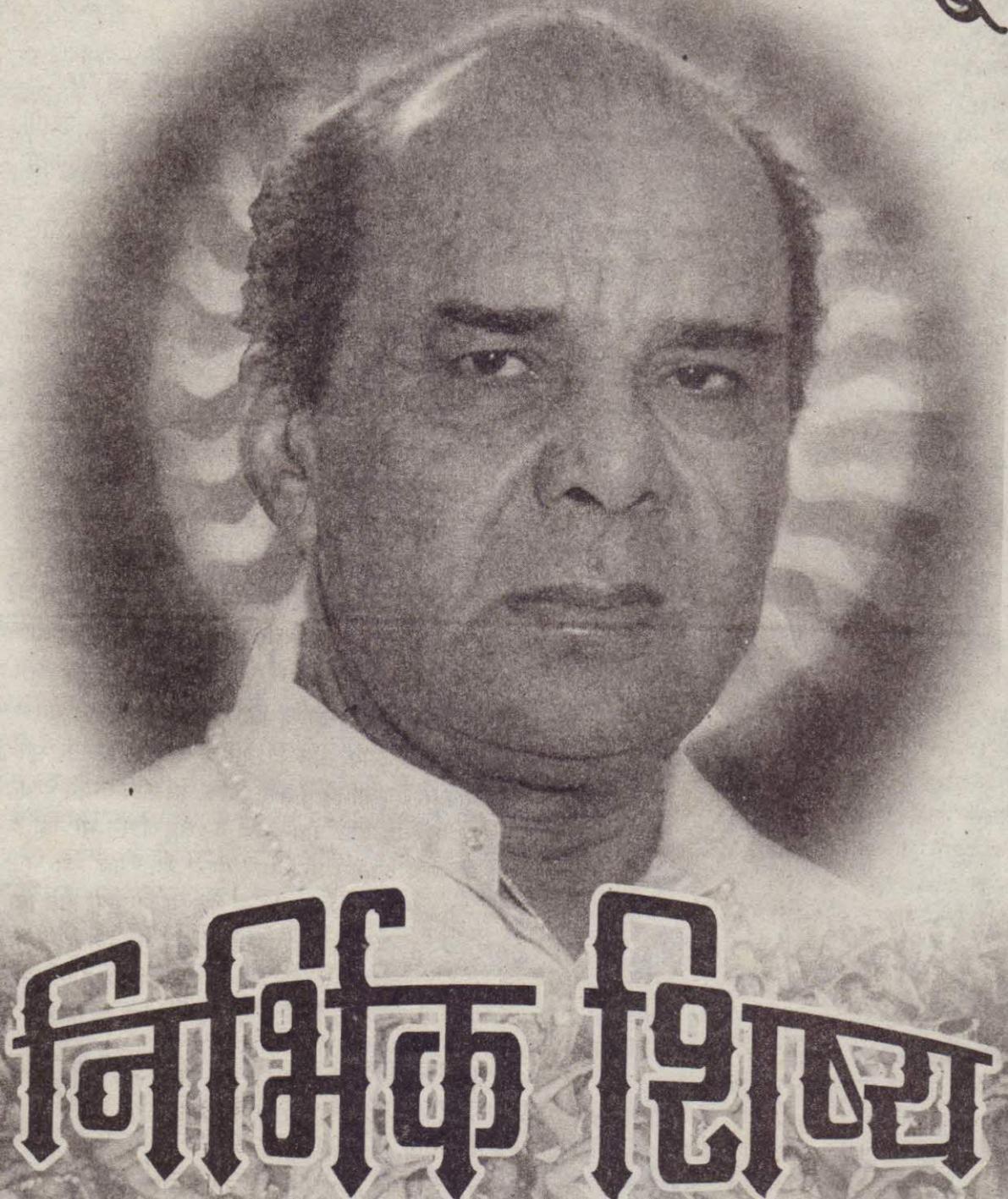
## ☆ सत्संग से मिटते हैं मन के विकार ☆

मगध के राजा चित्रांगद अपनी प्रजा का बहुत ध्यान रखते थे। उन्होंने अपने राज्य में अनेक विद्यालय, चिकित्सालय और अनाथालयों का निर्माण करवाया ताकि कोई भी व्यक्ति शिक्षा, चिकित्सा और आश्रय से वंचित न रहे। एक दिन अपनी प्रजा के सुख-दुःख का पता लगाने के लिए वे अपने मंत्री के साथ दौरे पर निकले। उन्होंने गांव, कस्बों व खेड़ों की यात्रा कर विभिन्न समस्याओं को जाना। राजा ने चिंतित लोगों को उनकी समस्याओं के शीघ्र निदान का आश्वासन दिया।

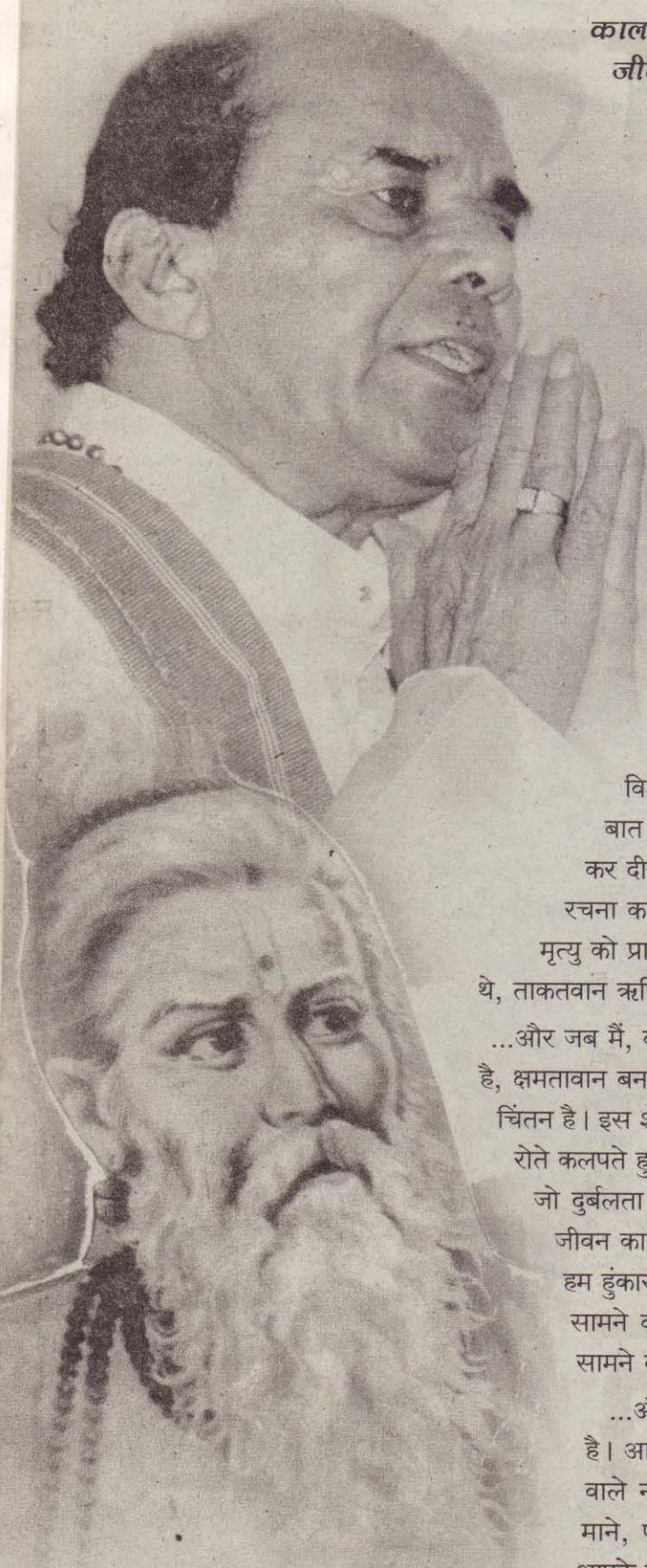
एक दिन जंगल से गुजरते हुए राजा को एक तेजस्वी संत से मिलने का मौका मिला। संत एक छोटी-सी कुटिया में रहकर छात्रों को पढ़ाते और सादगी पूर्ण जीवन व्यतीत करते थे। राजा ने संत को सोने की मोहरे भेट करनी चाही। संत ने कहा - राजन, इनका हम क्या करेंगे? इन्हें आप गरीबों में बांट दें। राजा ने जानना चाहा कि आश्रम में धनापूर्ति कैसे होती है तो संत बोले - हम स्वर्ण रसायन से तांबे को सोना बना देते हैं। राजा ने चकित होकर कहा - अगर आप वह दिव्य रसायन मुझे उपलब्ध करा दें तो मैं राज्य को वैभवशाली बना सकता हूँ। संत ने कहा - इसके लिए आपको एक माह तक हमारे साथ सत्संग करना होगा तभी स्वर्ण रसायन बनाने का तरीका आपको बताया जाएगा।

राजा एक माह तक सत्संग में आए। एक दिन संत ने कहा - राजन, अब आप स्वर्ण रसायन का तरीका जान लीजिए। इस पर राजा बोले - गुरुवर, अब मुझे स्वर्ण रसायन की जरूरत नहीं है। आपने मेरे हृदय को ही अमृत रसायन बना डाला है। यह कथा सत्संग की महिमा को इंगित करती है। सत्संग से व्यक्ति लोभ, मोह, वासना आदि विकारों से सहज ही मुक्त हो जाता है और उसकी आत्मा प्रकाश से आलोकित हो जाती है।

मैं हुचता हूँ



बिल्डिंग फोर्म्स



कालजयी व्यक्तित्व उसे कहते हैं जो काल को जीतकर भविष्य के महान सत्य को उजागर कर देते हैं। सदगुरुदेव का यह ओजस्वी प्रवचन जो कालखण्ड के एक-एक बिन्दु को स्पर्श करता है -

कालं यमोद्यं यमदेव रूपं,  
नरत्वं श्रेयं भवतां वदेव।  
इच्छोनवतां पूर्णं मदेव तुभ्यं,  
जीवनं जदो सदवदां भवतेकं रूपं॥

उपनिषदों में एक यमोपनिषद है, उसमें नचिकेता और यम के संवाद हैं। नचिकेता एक ऋषि पुत्र है और यम मृत्यु का देव है।

मृत्यु जीवन में आवश्यक भी है, और मृत्यु न हो तो संसार में खड़े होने की जगह ही नहीं मिलेगी। मगर कुछ श्रेष्ठ व्यक्तित्व ऐसे होते हैं जो मरते नहीं हैं। मर नहीं सकते, संभव ही नहीं है। नचिकेता भी उन्हीं में से एक था।

विश्वामित्र का जब इन्द्र से युद्ध हुआ, लड़ाई हुई तो विश्वामित्र ने कहा मैं नई सृष्टि रच दूगा मगर मैं तुम्हारी बात नहीं मानूँगा और उन्होंने एक नवीन पृथ्वी की रचना कर दी, नवीन पक्षियों की रचना कर दी, नवीन व्यक्तियों की रचना कर दी और उनको एक स्थिति ऐसी प्राप्त हो गई कि वे मृत्यु को प्राप्त कर ही नहीं सके। क्योंकि वे एक संकल्पवान ऋषि थे, ताकतवान ऋषि थे, क्षमतावान ऋषि थे।

...और जब मैं, बार बार यह दोहराता हूं कि आपको ताकतवान बनना है, क्षमतावान बनना है, तो उसके पीछे विश्वामित्र का एक श्लोक, एक चिंतन है। इस श्लोक में विश्वामित्र ने कहा है कि वह जीवन नहीं है जो रोते कलपते हुए बीते, वह कोई जीवन नहीं है। वह जीवन भी नहीं है जो दुर्बलता के साथ व्यतीत हो। चाहे पुरुष हो, चाहे स्त्री हो। जीवन का एक एक क्षण जिंदा और सजीव बीते। ऐसा बीते कि हम हुंकार भरें तो दूसरे को एहसास हो सके। जब हम बोलें तो सामने वाला हतप्रभ हो सके। जब हम अपनी बात कहें तो सामने वाला बाध्य हो सके उस बात को मानने के लिए।

...और यह जीवन में सफलता के लिए अत्यंत आवश्यक है। आप कोई बात कहें और सामने वाला माने ही नहीं, घर वाले नहीं मानें, बेटे नहीं मानें, पत्नी नहीं मानें, पति नहीं मानें, पड़ोसी नहीं मानें, आपका ऑफिसर नहीं मानें, तो आपके जो बोल ब्रह्म के समान हैं वे बोल व्यर्थ गए और आप

मन में हताशा, निराशा, कुंठा, चिंता, तनाव लिए जीते रहते हैं और वे आपको मृत्यु देते हैं।

मृत्यु आपको तनाव देती है, जो आप चाहते हैं वह हो नहीं पाता, इसलिए आप मृत्यु का वरण करने के लिए बाध्य हो जाते हैं। बाकी हमारे ऋषियों को तनाव था ही नहीं, हमें भी कोई तनाव है नहीं। मगर हम तनाव से मुक्त होने की क्रिया नहीं सीखे, विश्वामित्र ने सीखी।

इस श्लोक में वही बात कही गई है कि वैसा जीवन नहीं होना चाहिए जो एकदम रोता, कलपता बीते।

मैं घर पर बैठा था तो पंचांग देख रहा था। मेरा समय या तो शिष्यों के साथ व्यतीत होता है या शास्त्रों के साथ व्यतीत होता है।

काव्य शास्त्र विनोदेन,  
कालो गच्छति धीमतां।

मूर्खों का समय आलोचना करने में या एक दूसरे की निंदा करने में व्यतीत होता है, और बुद्धिमानों का समय - काव्य, शास्त्र, विनोद - हंसी मजाक में, शास्त्र पढ़ने पढ़ाने में और कविता गुनगुनाने और कविता लिखने में व्यतीत होता है।

समय तो बीतता ही है।

दोनों अपने अपने ढंग से व्यतीत करते हैं। मैं पंचांग में देख रहा था कि यह जो पिछला कुछ ऐसा समय व्यतीत हुआ ऐसा क्यों हुआ और आगे क्या है?

और आने वाला समय ऐसा है जो महाभारत युद्ध के बाद का वापस समय आ रहा है और मैं कह रहा हूं वह बात प्रवचन में खुले मैं कह रहा हूं। ऐसी बेसलेस बात नहीं है, आधारहीन बात नहीं है। इसलिए पिछले दस हजार वर्षों में वह समय आ रहा है जो कि अष्टग्रही योग है। आठों ग्रह मिलकर एक स्थान पर खड़े होंगे। आठों ग्रह जब एक साथ मिले हैं ..... नौ ग्रह तो मिल ही नहीं सकते। राहु केतु तो एक बिल्कुल विपरीत ध्रुव पर होते हैं। एक ही व्यक्ति के दो हिस्से हैं एक धड़ है, एक सिर है। एक को राहु कहा भया है, एक को केतु कहा गया है और जब महाभारत काल में अष्टग्रही योग हुआ तो आधे से ज्यादा भारतवर्ष समाप्त हो गया। ठीक वैसा ही योग पंचांग में आगे आ रहा है और मैं सन्न सा रह गया उस पंचांग पर नजर पड़ने पर।

मैंने सोचा क्या स्थिति बनेगी फिर, अगर प्रलय की स्थिति बनती ही है तो शास्त्रों ने कहा है कि अगर हम मरे तो प्रलय है ही फिर। हम समाप्त हो गए तो भले ही पीछे कुछ भी रहा हो,

श्री  
गणेशाय  
नमः

श्री विद्युत्य  
स्वस्पम्

श्री भीम

श्रुक

प्रभम्

प्रम्

श्री केतोः

इति श्री नवग्रह स्वस्पम्

वह बेकार है फिर, ...और आप मेरी बात जान लें कि अगर महाभारत युद्ध की तरह विश्व युद्ध हुआ और अगले कुछ साल में ऐसा हो सकता है तो वह हमारे लिए, पृथ्वी के लिए बहुत विनाशकारी होगा। किसी की भी बुद्धि थोड़ी खराब होने की जरूरत है और परमाणु बम के माध्यम से पूरी पृथ्वी को मटिया मेट किया जा सकता है और मैं आज अगर इस तनाव में हूं तो इस तनाव में आप भी हैं।

मैं इसीलिए आपको कह रहा हूं, आप ताकतवान बनें, आप शेर की तरह बनें, पौरुषवान बनें। मैं कह रहा हूं, मगर केवल सुनना और जीवन में उतार देना अलग अलग क्रिया है। कहने से आप ताकतवान, साहसवान नहीं बन सकेंगे, कहने से तनाव मुक्त नहीं बन सकेंगे, समझाने से कुछ नहीं हो पाएगा। मैं अपने आप को कितना ही समझाऊं उससे तनाव मुक्त नहीं हो सकता। उसको फेस करके, उसका सामना करके, उस पर हावी होऊंगा तब मैं तनाव से मुक्त हो पाऊंगा, तब मैं एकदम काल बन पाऊंगा, तब मैं पौरुषवान और क्षमतावान बन पाऊंगा।

कृष्ण, महाभारत में हुंकार करते हुए कहते हैं - दुर्योधन! मैं तुम्हें ललकार रहा हूं, ताकत है तो मेरे सामने आ, छिप कर मत खड़ा हो, मैं अकेला ही बहुत हूं तुम्हारे लिए, तुम्हारे पूरे कैरियों के लिए मैं बहुत हूं। जब वे हुंकार भरते हैं तो कौरव हतप्रभ हो जाते हैं, तीर धनुष सब छूट जाते हैं उनके हाथों से।

क्या है वह? वह हुंकार कहां से आई उनमें?

वह आ पाई, क्योंकि वे पूर्ण यम पर अपने आप में हावी थे। मैं कृष्ण का उदाहरण बार-बार इस लिए देता हूं कि कृष्ण पूर्ण पौरुषवान थे, क्षमतावान थे, पूर्ण थे। और कृष्ण ही नहीं सैकड़ों ऐसे यौद्धा हुए हैं। कृष्ण इतना क्षमतावान, इतना ताकतवान था, वह पूरी कौरव सेना को ललकारे, वह छोटी सी बात नहीं हो सकती। एक आदमी खड़ा होकर हजार विद्वानों को ललकारे वह छोटी सी बात नहीं हो सकती। एक आदमी पूरे समाज को ललकार कर खड़ा हो जाए यह छोटी सी बात नहीं हो सकती। और यदि आप ऐसे नहीं बन सकेंगे तो आप पर तनाव हावी हो जाएगा। या तो आप तनाव पर हावी होंगे, दुखों पर हावी होंगे या दुःख आप पर हावी हो जाएंगे। चाहे मैं कितना भी समझा लूं, फिर उससे कुछ नहीं हो सकता।

और हमारे सारे देवता अपने आप में शस्त्रवान हैं। भगवान शिव के पास त्रिशूल है। विष्णु के पास सुदर्शन चक्र है। दुर्गा के पास खड़ग है, काली के पास अपने आपमें तलवार है। इंद्र के पास गदा है। शस्त्र विहीन कोई व्यक्तित्व है ही नहीं और देवताओं को शस्त्र की आवश्यकता क्या है?



वह एक प्रतीक है कि व्यक्ति जब तक ताकतवान नहीं बनता, तब तक उच्च व्यक्तित्व नहीं बन सकता। व्यक्तित्व का निर्माण हो ही नहीं सकता, चाहे वह पुरुष है चाहे वह स्त्री है। अगर स्त्री है और उसमें क्षमता नहीं है तो परिवार का पालन नहीं कर पाएगी, बेटों पर नियंत्रण नहीं कर पाएगी, गलत रास्ते पर जाते हुए पति पर नियंत्रण नहीं कर पाएगी।

यदि आपमें ताकत नहीं है तो समाज में आप नगण्य से बन जाएंगे। तब उस समय आपको कुछ दिखाई नहीं देगा, आप सिर पकड़ कर बैठ जाएंगे जैसे सैकड़ों, लाखों लोग बैठते हैं। फिर आप शेर नहीं बन पाएंगे फिर आप शिष्य भी नहीं बन पाएंगे। विश्वामित्र यही बात कह रहे हैं, यही महाभारत कह रहा है, यही रामायण कह रहा है। जब राम धनुष को उठा रहे हैं और परशुराम आ रहे हैं तो लक्ष्मण कहते हैं राम! आप सुकिए। मैं परशुराम को बताता हूं कि मैं क्या हूं। मैं रघुवंशी हूं और ऐसे धनुष के हजार टुकड़े कर सकता हूं। इतनी ताकत है मुझमें।

वह क्या बोल रहा था? वह कर रहा था हुंकार एक। उसका पौरुष बोल रहा था और सारी सभा सन्न थी, स्तब्ध थी। हिम्मत नहीं पड़ रही थी। उस समय रावण भी वहां था, उस धनुष को उठाने के लिए जनक के दरबार में मगर लक्ष्मण की हुंकार ने सारे राजाओं को निस्तेज कर दिया, एक व्यक्ति ने।

एक व्यक्ति ने, परशुराम जैसे व्यक्ति ने, अपने फरसे से सारे शत्रुओं को समाप्त कर दिया। जब तक व्यक्ति में ताकत नहीं आएगी, जब तक व्यक्ति में क्षमता नहीं आएगी, तब तक व्यक्तित्व बन ही नहीं सकता। व्यक्तित्व तो बनेगा शत्रुओं पर हावी लोने से।

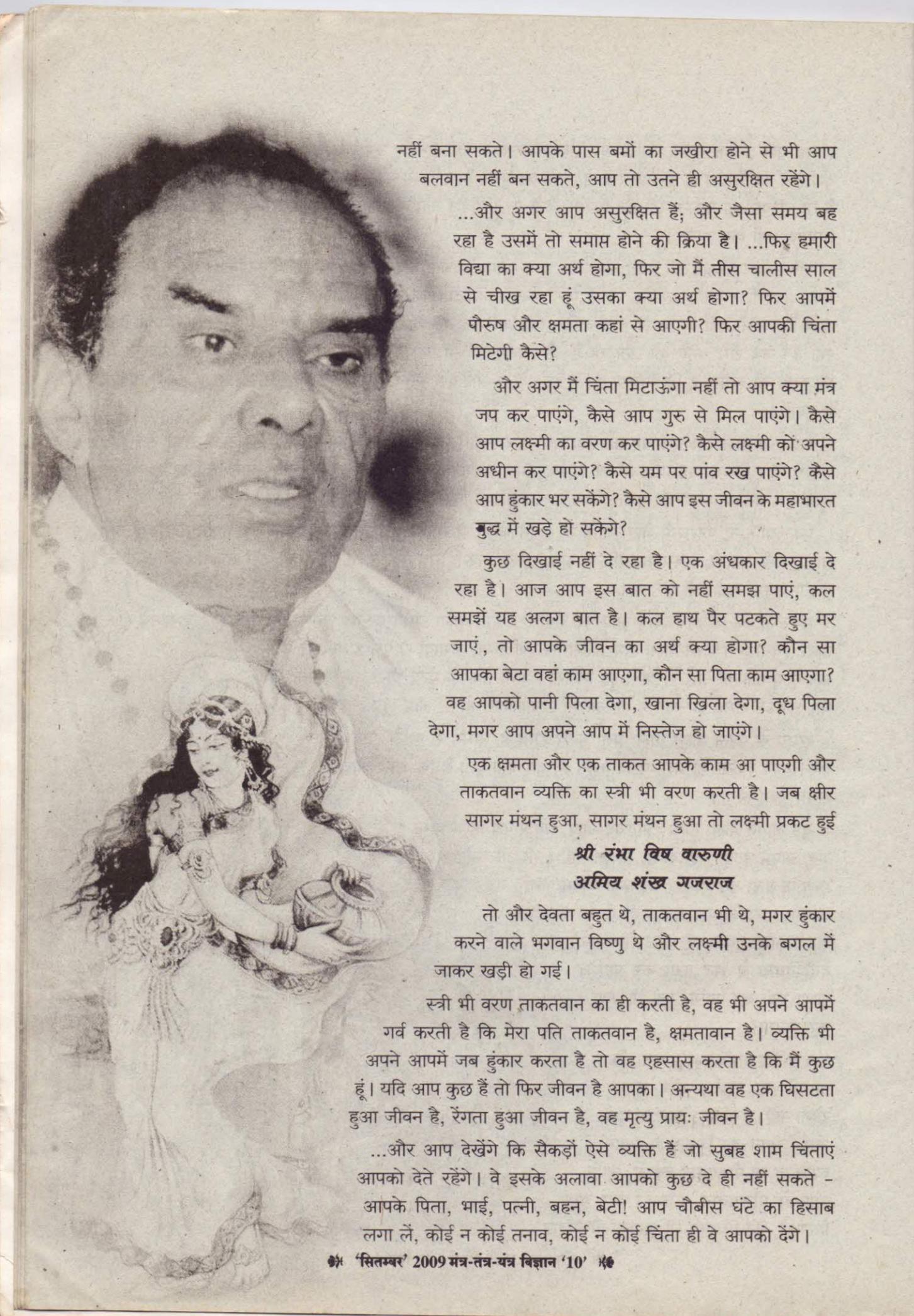
मगर आपके जीवन में शत्रु आप पर हावी हैं। आने वाला समय हर दम तनावग्रस्त ही होगा, दुःखमय ही होगा, चिंताग्रस्त करने वाला होगा, हिंसा से पूर्ण होगा, अभावों से पूर्ण होगा और पल-पल मृत्यु आपकी ओर सरकती हुई मिलेगी। अभी तक तो मृत्यु धीरे-धीरे चलती थी, अब जो समय आ रहा है, वह अत्यंत विनाशकारी होगा, आप खुद देख लें।

समय से पहले कहने वाला प्रज्ञा पुरुष होता है, समय से पहले सावधान करने वाले व्यक्ति को प्रज्ञा पुरुष कहते हैं, वह बता देता है कि आने वाला समय ऐसा होगा।

वह जीवन कैसा होगा? सोचिए आप, वह समय कैसा होगा  
जब आपमें हुंकार नहीं होगी, ताकत नहीं होगी और आप  
मृत्यु के ग्रास बन जाएंगे? वह क्या जीवन होगा? जब  
आपके पास आयुध बल नहीं होगा तब फिर  
काली और भुवनेश्वरी और छिन्नमस्ता ये  
देवी देवता ये सब क्या कर पाएंगे?  
कृष्ण क्या कर पाएंगे, गुरु भी क्या  
कर पाएगा?

इसलिए नहीं कर पाएगा कि  
आपमें वह ताकत और क्षमता  
रहेगी नहीं। इसलिए जीवन का मूल  
अर्थ, जीवन का चिंतन है, अपने  
व्यक्तित्व को पौरुषवान बनाना, अपने  
आपको पौरुषवान बनाना। दस भाई  
मिलकर, बेटे मिलकर भी आपको पौरुषवान





नहीं बना सकते। आपके पास बमों का जखीरा होने से भी आप बलवान नहीं बन सकते, आप तो उतने ही असुरक्षित रहेंगे।

...और अगर आप असुरक्षित हैं; और जैसा समय बह रहा है उसमें तो समाप्त होने की क्रिया है। ...फिर हमारी विद्या का क्या अर्थ होगा, फिर जो मैं तीस चालीस साल से चीख रहा हूं उसका क्या अर्थ होगा? फिर आपमें पौरुष और क्षमता कहां से आएगी? फिर आपकी चिंता मिटेगी कैसे?

और अगर मैं चिंता मिटाऊंगा नहीं तो आप क्या मंत्र जप कर पाएंगे, कैसे आप गुरु से मिल पाएंगे। कैसे आप लक्ष्मी का वरण कर पाएंगे? कैसे लक्ष्मी को अपने अधीन कर पाएंगे? कैसे यम पर पांव रख पाएंगे? कैसे आप हुंकार भर सकेंगे? कैसे आप इस जीवन के महाभारत बुद्ध में खड़े हो सकेंगे?

कुछ दिखाई नहीं दे रहा है। एक अंधकार दिखाई दे रहा है। आज आप इस बात को नहीं समझ पाएं, कल समझें यह अलग बात है। कल हाथ पैर पटकते हुए मर जाएं, तो आपके जीवन का अर्थ क्या होगा? कौन सा आपका बेटा वहां काम आएगा, कौन सा पिता काम आएगा? वह आपको पानी पिला देगा, खाना खिला देगा, दूध पिला देगा, मगर आप अपने आप में निस्तेज हो जाएंगे।

एक क्षमता और एक ताकत आपके काम आ पाएगी और ताकतवान व्यक्ति का स्त्री भी वरण करती है। जब क्षीर सागर मंथन हुआ, सागर मंथन हुआ तो लक्ष्मी प्रकट हुई

**श्री रंभा विष्व वारुणी  
अमित शंख गजराज**

तो और देवता बहुत थे, ताकतवान भी थे, मगर हुंकार करने वाले भगवान विष्णु थे और लक्ष्मी उनके बगल में जाकर खड़ी हो गई।

स्त्री भी वरण ताकतवान का ही करती है, वह भी अपने आपमें गर्व करती है कि मेरा पति ताकतवान है, क्षमतावान है। व्यक्ति भी अपने आपमें जब हुंकार करता है तो वह एहसास करता है कि मैं कुछ हूं। यदि आप कुछ हैं तो फिर जीवन है आपका। अन्यथा वह एक विसटता हुआ जीवन है, रेंगता हुआ जीवन है, वह मृत्यु प्रायः जीवन है।

...और आप देखेंगे कि सैकड़ों ऐसे व्यक्ति हैं जो सुबह शाम चिंताएं आपको देते रहेंगे। वे इसके अलावा आपको कुछ दे ही नहीं सकते - आपके पिता, भाई, पत्नी, बहन, बेटी! आप चौबीस घंटे का हिसाब लगा लें, कोई न कोई तनाव, कोई न कोई चिंता ही वे आपको देंगे।

...और उन को काटने की आपमें क्षमता है ही नहीं, न रोगों को काटने की क्षमता है, न शत्रुओं पर हावी होने की क्षमता है, क्योंकि आपके पास शस्त्र है ही नहीं। मृत्यु पर विजय प्राप्त करने की क्रिया आपके पास नहीं है। मृत्यु क्या चीज है जो आपके पास आ सके? ऐसा कैसे हो सकता है?

संभव नहीं हो सकता। आपमें दुर्बलता आए ही नहीं। इच्छा मृत्यु बने और हम मृत्यु को प्राप्त करना चाहते ही नहीं। इच्छा मृत्यु का तो मतलब है कि हम मरेंगे ही, भीष्म कह रहे हैं - मैं जब चाहूँ तब मरूँ। और मैं कह रहा हूँ कि भीष्म यहां कायर था कि उसने कहा इच्छा मृत्यु।

मृत्यु हमारे पास आने की हिम्मत कर सके वह संभव नहीं हो। विश्वामित्र ने कहा - ब्रह्मा! मैं तुम्हारी चिंता नहीं करता हूँ। एक नवीन ब्रह्माण्ड रच कर दिखा दूँगा। मैं हूँ, मैं गुरु हूँ और मैं समझता हूँ, वह विश्वामित्र था। इसलिए उसका व्यक्तित्व मुझे शोभनीय लगता है कि एक हुंकार भरता है वह और लक्ष्मी को भी अपने आंगन में खड़ा कर देता है, सरे आम मेनका से शादी करके पुत्री पैदा कर देता है। वह घबराता नहीं है क्योंकि उसके अंदर एक आग, एक ज्वाला है, एक मंत्र बल है, एक ताकत और साहस है। यम को पैरों के तले रोंदने की क्रिया है। जीवन में एक उच्चकोटि ब्रह्मत्व प्राप्त वशिष्ठ के सामने तन कर खड़ा हो गया। उसने कहा - तुम्हें ब्रह्मत्व प्राप्त है, पर मेरे पास जो साहस, ताकत, क्षमता है वह तुम्हारे पास नहीं है। तुम एक दिन मर सकोगे, मैं नहीं मर सकता, संभव ही नहीं है।

इसलिए भीष्म से भी ताकतवान विश्वामित्र है जो कहता है मृत्यु जैसी चीज है ही नहीं संसार में। क्योंकि उनके गुरु ने समझाया था - मृत्यु चीज क्या है, कहां से आई। मृत्यु दरवाजे पर ठक-ठक करती, एक सौ आठ बार आती है, कभी आपके सिर के बाल सफेद करते हुए आती है, कभी आपकी आंखें निस्तेज करते हुए आती है, तीसरी बार आती है तो खून की कमी करते हुए आती है, फिर बीमारी बनते हुए आती है। एक सौ आठ बार दरवाजा खटखटाकर मृत्यु आपके पास आती है और उसमें से पचास बार खटखटा चुकी है। केवल लकड़ियों की चिता पर जाकर सो जाने को मृत्यु नहीं कहते।

ऐसा गुरु भी क्या काम का, जो कहे -  
राम-राम करो, भगवान जो करेगा अच्छा  
ही करेगा। भगवान जो करेगा तो करेगा  
पर हम क्या करेंगे, यह समझना है।  
भगवान को भी समझा देंगे कि कैसे  
किया जाता है। हममें वह ताकत है,  
वह क्षमता है। भगवान तो अच्छा कर  
ही रहे हैं। बम फट रहे हैं, भगवान  
अच्छा कर रहे हैं! हम क्या कर रहे हैं?  
हम कैसे पौरुषवान बन सकते हैं,  
कैसे ताकतवान बन सकते हैं,  
कैसे इंद्र बन सकते हैं, कैसे पूर्ण  
अग्निमय बन सकते हैं, कैसे  
देवतामय बन सकते हैं - यह  
आवश्यक है।





आपमें क्षमता कहां से आएगी - हाथ जोड़ने से, गिड़गिड़ाने से,  
पांव में पड़ने से? उन अफसरों के तलवे चाटने से? औरत के  
सामने बिल्कुल निस्तेज भीगी बिल्ली बनकर आप  
पौरुषवान बन जाएंगे?

ऐसा जीवन क्या हो पाएगा? ऐसा  
जीवन मैं आपको दूंगा भी तो क्या फायदा  
होगा? ऐसे जीवन में तो आप घुट-घुट कर  
बीस साल में मरेंगे ही मरेंगे, रोते-रोते मरेंगे,  
घुट-घुट कर मरेंगे।

मृत्यु जैसी चीज आपके साथ जुड़े नहीं, जीवन  
जुड़े, हंसी जुड़े, मस्ती जुड़े, साहस जुड़े। मैं कह  
रहा हूं आपके चेहरे पर मुस्कुराहट होनी चाहिए।  
खिलखिलाहट होनी चाहिए, हंसी होनी चाहिए।  
मगर आपको बराबर वेदना, चिंता, समस्याएं बाधाएं,  
कठिनाइयां, पग-पग पर मिल रही हैं। आप अपना  
पिछले दस दिन का ही इतिहास देख लें। कितने  
तनाव आपको मिले, आप खुद हिसाब लगा लें। सङ्क  
पर निकलते हैं तो आप भयभीत रहते हैं। लड़का एक  
घंटा लेट आता है तो कांप जाते हैं। पति ऑफिस से  
आने में लेट हो जाता है तो आंखों से आंसू निकल आते  
हैं।

यह सब क्या है? इतना तनाव, इतना जहर फैल गया है,  
देश में, संसार में, कि आदमी हर पल सशंकित हो गया है, दुःखी हो  
गया है, चिंतातुर हो गया है, हर पल ऐसा सोचता है, कि न जाने कब मृत्यु  
हावी हो जाएगी। जाते हैं सङ्क पर परंतु लौटेंगे, कोई भरोसा नहीं है।

पिक्चर देखने गए हॉल में, बम फट गया और ढाई सौ लोग मर गए, उनका कसूर क्या था? उनको क्या पता  
था हम मरेंगे वहां जाकर के?

मृत्यु तो प्रत्येक पल दरवाजा खटखटा ही रही है और मैं आपको कह रहा हूं आपको मुस्कुराना चाहिए। मैं  
कह रहा हूं आप में छलछलाहट होनी चाहिए। वह तब आएगी जब आप निश्चिंत हो जाएंगे कि मृत्यु मेरा वरण

करे यह संभव नहीं है, ऐसा होना चाहिए जीवन। तब मैं समझूँगा कि शिष्यों को मैं कुछ दे पाया।

यदि आपको किसी ने मुस्कुराहट भी दी हो, तो मुस्कुराहट के नीचे दबी हुई सिस्कारियां भी दी होंगी। उस मुस्कुराहट के नीचे दबा हुआ रुदन भी होगा, आंखों में आंसू भी होंगे। ऊपर से नकली मुस्कुराहट होगी, वह जीवन नहीं है।

जीवन हुकारमय है, ताकतवान है, क्षमतावान है, जोश है, वह जवानी का एक दर्प है, वह व्यक्ति में होना चाहिए, चाहे आप मेरे शिष्य हैं या नहीं हैं, आप ऐसा जीवन प्राप्त करें या नहीं करें परन्तु यह मेरा, गुरु का धर्म है कि मैं आपको बताऊं कि जीवन क्या है!

जब मैंने पहली बार दीक्षा ली तो उन गुरु ने कहा - मैं बाद में तुम्हें दीक्षा दूंगा, पहले यह दीक्षा देना चाहता हूं कि तुम अपने आपमें पौरुषवान बनो, झुकोगे नहीं कहीं पर। मृत्यु तुम्हारा वरण नहीं कर सके। मृत्यु तुम्हारे सामने खड़ी हो सकती है, स्पर्श नहीं कर सकती और पग-पग पर खड़ी हो।

जब मैं सिद्धाश्रम गया तो सबसे पहले उन्होंने मुझे यही दीक्षा दी कि मृत्यु तुम्हारे सामने नहीं फटक सकती है, चाहे आग लगे, चाहे बम फटे। उस जीवन में, जहां तुम्हें भेज रहा हूं वहां पग-पग पर केवल युद्ध है, लड़ाई है, चाकू है, छुरे हैं, बम हैं, पिस्टौल है, तलवार हैं, इसके अलावा कुछ है ही नहीं, चाहे आप फिल्म देख लें, चाहे टी.वी देख लें, चाहे सड़क देख लें, चाहे घर देख लें। हर जगह आप सशंकित और तनाव युक्त हैं ...फिर जीवन क्या काम का?

न मालूम कब यम आकर समाप्त कर दे, मृत्यु पकड़ ले और हमारी सारी इच्छाएं? जो भी मैंने आपको सिखाया वह क्या काम आया आपके? मेरा कहना बेकार, आपका सुनना बेकार।

मैं कहां बता पाऊंगा कि ये मेरे शिष्य हैं जो ताकतवान हैं और यदि मैं आपको क्षमता नहीं दे पाऊंगा तो कौन दे पाएगा? अगर मैं खुद अपना कर्तव्य पूरा नहीं कर पाऊंगा तो अपनी ही आंखों से गिर जाऊंगा कि मैंने दिया ही क्या आपको। मैंने कह दिया हंसिए आप, और एक नकली मुस्कुराहट आ गई आपके चेहरे पर। मैं समझता हूं कि इसके नीचे कितनी वेदना, कितनी आग और कितना मृत्यु भय है। उस मृत्यु भय से परे हटना जीवन का सौंदर्य है। जब आप निश्चिंत हो पाएंगे तब आपमें हिलोर उठ पाएगी।

पांडव निश्चिंत थे, अर्जुन निश्चिंत था कि कृष्ण मेरे पीछे खड़े हैं। कृष्ण अपने आपमें निश्चिंत थे कि मेरे पीछे मेरे गुरु सांदीपन खड़े हैं जिन्होंने मुझे मृत्युंजयी दीक्षा दी है। मृत्युंजयी दीक्षा का अर्थ है मृत्यु पर विजय प्राप्त करने की क्रिया - मृत्यु का मतलब वेदना।

आपके कंधे पर आपके बेटे की अर्थी चली जाए इससे ज्यादा दुःखमय चीज हो ही नहीं सकती। पत्नी के सामने पति की मृत्यु हो जाए इससे ज्यादा वेदना क्या हो सकती है? आप रात तड़पते हुए बिताएं और नींद नहीं आए इससे ज्यादा दुःख क्या हो सकता है? आपकी आंखों की ज्योति कमजोर हो जाए आप सिसकते रहें, अस्पताल में पढ़े रहें, वह आपका जीवन क्या हो सकता है?

क्या वह जीवन है?

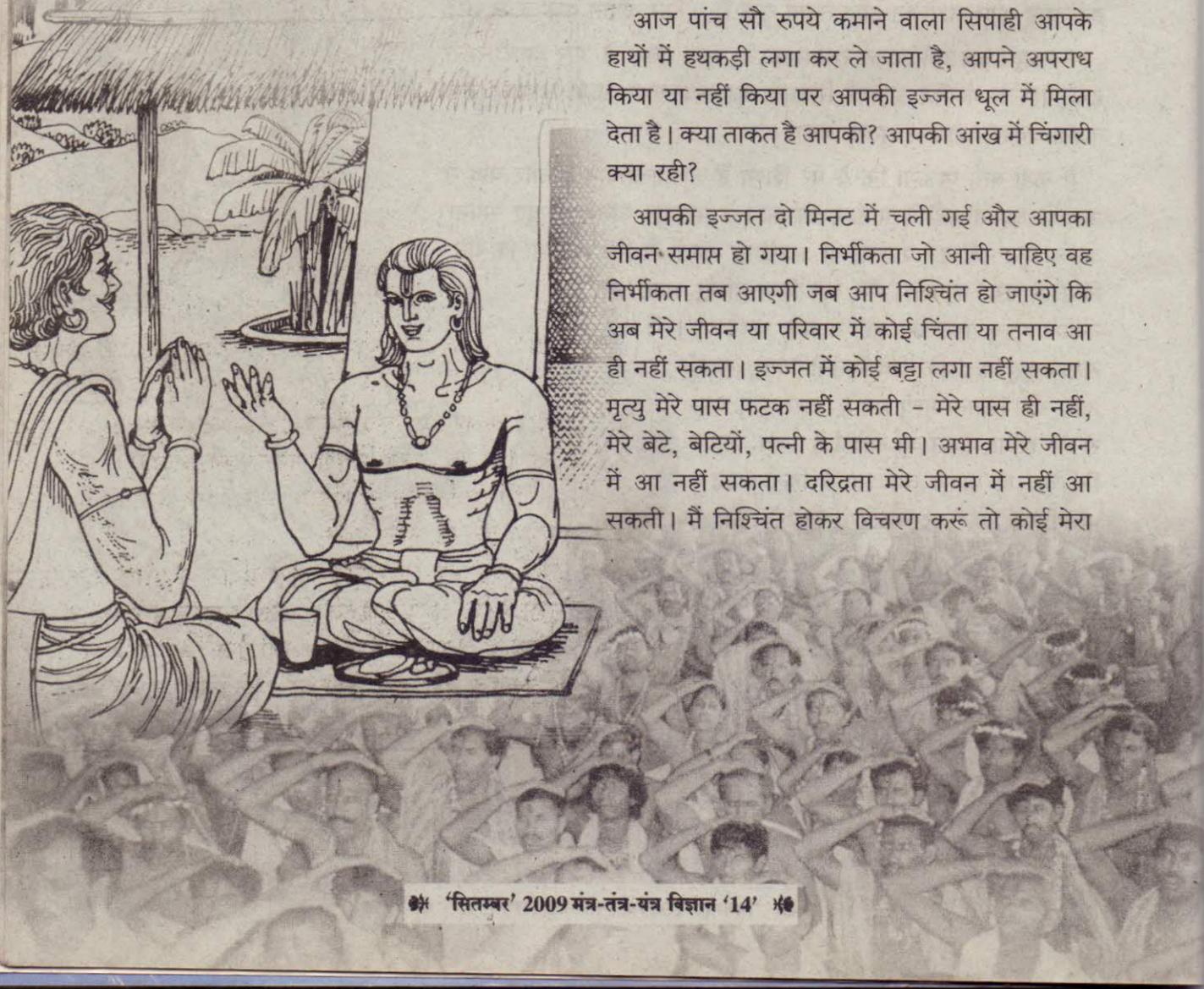
और अगर वह जीवन है तो फिर आनंद क्या है?

इसलिए जीवन की मुस्कुराहट एक अलग चीज है, एक नकली मुस्कुराहट एक अलग चीज है। जो आप मुस्कुरा रहे हैं वह सौ प्रतिशत नकली मुस्कुराहट है और आने वाला समय इतना भीषण है, जिसका हम आज से ही अनुभव कर रहे हैं और वे ग्रह अपने आप में बोल रहे हैं।

आप में से प्रत्येक व्यक्ति चिंताओं से ग्रस्त होगा, ऐसा समय आ रहा है। कौन संभालेगा, कौन समझाएगा आपको। कोई न कोई समस्या ऐसी आएगी, कि आप बिल्कुल मृत्यु के पास खड़े होंगे। आप का मतलब है आप आपकी पत्नी, बेटे, बेटियां, आपका परिवार, आपका धन, आपका यश और आपका सम्मान।

आज पांच सौ रुपये कमाने वाला सिपाही आपके हाथों में हथकड़ी लगा कर ले जाता है, आपने अपराध किया या नहीं किया पर आपकी इज्जत धूल में मिला देता है। क्या ताकत है आपकी? आपकी आंख में चिंगारी क्या रही?

आपकी इज्जत दो मिनट में चली गई और आपका जीवन समाप्त हो गया। निर्भीकता जो आनी चाहिए वह निर्भीकता तब आएगी जब आप निश्चिंत हो जाएंगे कि अब मेरे जीवन या परिवार में कोई चिंता या तनाव आ ही नहीं सकता। इज्जत में कोई बढ़ा लगा नहीं सकता। मृत्यु मेरे पास फटक नहीं सकती - मेरे पास ही नहीं, मेरे बेटे, बेटियों, पत्नी के पास भी। अभाव मेरे जीवन में आ नहीं सकता। दरिद्रता मेरे जीवन में नहीं आ सकती। मैं निश्चिंत होकर विचरण करूं तो कोई मेरा



कुछ बिगाड़ नहीं सकता। मेरी दुर्घटना हो नहीं सकती और जो विद्या गुरु दे रहे हैं उसे पूर्णता तक पहुंचा सकूंगा क्योंकि मैं निश्चिंत हूं, निर्भीक हूं, मेरे पीछे गुरु हैं जिन्होंने मुझे इस योग्य बनाया है।

ये क्रियाएं हम भूल गए हैं। आज से पचास वर्ष पहले तक जब गुरु दीक्षा देते थे तो पहले उसे निर्भीक बनाने की क्रिया देते थे। मृत्यु को परे हटाने की क्रिया देते थे फिर उसको शिष्य बनाते थे। अब हम सीधा शिष्य बना देते हैं। मैं अपनी खुद की आलोचना कर रहा हूं।

मगर जो आप धीरे धीरे सिसक रहे हैं उन आंसुओं को कौन देख पाएगा, उस वेदना को कैसे समझेंगे, कैसे दूर करेंगे। दूर तब कर सकेंगे जब आप निर्भीक हो पाएंगे। इसलिए हमारे शास्त्रों में प्रत्येक देवता को एक आयुध दिया, शस्त्र दिया, उनके शरीर में ताकत दी, क्रषियों को एक क्षमता दी पौरुष दिया, वे रिसियाते हुए, गिड़गिड़ते हुए नहीं जिए। इसलिए दस महाविद्याओं की रचना की कि उस मंत्र बल के माध्यम से निर्भीक बन सकें। मंत्र का अर्थ है, मैं बोलूं, आप पर प्रभाव हो।

एक बंदूक की गोली दस फीट की दूरी से छोड़ और आप समाप्त हो जाएं वह मृत्यु है, आप घर में अभाव ग्रस्त हैं वह मृत्यु है, आप को कुछ हो जाए तो जीवन का क्या अर्थ रह जाएगा, जो विद्या मैं दे रहा हूं उसका क्या अर्थ रह जाएगा?

इसलिए गुरु पहले दीक्षा देते ही नहीं थे। पहले पूर्णता के साथ मृत्यु को परे हटाने की क्रिया करते थे। मेरे साथ मेरे गुरु ने वह क्रिया की, मेरे साथ और शिष्य थे उनके साथ की। मगर अब वैसे शिष्य रहे नहीं, अब वैसे गुरु भी नहीं रहे। क्योंकि गुरुओं को वह ज्ञान नहीं रहा, शिष्यों में ग्रहण करने की शक्ति नहीं रही। दोनों में अंतर आया। इसलिए सीधा गुरु मंत्र दिया, गुरु अपने घर, शिष्य अपने घर। क्या गुरु ने अपने कर्तव्य का पालन किया? क्या गुरु दम ठोककर कह सकता है कि मैंने शिष्य को निर्भीक बनाया? क्या गुरु ने उसके छिपे हुए आंसुओं को देखा? क्या गुरु ने उसकी सिसकारियों को सुना?



...नहीं सुना ...नहीं सुना इसलिए गुरु अपने आप में निस्तेज हो गए, समाप्त हो गए, बुझ गए। गुरु ही समाप्त हो गए, शिष्यों की कमी नहीं थी उसमें। और अगर शिष्य भी ग्रहण नहीं कर सके तो वह शिष्य भी अपने आपमें धिक्कारने योग्य है। रोते हुए, कलपते हुए जीवन व्यतीत करेंगे भी तो क्या होगा आपका? फिर मैं आपको मंत्र किसलिए दे रहा हूँ क्यों दीक्षा दे रहा हूँ? क्यों मैं ब्रह्मत्व दीक्षा दे रहा हूँ? कल आप मृत्यु को प्राप्त हो जाएंगे तो फायदा भी क्या? इस सबका? आपके परिवार में कोई अकस्मात् मौत हो गई तो मैं कहां मुँह दिखा पाऊंगा, कैसे खड़ा हो पाऊंगा आपके सामने?

आप कहेंगे - मैं तो अपने को समर्पित कर चुका आपके सामने गुरुजी! फिर क्या स्थिति बनी? क्यों मुझे आपने दीक्षा दी, फिर मुझे शिष्य क्यों बनाया?

यह सारी मन में उथल-पुथल उस पंचांग को देखने के बाद आई और फिर मुझे श्लोक याद आया यमोपनिषद का -

भौमवारे चतुर्दश्यां तां कालरात्रि महावहे,  
पूर्णतां मृत्यु इच्छायां दीवोदेवा वदन्यवी।

चतुर्दशी हो और भौमवार हो, वह अपने आप में एक योग होता है। आपने देखा होगा कि अष्टमी होती है या चतुर्दशी होती है देवी के पूजन के लिए और मंगलवार पूर्ण यम का प्रतीक होता है और कालरात्रि के दिन हों तो इन दिनों में ही निर्भीक बन सकते हैं। कुछ साधनाएं ऐसी होती हैं जो रात्रि को ही होती हैं।

मैंने पंचांग देखा, वह योग देखा तो मानस में आया, कि तुमने अभी शिष्यों की सिसकारियां नहीं सुनीं। ऊपर से तुमने कहा, वे मुस्कुरा दिए। 'जय गुरुदेव की' हाथ उठा कर बोल दिए। क्या तुमने उनको समझा,

क्या उनको मृत्यु से परे हटाया? यह जो तुम देख रहे हो  
अष्टग्रही योग इससे दूर कौन हटाएगा इनको!

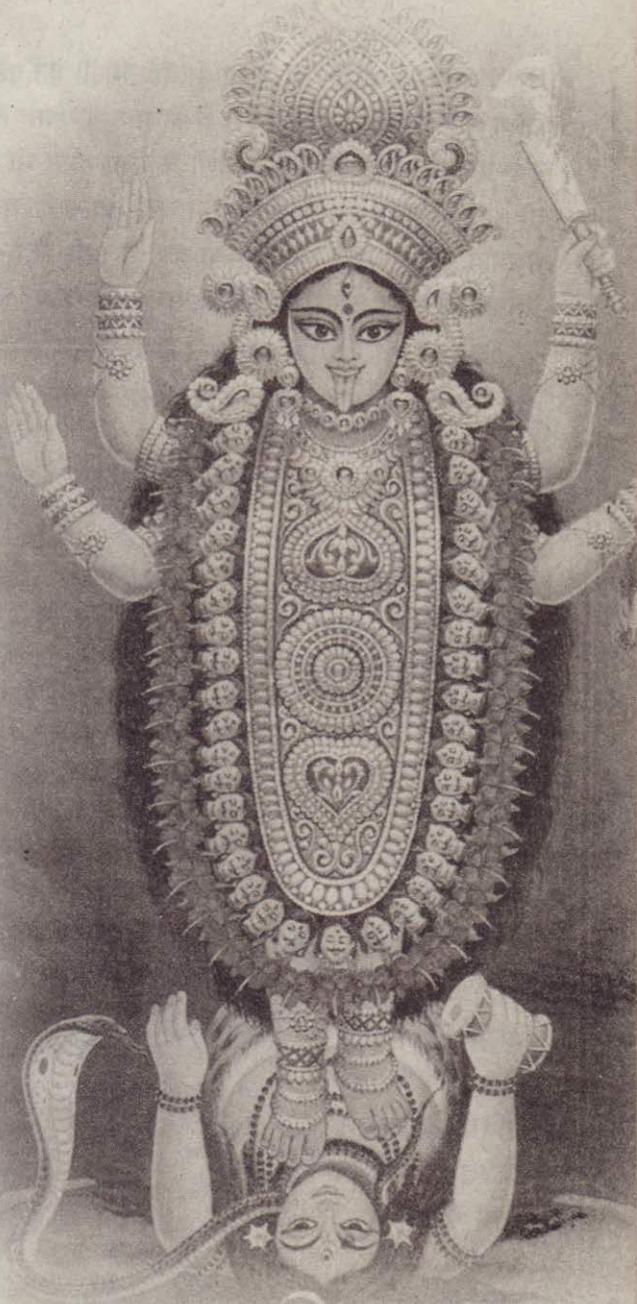
हो सकता है कल नहीं मिल पाएं ये, हो सकता है  
कल शिविर में न आ पाएं। हो सकता है छः महीने बाद  
नहीं मिल पाएं और छः महीने में न मालूम क्या घटनाएं  
घट जाएंगी। क्योंकि उतने सशंकित मैं भी हूं जितने  
आप हैं। आप उतने सशंकित हैं नहीं मगर मैं आपको  
लेकर सशंकित हूं क्योंकि मैं आपको हर हालत में जीवित  
और पौरुषवान देखना चाहता हूं और जब मैं आप शब्द  
बोल रहा हूं तो आप, आपकी पत्नी, आपके पुत्र, आपका  
परिवार - ये सब कुछ मिलकर आप बन रहे हैं।

...और समय ऐसा बिल्कुल सामने स्पष्ट है और  
आप स्वयं देख पाएंगे अपने गांव को, शहर को, देश  
को, संसार को और आज की घटना आपको याद रहेगी  
कि गुरुदेव ने पहले ही बता दिया था कि समय ऐसा  
आने वाला है। पढ़ोस में आपके सौ घर होंगे तो देख  
लेना आप कि पिचानवे किस प्रकार से वेदना और रोने में  
जी रहे हैं - देख लेना आप।

...और आप निश्चिंत होंगे इस सब के बीच। मगर  
यह तब हो पाएगा जब आपके पास मृत्यु से परे हटने की  
क्रिया होगी। निर्धनता को परे हटाने की क्रिया होगी।  
जब उनसे जूझने की आपमें ताकत आ पाएगी, जब आप  
पौरुषवान बन पाएंगे, जब शत्रुओं का संहार कर सकेंगे।

...और शत्रु आपके पग-पग पर हैं, मेरे भी हैं, आपके  
भी हैं और मैंने संन्यासी जीवन जिया, गृहस्थ जीवन  
भी। संन्यासी जीवन में मेरे इतने शत्रु थे ही नहीं और  
गृहस्थ जीवन में शत्रुओं के अलावा कुछ है ही नहीं। हर  
क्षण एक व्यर्थ का तनाव-लड़के तनाव ग्रस्त हैं, घर  
वाले तनाव ग्रस्त हैं।

मगर तनाव से होगा क्या? कुछ होना ही नहीं क्योंकि



शिष्य बनने से पहले मुझे दीक्षा ही वही मिली है। वही क्रिया मुझे मिली थी इसलिए न मैं कभी दुखी होता हूं, न तनाव ग्रस्त होता हूं। कुछ क्षणों के लिए होता भी हूं तो आपकी वजह से कि इनसे मैंने क्या चालाकी भरा भेदभाव पूर्ण व्यवहार किया? क्या वह चीज दी जो देनी चाहिए थी, क्या तुमने आने वाले समय को देखा?

नहीं देखा, तो उसमें क्या गलती शिष्यों की? उन्होंने कब मना किया था? तुमने उनको क्यों निर्भीक नहीं बनाया? उनको मृत्यु से परे क्यों नहीं हटाया? तुमने उनके घर में मृत्यु को क्यों प्रवेश होने दिया? यह चिंतन मेरा भी रहा और पिछले कुछ समय से इस चिंता में रहा।

कृष्ण जब  
ललकारते हैं तो  
इस लिए  
ललकारते हैं  
कि उनमें पौरुष  
है। विश्वामित्र  
हिम्मत के साथ  
बोलते हैं सब  
ऋषियों के सामने  
तो इसलिए कि  
उनमें पौरुष है और  
अगर मैं बोल रहा हूं तो  
इसलिए कि मैं उस  
शिष्यता, उस दीक्षा को प्राप्त  
कर सका हूं जहां मृत्यु मेरे पैरों के  
नीचे रौंदी तो जाएगी, मेरे ऊपर हावी नहीं हो  
पाएगी - यह गारंटी की बात है।

महाकाली का चित्र आपके सामने है जहां शिव के ऊपर पांव रख कर खड़ी है वह। बगलामुखी को देखें कि शत्रु पर पूर्ण हावी होकर खड़ी है।

आइंस्टाइन के पेपर पढ़ें आप, उसने कहा - भारतीयों पर मुझे बहुत आश्चर्य सा हो रहा है। आइंस्टाइन ने अपने एक पत्र में लिखा है गांधी जी को। उन्होंने कहा

- मैं समझ नहीं पा रहा हूं कि भारतीय क्या हैं? भारतीयों के पास बगलामुखी जैसा उच्चकोटि का मंत्र होने के बाद भी गुलाम हैं। इस बात को देख देख कर मैं आश्चर्य चकित हूं। इतना उच्चकोटि का मंत्र होने के बाद भी गुलाम हैं, मैं कल्पना नहीं कर सकता हूं। उसने ऐसा अपने पत्र में गांधी को लिखा है।

...और हम उस मंत्र के महत्व को ही नहीं समझ पा रहे हैं। हम बिल्कुल हतप्रभ, निस्तेज और डरपोक बनते जा रहे हैं, हरदम सशंकित बनते जा रहे हैं। हरदम दुःखी और चिंतित होते जा रहे हैं और यह स्वाभाविक है, क्योंकि आज का युग तनाव युक्त है।

मगर आने वाला समय इससे भी हजार गुना वेदना युक्त है। आपके लिए, मेरे लिए, पूरे संसार के लिए। एक कोई सोचे कि अणु बम पटक देना चाहिए - तो न आप हैं न हम हैं, न भारत वर्ष है। एक किसी का मांड़ खराब होना चाहिए।

एक ईराक के साथ युद्ध हुआ, पूरे संसार में युद्ध की स्थिति बन गई। ऐसा कुछ और हुआ नहीं कि प्रलय की स्थिति बन जाएगी।

हम अपने आपको, अपने परिवार को, अपने देश को कैसे बचाएंगे? इसीलिए हमारी महाविद्याओं की रचना हुई और वह श्लोक बना कि किस समय साधना कर पूर्ण निर्भीक बना जा सकता है।

...और निर्भीक बनने की सर्वश्रेष्ठ क्रिया है बगलामुखी क्रिया या महाकाली क्रिया। दस महाविद्याओं

में लक्ष्मी युक्त भुवनेश्वरी भी हैं, भैरवी भी हैं, छिन्नमस्ता भी हैं, महाकाली भी हैं, बगलामुखी भी हैं।

बगलामुखी का अर्थ है - मूल शब्द है वल्गा मुखी। वल्गा का अर्थ है लगाम। जैसे घोड़े के लगाम लगा देते हैं और हाथ में हमारे कंट्रोल रहता है, घोड़ा कितना ही ताकतवान हो। जब ताकत की बात करते हैं तो कहते हैं कि कितने हॉर्स पॉवर का है। घोड़े की ताकत से उसका अंदाजा लगाते हैं।

उस यम के मुंह में लगाम लगाने की जो क्रिया है उसे बगलामुखी या वलगामुखी कहा गया है। यम हमारे पैरों के नीचे कुचला हुआ रहे।

चाहे वह देवता भी हो।

क्योंकि हम देवताओं से भी श्रेष्ठ हैं, हम मनुष्य हैं। देवताओं से हम उच्चकोटि के हैं और इस बात का हमें गर्व है।

यह मेरा कर्तव्य है कि मैं शिष्यों को वह क्रिया सम्पन्न करा दूं कि इस जीवन में वे और उनका परिवार मृत्यु को प्राप्त नहीं हो सके, दुखी नहीं हो सके, उनके जीवन में सिसकारियां नहीं हो सके।

...और यह क्रिया कालरात्रि में ही सम्पन्न हो सकती है। कालरात्रि का अर्थ है काल पर विजय प्राप्त करने की क्रिया, मृत्यु पर पूर्ण विजय होने की क्रिया ...और मृत्यु का अर्थ मैंने आपको समझा दिया है - अभाव, दरिद्रता, निर्धनता, गरीबी, मृत्यु और जीवन की न्यूनताएं, वृद्धावस्था और बुढ़ापा।

ये सब कुछ अपने आपमें मृत्यु हैं। क्षण क्षण हम मृत्यु की ओर सरक रहे हैं, हम आशंकित हैं, तनाव युक्त हैं, चिंतातुर हैं। आप सोचिए कि क्या आप तनाव ग्रस्त नहीं हैं? क्या आप चिंतायुक्त नहीं हैं?

आप बाहर जाते हैं और दो दिन टेलीफोन नहीं

आता तो सोचने लग जाते हैं कि क्यों टेलीफोन नहीं आया। क्या हुआ? पत्नी, पति, बेटे, बेटियां सब तनाव में जी रहे हैं। ...और मैं आपको ही नहीं आपके पूरे परिवार को उस तनाव से, मृत्यु से दूर धकेल कर ले जाना चाहता हूं। यह मेरे जीवन की इच्छा है।

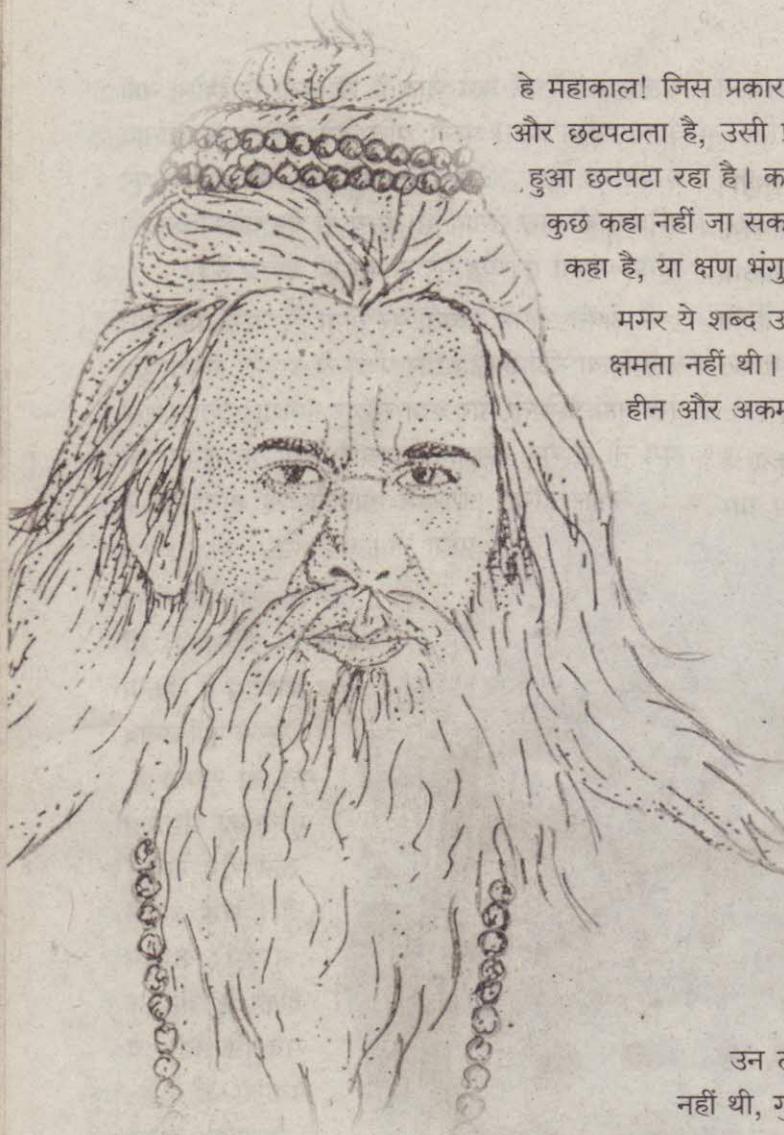
मैं अपने आपमें उच्चता पर खड़ा हो जाऊं वह बहुत बड़ी क्रिया नहीं होगी। मोर पंखों से 'अच्छा लगता है। पंख नहीं होंगे तो मोर क्या सुन्दर लगेगा? शिष्य नहीं होंगे तो मैं गुरु बनूंगा भी क्या? मेरा गुरु बनना भी बेकार होगा, अगर मैं आपको यह ज्ञान नहीं दे पाया तो।

...और महाकाल युक्त बगलामुखी दीक्षा ही वह माध्यम है, क्रिया है जिससे पूर्ण तनाव मुक्त हो सकते हैं, मृत्यु को भी पैरों तले रौंद सकते हैं। यह अपने आपमें कठिन दीक्षा है, जो एक सद्गुरु ही दे सकता है, ...आपके छोटे मोटे गुरु नहीं दे सकते क्योंकि इस महाविद्या को सिद्ध करना और महाकाल

को सिद्ध करना इतना आसान नहीं होता। शिष्यों के जीवन से मृत्यु को ही हटा दें यह सामान्य क्रिया नहीं होती। ऐसे बहुत कम उदाहरण हैं और मैं ऐसे बहुत उदाहरण बना देना चाहता हूं कि इन पर मृत्यु हावी नहीं हो सकती - यह गंरटी है, चैलेज है - यह सर्टिफिकेट है मेरी तरफ से आपको।

एक श्लोक में भगवान शिव से कहा गया है -

कालो न देवां भव देव नित्यं,  
मृत्योर्वितावै नरदेव चित्यं।  
अमोघ शस्त्रं भवतां सदैव,  
दिव्यो वदां स्नेह सदां न कुर्यात् ॥



हे महाकाल! जिस प्रकार से बाघ की दाढ़ों में एक हिरन फंस जाता है और छटपटाता है, उसी प्रकार से प्रत्येक मनुष्य आपकी दाढ़ों में फंसा हुआ छटपटा रहा है। कब आपके जबड़े मिलें और वह समाप्त हो जाए, कुछ कहा नहीं जा सकता। इसीलिए इस जीवन को पानी का बुलबुला कहा है, या क्षण भंगुर कहा है या नश्वर कहा है।

मगर ये शब्द उन लोगों ने गढ़े हैं जिनके पास ताकत नहीं थी, क्षमता नहीं थी। यह आपकी स्तुति उन लोगों ने की है जो दीन हीन और अकर्मण्य व्यक्तित्व थे।

मा ब्रह्मी दीनं वचः  
रे रे चातक सात्वधानं  
मनसा मृतक क्षणं सूर्यतां  
मम्बोदा ब्रह्मोवसंत गर्जने  
तात्प्य सुजानेति गर्जन्ती केचिद तां  
ये यम पश्य तस्य तस्य पुरदो  
मा ब्रह्मी दीनं वचः।

अरे चातक! तू बार बार इन बादलों से दीन वचन क्यों बोल रहा है? गर्जन्ती केचिद तां - ये तो बेकार गर्जना कर रहे हैं। इसीलिए जो तुम्हारी प्यास बुझा सके उसके सामने याचना कर।

इसीलिए इस श्लोक में बताया है कि ये शब्द उन लोगों ने कहे, जिनमें कर्मण्यता नहीं थी, ताकत नहीं थी, गुरुत्व नहीं था।

...और मैंने कई बार आपको स्पष्ट कहा है - कि गुरुत्व का मतलब कोई व्यक्ति विशेष नहीं है। कोई नाम नहीं है। एक उच्चकोटि की ज्योति को गुरुत्व कहा है और इस श्लोक में बताया गया है कि जिसके पास वह है, वह अपने आपमें मृत्यु पर पांव रखता हुआ, आपके चंगुल को तोड़ता हुआ, आप पर विजय प्राप्त कर लेता है। ऐसा ही मैं आप से वरदान चाहता हूँ, मैं युद्ध में संघर्ष करता हुआ आप को जीतूँ और आपको परास्त करूँ, ऐसा मैं आपसे आशीर्वाद चाहता हूँ।

यह व्यक्ति यमराज को ऐसा कह रहा है और ऐसा आशीर्वाद यमराज ने नचिकेता को दिया।

अगला श्लोक मैं गुरुदेव के बारे में बोल रहा हूँ जिन्होंने यह उच्कोटि का ज्ञान दिया -

दीर्घों सदां वदै न पूर्व मतितां,  
पूर्वों सदां वै यमः,  
चित्यं चित्यं विचित्यं रूप मदिकम्,  
गुरुवो सदां देवतां,  
ब्रह्मा विष्णु वहेन्त रुद्र सहितं,  
श्री पाद न तदन्तरे,  
श्री गुरुदेव सहितं माद वद वदै पूर्णत्व मेवां वदै।

हे गुरुदेव! आप स्वयं ब्रह्म स्वरूप हैं, विष्णु स्वरूप हैं, रुद्र स्वरूप हैं और सारी शक्तियां आप में समाहित हैं ... और आपने इन्हें दुर्लभ ज्ञान को ढूँढ़ कर निकाला जो कि समाप्त हो चुका था, वह प्रदान किया।

मैं आपकी अनुमति लेता हुआ अपने शिष्यों को मृत्यु पर पांव रखते हुए निर्भीकता के साथ मैं जीवन व्यतीत करने का आशीर्वाद देता हूँ। वे अपने जीवन में वह सब कुछ प्राप्त करें, जिसके माध्यम से उल्लास, आनंद, उमंग, यौवन, स्थिरता और देवत्व प्राप्त हो सके, ऐसा ही मैं आपको आशीर्वाद प्रदान कर रहा हूँ।

... और आप सद्गुरु से पूर्ण महाकाल बगलामुखी दीक्षा प्राप्त कर सकें, जीवन में मृत्यु पर विजय प्राप्त करते हुए निर्भीक बन सकें, ताक तवान, क्षमतावान तथा निश्चिंत बन सकें, ऐसी ही मैं कामना करता हूँ, हृदय से आशीर्वाद देता हूँ।

- सद्गुरुदेव परमहंस स्वामी  
निखिलेश्वरानन्द

# वार्षिक सदस्यता

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका आपके परिवार का अभिन्न अंग है। इसके साधनात्मक सत्य को समाज के सभी स्तरों में समान रूप से स्वीकार किया गया है, क्योंकि इसमें प्रत्येक वर्ग की समरन्याओं का हल सरल और सहज रूप में समाहित है।

इस पत्रिका की वार्षिक सदस्यता को प्राप्त कर,  
आप पार्देंगे अद्वितीय और विशिष्ट उपहार

# ज्वालामालिनी यंत्र

ज्वालामालिनी शक्ति की उग्ररूपा देवी हैं, परन्तु अपने साधक के लिए अभयकारिणी हैं। इनकी साधना मुख्य रूप से उन साधकों द्वारा की जाती है, जिससे वे शक्ति सम्पन्न होकर पूर्ण पौरुष को प्राप्त कर सकें। ज्वालामालिनी की पूजा साधना गृहस्थों के द्वारा भूत-प्रैत बाधा, तंत्र बाधा आदि के लिए, शत्रुओं द्वारा किए गए मृद आदि प्राणधातक प्रयोगों को समाप्त करने के लिए की जाती है।

**साधना विधान :-** इस साधना को आप मंगलवार या अमावस्या की रात्रि को प्रारम्भ करें। यह तीन रात्रि की साधना है। सर्वप्रथम गुरु पूजन सम्पन्न करें, उसके पश्चात् यंत्र का पूजन कुंकुम, अक्षत एवं पुष्प से करें और धूप दिखाएं। फिर किसी भी माला से निम्न मंत्र का 7 माला मंत्र जप करें।

**मंत्र //** उ॒ँ नमो भगवति ज्वालामालिनि सर्वभूत संहारकारिके ज्ञातवेदसि  
ज्वलन्ति प्रज्वलन्ति ज्वल ज्वल प्रज्वल हुं रं रं हुं फट॥

साधना के तीसरे दिन यंत्र को अपने पूजा स्थान में स्थापित कर दें और जब भी अनुकूलता चाहें, ज्वालामालिनी मंत्र की 3 माला मंत्र जप अवश्य कर लें।

यह दुर्लभ उपहार तो आप पत्रिका का वार्षिक सदस्य अपने किसी मित्र, रिश्तेदार या स्वजन को बनाकर ही प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप पत्रिका-सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं भी सदस्य बनकर यह उपहार प्राप्त कर सकते हैं। आप पत्रिका में प्रकाशित पोस्टकार्ड नं. 4 स्पष्ट अक्षरों में भरकर हमारे पास भेज दें, शेष कार्य हम स्वयं करेंगे।

वार्षिक सदस्यता शुल्क - 258/- + 45/- डाक खर्च = 303/-, Annual Subscription 258/- + 45/- postage = 303/-  
Fill up and send post card no. 4 to us at :

- : सम्पर्क :-

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हार्डिकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर 342031, (राजस्थान)

Mantra-Tantra-Yantra Vigyan, Dr. Shrimali Marg. High Court Colony, Jodhpur-342031, (Raj.), India

फोन (Phone) .0291-2432209, 2433623 टेलीफैक्स (Telefax) . 0291-2432010

# विचार करें

## नवरात्रि दीपावली छान्दोश

जब तक यह अंक आपके पास पहुंचेगा, तब श्राद्ध पक्ष समाप्ति की ओर होगा तथा शारदीय नवरात्रि के उत्सव की आप तैयारी कर रहे होंगे। पत्रिका का पिछला अंक पूर्णतः भगवती दुर्गा को ही समर्पित था। उसमें से कुछ साधनाएं आपने अवश्य सम्पन्न करने का निश्चय किया होगा, उन्हें अवश्य करें।

यह तो सत्य है कि नवरात्रि आ रही है, दीपावली आ रही है लेकिन आपके जीवन में क्या नयापन आ रहा है अथवा आपके जीवन में क्या प्रकाश फैल रहा है, इस पर भी विचार करना आवश्यक है, तभी आप उत्सव को भली भाँति समझ सकते हैं।

कहते हैं, परमात्मा ने जब मनुष्य को बनाया तो वह अत्यन्त प्रसन्न हुआ और उसने विचार किया कि यह मेरी सर्वश्रेष्ठ अनुकृति है। यह जगत का संचालन करेगी और अब मैं आराम से क्षीर सागर रहूँगा। मानव जैसे योन्य व्यक्ति के हाथ में पृथ्वी सुरक्षित है। यह अपना विकास अपने आप करेगी और पृथ्वी सुन्दर से सुन्दरतम होती जायेगी। ...लेकिन आप विचार करें कि क्या वास्तव में ऐसा हुआ या बिल्कुल ही इसका उल्टा हो गया। भगवान ने तो मनुष्य बनाये और कहा कि यह तो पशुओं से श्रेष्ठ है लेकिन ऐसा कैसे हुआ कि मनुष्य धीरे-धीरे पशुओं से भी बदतर होता चला गया।

ऐसा क्यों हुआ? इसका कारण और विवेचना भी आवश्यक है। ...और आपके पास दिमान, बुद्धि, विवेक, ज्ञान, चतुराई सब कुछ है तो इस प्रश्न का हल भी आपको निकालना पड़ेगा।

आज संसार में सबसे ज्यादा कलह मनुष्य और मनुष्य के बीच में है। मनुष्य जाति में तनाव के कारण आत्महत्या की घटनाएं निरन्तर बढ़ती जा रही हैं। मनुष्य जाति में वाद-विवाद, मुकदमेबाजी की घटना बढ़ती जा रही है, मनुष्य जाति में अपने ही वर्ग के लोगों के प्रति शंका और ईर्ष्या का भाव सबसे अधिक है।

प्रकृति में मनुष्य भी रहते हैं, पशु-पक्षी, नभचर, जलचर, भी निवास करते हैं लेकिन झगड़ा मनुष्य और मनुष्य के बीच में ही क्यों है। गीता में भगवान कृष्ण ने सुन्दरतम रूप से कहा कि काम, क्रोध, मद, लोभ, मनुष्य के सबसे बड़े शत्रु हैं। आप भी अपनी आरती में नित्य गाते हैं, काम, क्रोध, मदलोभ मदसर चोर बड़े भारी तो फिर समस्या कहां है?

आप विचार करें और देखें कि संसार में सारे पशु-पक्षी, जानवर सद्भाव के साथ रहते हैं। अपनी जाति के जानवरों से उनका कोई द्वेष नहीं है। एक ही जंगल में शेर से लगाकर चींटी तक रहते हैं और सभी अपना जीवन जीते हैं। सबसे बड़ी बात यह है कि सब जानवर अपनी पूर्णायु को प्राप्त करते हैं और आयु पूर्ण होने पर शरीर त्याग देते हैं। मैंने जंगल में किसी शेर को शेर से लड़ते हुए, किसी हिरण को हिरण से लड़ते हुए नहीं देखा सारे जानवर एक ही तालाब में पानी पीते हैं। शांति से रहते हैं, इसका कारण है कि उनमें काम, क्रोध, मद, लोभ, अंधा आसक्ति का भाव नहीं है। चाहे चिड़िया हो, चाहे शेर हो जब तक उसका बच्चा पंख फड़फड़ाकर उड़ने नहीं लग जाता अथवा शेर का बच्चा जब तक शिकार करने लायक नहीं हो जाता तब तक ही मां उसे अपने पास रखती है। जैसे ही वह तैयार हो जाता है उसे स्वतंत्र छोड़ देती है अपना जीवन जीने के लिये। दूसरी ओर मनुष्य जब से संतान उत्पन्न करता है, तब से इच्छाएं, आकांक्षाएं पालना शुरू कर देता है। अब मेरा वंश चलेगा, मेरा लड़का मुझे सहयोग देगा, मेरे बराबरी का व्यक्तित्व तैयार हो गया है, बुढ़ापे में मेरा ध्यान रखेगा, ऐसे

ही स्वार्थ के साथ आप उसे शिक्षा देते हैं, उस पर खर्च करते हैं और उसे ईर्ष्या धृणा का भाव सिखाते रहते हैं। बार-बार यह कहते हैं कि तेरे चाचा ने अथवा उस रिश्तेदार ने तेरे पिताजी को धोखा दिया, उनसे बात मत करना। ऐसी कई बातें बचपन से पढ़ते रहते हैं।

बच्चा अपनी उन्नति करना चाहता है, वह अपनी योग्यता के अनुसार आगे बढ़ता है। अब उसमें योग्यता है तो बाहर जायेगा, बड़ा होकर खुद की गृहस्थी बसायेगा। फिर आप कर्यों उसे दबोच कर अपने पास ही रखना चाहते हैं। आपकी इच्छा है कि घर इतना बड़ा हो, कि उसमें सारे बच्चे एक साथ रहे। तीन बच्चे हैं तो तीनों के लिये तीन घर बनाना चाहते हैं, जबकि यह कोई जरूरी नहीं है कि वे आपके पास रहें जहां उनकी नौकरी, व्यापार होगा, वही तो रहेंगे।

ज्यादा से ज्यादा लोभ कर, पेट काट-काट कर धन इकट्ठा करते हैं कि यह मेरे बच्चों के लिये काम आयेगा। जबकि प्रकृति में ऐसा कोई नियम नहीं है। कोई पशु-पक्षी अपनी दस संतानों के लिए, दस घोंसले या दस गुफाओं का निर्माण नहीं करता है। सब अपने आप में स्वतंत्र आनन्द से रहते हैं। यह मोह, यह अत्यधिक इच्छा, एक प्रकार से प्रकृति के साथ खिलवाड़ है। अपना घर बढ़ाने के लिये प्रकृति का सत्यानाश करते रहते हैं वृक्ष काटते रहते हैं, जंगल नष्ट करते रहते हैं, नदियों का प्रवाह रोकते रहते हैं, और सिस्टम में निरन्तर गड़बड़ी करते रहते हैं।

इससे भी बड़ी बात यह है कि ज्यादातर जीवन तो बाहर दिखावे में ही व्यतीत करते हैं। बच्चों के बर्थ डे, शादियों में, अधिक खर्च इसलिए नहीं करते हैं कि इससे आपको खुशी हो रही है। इसलिये करते हैं कि आपके खर्च को देखकर दूसरे व्यक्ति आपकी प्रशंसा करें और थोड़ी सी प्रशंसा के लिये आप कर्ज लेकर भी उत्सव को महान् दिखावा, सर्कस टाइप बना देते हैं। न तो आप खुद स्वतंत्र रहते हैं, अपनी आत्मा की इच्छा के अनुसार आनन्द पूर्वक जीवन जीते हैं और न ही दूसरों को जीवन जीने देना चाहते हैं। इसके मूल में अत्यधिक ईर्ष्या, अत्यधिक लोभ तथा दूसरे को नीचा दिखाकर खुद को ऊंचा दिखाने का भाव ही है। हर काम को करने से पहले सबसे पहले यह सोचते हैं कि लोग क्या कहेंगे। इसी में ही आपका जीवन व्यतीत हो जाता है, शरीर में बीमारियां आती हैं।

यदि आपको ऐसा ही काम, क्रोध, मद युक्त जीवन अच्छा लग रहा है, जैसा कि आपके परिवार ने, पूर्वजों ने सिखाया है वैसा ही जीना चाहते हैं तो आपकी इच्छा है।

यदि आप स्वतंत्र जीवन जीना चाहते हैं, तो यह भी आपकी इच्छा है, इसके लिये कोई जीवन में बहुत बड़ा परिवर्तन नहीं करना पड़ेगा। ...लेकिन विंता से मुक्त होने का उपाय स्वयं के मन में अवश्य करना पड़ेगा। थोड़ा सोचना पड़ेगा कि आपाधापी, दौड़-भाग किसके लिये कर रहा हूं? क्या इस आपाधापी से मुझे वास्तव में आनन्द या सुख प्राप्त हो रहा है या नहीं? जीवन में गुरु का मिलना सौभाग्य का आगमन होता है, और तभी मनुष्य अपने स्वयं के बारे में आत्म चिन्तन करने लगता है, स्वयं के बारे में विचार कर संतुष्ट होने का प्रयास करता है। सद्गुरु कहा करते थे कि आधे घंटे प्रभु स्मरण, गुरु स्मरण करने में जो आनन्द है, वह संसार में और किसी भी वस्तु में प्राप्त नहीं हो सकता है क्योंकि वह आधा घंटा आप स्वयं अपने लिये जीते हैं।

जगत की अधिष्ठात्री देवी भगवती महालक्ष्मी हैं, उनका ही स्वरूप दुर्गा है, उनका ही स्वरूप सरस्वती है और यह नवरात्रि, दीपावली, कार्तिक मास आपके लिये यही संदेश लेकर आया है कि आप किस प्रकार अपने जीवन को समय रहते बदल सकते हैं। साधनाओं का उद्देश्य केवल आर्थिक उन्नति नहीं है, मूल उद्देश्य आध्यात्मिक उन्नति, मानसिक उन्नति भी है। जब तक अध्यात्म और मानसिक रूप से आप श्रेष्ठ नहीं बनेंगे तब तक न तो जीवन में अर्थ की प्राप्ति हो सकती है और न ही अपने बहुमूल्य जीवन का अर्थ समझ सकते हैं। आप जैसे योग्य साधकों को महालक्ष्मी विशेषांक का प्रथम भाग प्रस्तुत करते हुए अत्यन्त प्रसन्नता है और गुरु परिवार की ओर से पूर्ण आशीर्वाद है।

आपको समृद्धिशाली बनाना है

क्या केवल इच्छा से समृद्धिशाली बन सकते हैं?

क्या केवल कर्म से समृद्धिशाली बन सकते हैं?

क्या केवल भारत से समृद्धिशाली बन सकते हैं?

**कर्मोऽपैष्प्राहीं**

आप अपनाएं सद्गुरु प्रदत्त

# सात स्तवाण्मित्र लक्ष्मा

समृद्धिशाली जीवन हेतु

समृद्धिशाली या लखपति - करोड़पति होना कोई गुनाह क्योंकि वे नित्य आठ-दस घण्टे परिश्रम करते हैं, और जरूरत नहीं है। यह तो जीवन का सौन्दर्य है, और आज के युग में से ज्यादा मेहनत कर शरीर तोड़कर कार्य करने के बाद सही दृष्टि से देखा जाय तो जीवन की पूर्णता है। यह जरूरी है विश्राम करते हैं, फिर भी उसके जीवन में दरिद्रता या गरीबी कि अर्थ की जो भी प्राप्ति हो वह सामाजिक नियमों के अनुकूल बनी रहती है। इसका तात्पर्य यह स्पष्ट हुआ कि मात्र परिश्रम तथा कानून की दृष्टि से उचित हो। से जीवन में समृद्धता नहीं आ सकती।

दरिद्रता को जीवन में कभी भी प्रश्रय नहीं मिला। यदि हमारे प्राचीन ग्रंथों को टटोलकर देखें तो उसमें कहीं पर भी दीनता या दरिद्रता की सराहना नहीं की है। हमारे कोई भी क्रषि, मुनि सिद्ध योगी या तपस्वी दरिद्री नहीं रहे। धन की मङ्हता को उन्होंने भी समझा था, और उन्होंने भी स्वीकार किया था कि जीवन की पूर्णता भुखमरी, गरीबी, दीनता या दरिद्रता नहीं है, अपितु समृद्धता, सुख और सौभाग्य है।

## परिश्रम से नहीं

यदि परिश्रम से ही समृद्धता प्राप्त होती हो तो जितने भी मजदूर पत्थर तोड़ने वाले या मेहनत करने वाले मजदूर कारीगर हैं वे सभी लखपति, करोड़पति अथवा समृद्धिशाली होते, ऐश्वर्य प्राप्त नहीं हो सकता।

## केवल भारत से नहीं -

और न भाग्य से ही जीवन की गरीबी मिट सकती है। यदि हम अपने चारों ओर दृष्टि डालें तो मुठभी भर लोग ही धनवान या समृद्धिशाली हैं, और लगभग 80 प्रतिशत व्यक्ति गरीबी मध्यम वर्गीय जीवन जी रहे हैं।

तो क्या इन सबके भाग्य कमजोर है, क्या इन सबके भाग्य में गरीबी ही लिखी हुई है, क्या इन सबके जीवन में सामान्य जीवन जीने की लकीरें ही अंकित हैं? ऐसा तो संभव नहीं है,

और जब तक आपके जीवन में समृद्धता सुख और सौभाग्य प्राप्त नहीं हो सकता, तब तक न तो आप अपनी इच्छाओं को पूर्णता दे सकते हैं, और न आपके मन में जो कार्य करने की भावना है उनको सम्पन्नता श्रेष्ठता दे सकते हैं। यदि आपके मन में विदेश घूमना है, या आपको चित्रकला का शौक है, और इस कला को ऊंचाई पर उठाना है तो केवल रोटी रोजी के चक्कर में पड़कर अपनी मन की हसरत पूरा नहीं कर सकते। इसके लिए आप जब अपने जीवन की मूल आवश्यकताओं की समस्याओं से परे हटेंगे तभी अपनी मन में जो भावनाएं हैं उनको ऊंचाई पर उठा सकेंगे।

### दैवी सहायता से ही संभव है

अब यह प्रामाणिक रूप से स्पष्ट हो गया कि मनुष्य केवल अपने प्रयत्नों या परिश्रम से ही पूर्णता समृद्धता और ऐश्वर्य प्राप्त नहीं कर सकता इसके लिए यह जरूरी है कि उसे अपने परिश्रम के अलावा दैवी सहायता भी चाहिये और जब तक हम इस दैवी सहायता को प्राप्त नहीं कर पाते, जब तक उन्हें अपने अनुकूल नहीं बना पाते तब तक हमारा जीवन सामान्य सा जीवन ही बना रहेगा, चाहे हम कितना ही परिश्रम कर लें, चाहे हम कितना ही भाग्य का रोना रो लें।

पर यह विश्वास पर, श्रद्धा पर और धैर्य पर निर्भर है। इसके लिए यह आवश्यक है कि आपको कोई सही मार्ग दर्शक मिले। आपको अपने जीवन में सही गुरु की प्राप्ति हो, गुरु वह जो इस क्षेत्र में सिद्ध हो, सफल हो। आपको सही गुरु की प्राप्ति हो, जिसका स्वयं का जीवन भी दैवी सहायता से पूर्ण समृद्धिशाली हो, वही गुरु आपको सही प्रकार से मार्ग दर्शन दे सकता है, कि आप किस प्रकार से दैवी सहायता प्राप्त करें, किस दृष्टि से उन्हें अपने अनुकूल बनायें जिससे कि हमें उचित अवसर मिल सकें, जिससे कि हमें ऐसा वातावरण मिल सकें, जिसमें प्रगति करें, पग-पग पर जो हमें बाधाएं आ रही हैं, वे दूर हों, और हम कम समय में तेजी के साथ चलते हुए समृद्धता के उस लक्ष्य पर पहुंच सकें जो हमारे जीवन का अभीष्ट है।

पर ऐसे गुरु गलियों में या राह चलते तो मिल नहीं सकते। इस क्षेत्र में पाखण्ड और ढोंग ज्यादा है, जिन्होंने बहुत ज्यादा तिलक छापे लगा रखें हैं वे सही गुरु हो ही नहीं सकते। जिन्होंने अपने शरीर का विज्ञापन कर रखा है वे आपको भली प्रकार से मार्ग दर्शन नहीं दे सकते। इसके लिये आपको अपनी आंखें खोलकर चलना पड़ेगा और प्रामाणिक तथा सही गुरु को ढूढ़ना पड़ेगा, अपनाना पड़ेगा, उसे अपने विश्वास में

लेना पड़ेगा और उस से वह रास्ता समझना पड़ेगा जिसके माध्यम से देवी कृपा प्राप्त होती है।

### विलम्ब तो आत्मधात है -

आप निर्णय कर लीजिये, भली प्रकार से विचार कर लीजिये पर ऐसा न हो कि सोचने-सोचने में ही आपको कई वर्ष लग जाएं और जीवन व्यतीत हो जाय, ऐसा न हो कि आप यह सोचकर बैठ जायें कि इस क्षेत्र का मार्ग दर्शन या गुरु स्वयं आपके दरवाजे पर आकर दरवाजा खटखटायेगा और आपको मार्ग दर्शन देगा। इसके लिए आपको स्वयं को प्रयत्न करना पड़ेगा, स्वयं को आगे बढ़कर निर्णय करना पड़ेगा, और जल्दी से जल्दी निश्चय कर अपने सामाजिक उत्तरदायित्वों को संभालते हुए इस क्षेत्र में तेजी के साथ आगे बढ़ना पड़ेगा।

### जो गरीबी से समृद्ध बने -

यदि जीवन में देखा जाय तो हमारे सामने हजारों - हजारों उदाहरण हैं कि उन्होंने गरीबी में भूखमरी में कंगाली में जन्म लिया, और सही मार्ग दर्शन के साथ जीवन के उच्चतम सोपान पर पहुंचे। अमेरिका के रॉकफेलर अत्यन्त गरीबी में पैदा हुए, पर उन्हें जीवन में संत पीटर मिले, और उनके बताये हुए रास्ते पर चलकर वे करोड़पति-अरबपति बनें। ओनासिस जन्म के समय या बचपन में इतने गरीब थे कि कई बार उन्हें भरपेट खाना भी नहीं मिलता था, पर उन्हें संत बर्ग मिले और उन्होंने दैवीय कृपा प्राप्त करने का रास्ता बताया जिससे ऑनासिस अपने जीवन में अरबपति बना। इसी प्रकार अमेरिका में राष्ट्रपति लिंकन, इंग्लैण्ड के कुबेरपति गुरुच, जापान के अरब पति आनाविबा आदि सैकड़ों उदाहरण हैं, जिन्होंने अत्यन्त गरीबी में जन्म लेकर भी उच्च संतों या इस प्रकार के मार्ग दर्शक की छाया तले आगे बढ़कर समृद्धतम जीवन प्राप्त किया और अपने में ही अबरपति बनें।

### आप भी कुछ ही महीनों में करोड़पति बन सकते हैं

यह कल्पना नहीं, अपितु हकीकत है, आप चाहें तो इस गरीबी से ऊपर उठकर अपने जीवन में पूर्ण समृद्ध जीवन प्राप्त कर सकते हैं। अपने घर की दरिद्रता को हजारों-हजारों मील दूर धकेल सकते हैं, जीवन की कंगाली को परे हटा सकते हैं, और अपने जीवन में वह समृद्ध जीवन प्राप्त कर सकते हैं, जो अपने आप में अद्वितीय हो, सौभाग्यदायक हो पूर्ण हो, और ऐश्वर्यवान हो।

इसके लिये सात सूत्र हैं जिनका मनन, चिन्तन करना जरूरी है, पर खाली चिन्तन, मनन में ही नहीं, आज से ही अपने

जीवन में उतारना आवश्यक है और यदि दृढ़ता के साथ विश्वास और हौसले के साथ इन सूत्रों को अपने जीवन में उतार लेते हैं, तो निश्चय ही आप अपने जीवन में समृद्ध और ऐश्वर्यमय बन सकते हैं।

### सात स्वर्णि मुख

1. आप आज से ही आलस्य छोड़ दें, भाग्य का रोना भुला दें और मन में यह निश्चय कर लें कि मुझे समृद्धिशाली होना ही है, मैं हर हालत में धनपति बनकर ही रहूंगा, तो आपके शरीर में अनुकूल ऊर्जा बनेगी, जो आपके जीवन में 'नेगेटिव थिंकिंग' है वह दूर हो सकेगी, क्योंकि हमारे मन में जो विचार है वही जीवन का निर्माण करते हैं, इसलिये हमेशा समृद्धमय होना ही सोचिये।
2. रात को 'सोते या प्रातःकाल उठते समय यही प्रार्थना कीजिये कि आप जल्दी से जल्दी ऐश्वर्य के उस लक्ष्य को प्राप्त कर लेना चाहते हैं जो समृद्ध है। ऐसी प्रार्थना आपके मन को और विशेषकर अन्तःमन को संबल देगा, और आपको आत्मविश्वास से भरपूर बना देगा, क्योंकि हम जैसा बोयेंगे, वैसा ही काटेंगे, समृद्धमय चिन्तन ही हमें जीवन में समृद्धता दे सकता है।
3. उस गुरु या मार्ग दर्शक को ढूँढ निकालिए जो पाखण्ड और ढोंग से परे हो, जिसे सही ज्ञान हो और जो भली प्रकार से इस क्षेत्र में आपका मार्ग दर्शन कर सकता है और जब एक बार उसे गुरु या मार्ग दर्शक बना दिया तो उस पर विश्वास रखिये, अपने जीवन की नाव को उसके हवाले कर दीजिये, निश्चय ही वह आपको उस किनारे तक पहुंचाने में सहायक होगा।
4. अपने जीवन में धैर्य और विश्वास बनायें रखें, एक या दो दिन में सब कुछ नहीं होता। उतावलापन, अविश्वास और कुतर्क आपके ही जीवन को समाप्त कर देगा, इसके लिए लम्बे समय तक धैर्य और विश्वास की जरूरत है, सतत अभ्यास या प्रयत्न से ही समृद्धिमय जीवन प्राप्त हो सकता है।
5. दैवी कृपा प्राप्त करने का प्रयत्न कीजिये हमारे सारे शास्त्र झूठे नहीं हैं, उनमें जो कुछ साधनाएं या मंत्र प्रयोग दिये हैं वे अपने आप में प्रामाणिक हैं, यह अलग बात है कि समय के प्रभाव से उन मंत्रों में न्यूनता या परिवर्तन आ गया है, पर इसे गुरु सुधार सकता है, वह बता सकता है कि सही रास्ता क्या है, किस प्रकार की साधना से लक्ष्मी, कुबेर या समृद्धता के अधिपति आपके अनुकूल हो सकते हैं, और जीवन में पूर्णता, समृद्धता दे सकते हैं।
6. समृद्धता के देव कुबेर या लक्ष्मी अथवा स्वर्णाविती साधना की ओर बढ़िये - इसकी पूरी विधि जानिये और फिर अपने व्यस्त समय में से समय निकालकर इस प्रकार की साधना के माध्यम से दैवी सहायता प्राप्त कीजिये, तभी तो जीवन में सम्पन्नता और ऐश्वर्य प्राप्त हो सकेगा। त्रिशक्ति भगवती महाकाली, महालक्ष्मी और महासरस्वती का नित्य ध्यान अवश्य करें। जगत में त्रिशक्ति कर्म और ज्ञान की अधिष्ठात्री देवी है जब शक्ति कर्म और विवेकमय ज्ञान का संयोग होता है तो आप अपने जीवन में समृद्धिशाली अवश्य बनते हैं। याद रखें समृद्धि का तात्पर्य केवल धन नहीं अपितु उसके साथ यश, मान, प्रतिष्ठा और आत्मिक शांति भी आवश्यक तत्व है।

इस छंक में महालक्ष्मी से सम्बन्धित विशेष साधनाएं आपके लिये प्रस्तुत हैं, जिनहें सम्पन्न कर द्वाप जीवन में समृद्धिशाली बन सकते हैं। लक्ष्मी के विविध स्वरूपों की साधनाएं जो जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम हैं -

- ★ कनकधारा साधना
- ★ लक्ष्योदामा साधना
- ★ भारयोदय साधना
- ★ जैन साबर तंत्र का अनुठा लक्ष्मी प्रयोग
- ★ इच्छापूर्ति कामेश्वरी साधना
- ★ यम नचिकेता साधना
- ★ अष्ट लक्ष्मी प्रयोग
- ★ शिव लक्ष्मी प्रयोग
- ★ स्थिर लक्ष्मी प्रयोग
- ★ ऋष्ण मोचन लक्ष्मी प्रयोग
- ★ कुबेर लक्ष्मी प्रयोग
- ★ नित्य लक्ष्मी प्रयोग
- ★ सौन्दर्योत्तमा साधना
- ★ बीसा यंत्र

(जिसे योगियों - मठीयों ने सिद्ध किया)

ऋषि याजुदल्लक्ष्य से खादि गुरु शंखचार्य तक

देवी कनकधारा

**कृष्णकृष्णभूत सुग्रीव**

हमारे प्राचीन ऋषियों के आश्रम इतने विशाल, समृद्ध वर्णों होते थे।  
हमारे प्राचीन काल में इतने ऊंचे विशाल मन्दिर कैसे बने,  
वे मन्दिर-ज्योर्तिलिंग-चार थाम में आज भी सज्जीव जीवन्त दिखाई देते हैं  
महल सिट गये लेकिन विशाल मन्दिर हजारों सालों से खड़े हैं।

**इसके पीछे रहस्य थी, ऋषियों की लक्ष्मी साधना =**

साधना का एक रहस्य यह है कि इसमें अचानक छलांग स्वरूपों और शीघ्र प्रकट होने वाले स्वरूप की साधना व आराधना करें तो जीवन में शीघ्र ही समस्त सफलताएं और अनुकूल स्थितियां निर्मित होने की दशा निर्मित हो जाती है। साधना के प्रथम चरण में ही भगवती महालक्ष्मी का साक्षात् दर्शन पाना या उनके द्वारा मनोवांछित वर प्राप्त कर लेना साधक के लिए संभव नहीं है, इसकी अपेक्षा यदि वह देवी के किसी विशिष्ट स्वरूप की साधना करता है तो अपने भौतिक जीवन की कामनाएं तो शीघ्रता से पूर्ण करता ही है, साथ ही साथ साधनात्मक दृष्टि से भी कुछ पग और आगे बढ़ जाता है।

प्रस्तुत साधना एक ऐसी ही साधना है। समय-समय पर युग द्रष्टा ऋषियों और मंत्र - सृष्टाचिन्तकों ने एक ही साधना के विभिन्न रूप ढूँढ़े, उहें अपनी अनुभूति के आधार पर अलग-अलग नामों से सम्बोधित किया और यह उनके प्राणों का बल होता है कि वे मंत्रों के प्रभाव से देवी का वही स्वरूप गठित कर उन्हें उपस्थित होने के लिए विवश कर देते हैं। कनक

एक युग पूर्व, युग पुरुष आद्यशंकराचार्य ने जिस प्रकार से मारकर बड़ी उपलब्धि अर्जित करने की अपेक्षा यदि लघु एक धनहीन विप्र की दरिद्रता से व्यथित होकर भगवती मंहालक्ष्मी का आह्वान कनक धारा रूप में किया था और देवी से प्रार्थना की थी कि वे अपने नाम के अनुकूल अपने प्रभाव से ठीक यही बात भगवती महालक्ष्मी के स्वरूप के साथ भी है। में उससे भी अधिक प्राचीन और सरल पद्धति से रची गयी साधना है - कनक प्रभा साधना... और तथ्य तो यह है कि इसी साधना के आधार पर कनक धारा देवी का चिंतन भगवतपाद ने अपने प्रसिद्ध स्तोत्र में किया है। प्राचीन कनक प्रभा ही उनके द्वारा कनक धारा रूप में विख्यात हुई।

देवी के उस स्वरूप को कनक धारा कहें अथवा कनक प्रभा का सम्बोधन दें, तात्पर्य केवल एक ही है कि घर में, और सन्न्यासी हो तो उसके आश्रम में धन का ऐसा प्रवाह आरम्भ हो जाए जो स्वर्णवर्षा जैसा हो क्योंकि धन की प्रचुरता से ही संभव है जीवन में प्रसन्नता का आगमन। धन केवल आवश्यकता अनुसार ही उपलब्ध होना जीवन की श्रेयता नहीं है। धन का वास्तविक आनन्द यह है कि धन आवश्यकता से कहीं अधिक उपलब्ध हो, जिससे वर्तमान की सभी समस्याएं सुलझें ही, भावी जीवन के लिए, हमारे मन में कोई आशंका या चिंता न रहे, क्योंकि जहां कल की चिंता है, वहां निश्चिंतता नहीं और के रूप में उपस्थित होने की एक विशिष्ट पद्धति ढूँढ़ निकाली। जहां निश्चिंतता नहीं, वहां फिर कोई श्रेष्ठ धार्मिक या

आध्यात्मिक चिंतन नहीं। नित्य प्रति की दरिद्रता धीरे-धीरे व्यक्ति के अन्दर घुलती हुई उनके मन, प्राण, आत्मा तक को दरिद्र, हीन और पतित बना देती है। जीवन की इन्हीं स्थितियों को समाप्त करने की साधना है - कनक प्रभा।

भगवती महालक्ष्मी के साक्षात् उपस्थित होने का अर्थ यही होता है कि हमारे जीवन में अनुकूलता प्रारम्भ हो, हमारे जीवन में मधुरता का आरम्भ हो। पौरुष और क्षमता का अतिरिक्त प्रभाव हो... और ये ही लक्षण जीवन में आते हैं किसी साधना के माध्यम से या, किसी दैविक शक्ति के शरीर में समाहित हो जाने से, और फिर कनक प्रभा... कनक प्रभा तो साक्षात् उपस्थित हो जाने वाला स्वरूप है, अपने चैतन्य स्वरूप से साधक को आश्वस्त कर देने वाला स्वरूप है, जिससे साधक के मन में कोई द्रंढ़ न रहे और निश्चिंत होकर साधना के मार्ग पर तेजी से गतिशील हो सके।

'पद्म की मंद आभा के समान वस्त्र धारण किये हुए विशाल चाक्षुषी देवी जिनकी पलकें अधमुंदी, जिनके नयनों के छोर कणों को स्पर्श करते हुए प्रतीत होते हैं, ऐसी सघन केश युक्ता, सुगन्धित केश युक्ता, पद्मगन्धा, सुमधुर गंध से समस्त वातावरण को आप्लावित करती हुई देवी कनक प्रभा अपने शरीर पर धारण किये हुए विविध स्वर्णभूषणों से वातावरण को जिस प्रकार शोभायमान कर रही हैं और जिनकी स्वर्णिम आभा से युक्त मुख श्री को देखते ही चित्त उनके चरणों में स्वतः नत हो जाता है उन देवी कनक प्रभा के चरणों में मेरा मस्तक सदा ही अवनत रहे।' देवी के उपरोक्त कनक प्रभा स्वरूप की ध्यान और स्तुति से स्पष्ट होता है कि वास्तव में कनक प्रभा भगवती महालक्ष्मी का ही स्वर्णिम और वरदायक स्वरूप है, ऐसे वरदायक स्वरूप की अभ्यर्थना करने की अपेक्षा किसी अन्य स्वरूप की आराधना फिर कहां तक तर्क सम्मत और बुद्धिमत्ता पूर्ण होगी? आगे इसी ध्यान में वर्णित है कि कनक प्रभा देवी के दोनों हाथों में से एक वर मुद्रा एवं दूसरा अभय मुद्रा में अवस्थित है, जिससे स्पष्ट होता है कि उनका यह स्वरूप पूर्ण रूप से अनुग्रहकारी है।

कनक प्रभा देवी तो मूलतः रस सिद्ध योगियों की पारद विज्ञानियों की आराध्या रही हैं क्योंकि इन्हीं की साधना पद्धतियों में छिपा है स्वर्ण निर्माण का रहस्य। स्वर्ण निर्माण जहां पारद विज्ञान के माध्यम से संभव है, जहां रसायन के माध्यम से संभव है, वहीं मांत्रोक्त पद्धति से भी पूर्ण रूप से संभव है, और कहते हैं, इस साधना में सफलता मिलने पर देवी कनक प्रभा के इसी मंत्र में निहित वह गुप्त क्रिया भी प्राप्त

हो जाती है, जिसके द्वारा केवल तांबे को ही नहीं बरन् अन्य सभी धातुओं को भी स्वर्ण में परिवर्तित किया जा सकता है।

यह तीस दिनों की साधना है और मांत्रोक्त साधना होने के कारण अपने गर्भ में, अपने आधार में, श्रद्धा, विश्वास और भक्ति की अपेक्षा प्रबलता से सिद्ध होती है यह साधना। यदि वैशाख, श्रावण और कार्तिक माह के किसी भी दिन से प्रारम्भ कर आगे के तीस दिनों तक नियमित रूप से ही जाय तो श्रेष्ठतम माना गया है अन्यथा किसी भी माह की शुक्ल पञ्चमी से इसे प्रारम्भ किया जा सकता है। यह साधना लम्बी अवश्य है, किन्तु जटिल नहीं। महत्व केवल इस बात का है कि साधना के इस पूरे एक माह में श्रद्धा पूर्वक सरलता और ब्रह्मचर्य से जीवन-यापन करें और दूसरे इस समय फलाहार अथवा दुग्धाहार लें, भूमि शयन करें और तामसिक विचारों से सर्वथा परे रहें। इसके अतिरिक्त कोई बंधन नहीं है। साधक अपने नित्य प्रति के जीवन को यथावत जी सकता है, व्यवसाय का कार्य कर सकता है, नौकरी पर जा सकता है, यात्राएं कर सकता है तथा भौतिक जीवन के लिए जो कुछ भी आवश्यक है, उसे करने में कोई दोष नहीं।

### साधना विधान

मंगल, शनि एवं रविवार को छोड़कर जिस दिन भी यह साधना प्रारम्भ करें उस दिन साधना कक्ष स्वच्छ और साफ हो, श्वेत आसन अथवा लाल रंग का ऊनी आसन बिछाएं और एक पात्र में गणपति विश्राम रख उनका पूजन केशर, अक्षत, पुष्प से करें। स्वस्ति पाठ करें -

**ॐ श्री गणपतये नमः ऋद्धि सिद्धि सहितं  
मम गृहे महागणपतिं आवाहनं समर्पयामि  
सुमुखश्चैक दन्तश्च कपिलो जजकर्णक,  
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः।  
धूमके तुर्गणाद्यक्षरे भालचन्द्रो जजननः,  
द्वादशैतानि नामानि च यठेच्छ्रणुयादपि।  
विद्यारम्भे विवाहे च प्रदेशे निर्जमे तथा,  
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते।**

इसके उपरान्त भूमि पर त्रिकोण बना कर (जो आप केशर अथवा अष्टगंध से बना सकते हैं) इसके ऊपर श्वेत आसन बिछायें और निम्न मंत्र पढ़ते हुए आन्तरिक और बाह्य शुद्धि करें-

**ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वस्थां गतोऽपि वा,  
यःस्मरेत पुण्डरीकाद्यं सः बह्याभ्यासतः शुचिः।**

तत्पश्चात् मुख शुद्धि -

ॐ अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा, ॐ  
अमृतापिधानामसि स्वाहा, ॐ सत्यं वशः श्रीमद्वि  
श्रीश्रवतां स्वाहा।

(पढ़ते हुए तीन बार जल मुंह में डालें)

पृथ्वी पर हाथ रखकर आसन शोधन करें -

ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोकां देवि त्वं विष्णुना धृता।  
त्वं च धारय मां देवि यवित्रं कुरु वासनम्॥

अब मूल साधना में प्रवृत्त हों। भगवती महालक्ष्मी का 'कनक वर्षणी यंत्र' स्थापित करें और प्रार्थना करें कि मैं भगवती महालक्ष्मी के ही शीघ्र फलदायक स्वरूप कनक प्रभा की साधना में प्रवृत्त हो रहा हूं, भगवती महालक्ष्मी मुझे यथा - शीघ्र सफलता प्रदान करें और ऐसा कहकर किसी श्रेष्ठ धातु के पात्र में (श्रेष्ठ धातु के अभाव में पुष्प पंखुड़ियों पर) पारद शंख स्थापित करें।

पारद एक ऐसी चैतन्य धातु है, जिससे निर्मित कोई भी विग्रह अपने आप में श्री युक्त होता ही है और इसी विशेषता से कनकप्रभा की साधना 'लघु पारद शंख' पर निश्चित रूप से फलदायी होती है क्योंकि पारद और स्वर्ण निर्माण का घनिष्ठ सम्बन्ध होता है।

इस दुर्लभ पारद शंख पर अष्ट गंध से तिलक का निर्माण करें, गुलाब की पंखुड़ियां चढ़ाएं और एक बड़ा दीपक शुद्ध धी का जलाकर भगवती लक्ष्मी व उनके साकार प्रतीक विग्रह रूप में पारद शंख का संयुक्त पूजन करें और प्रार्थना करें -

'देवी कनक प्रभा इसी पारद की भाँति बद्ध होकर अपने सहोदर तुल्य इस पारद शंख के रूप में मेरे घर में स्थायी निवास करें।'

भगवती महालक्ष्मी एवं शंख का पूजन सुगंध, कुंकुम, अक्षत, पुष्प, पंचामृत, दुध निर्मित नैवेद्य, ताम्बूल एवं पुंगी फल (सुपारी) से करें। दक्षिणा रूप में इलाइची एवं लौंग समर्पित करें। ऐश्वर्य माला से निम्न मंत्र की 11 माला मंत्र जप सम्पन्न करें और मंत्र जप की समाप्ति पर एक बार पुनः कपूर आरती से महालक्ष्मी की आरती सम्पन्न कर 'क्षमस्व परमेश्वरी' कहकर स्थान छोड़ें। इस साधनां में प्रयुक्त होने वाला मंत्र है -

मंत्र

॥ॐ हौं हैं हर्णि कनक प्रभा मम गृहे आगच्छ  
स्थापय फट॥

इस साधना में यह आवश्यक नहीं कि आपने प्रथम दिन

जिस समय साधना की, उसी समय से नित्य प्रति साधना प्रारम्भ करें लेकिन एक क्रम निश्चित कर सकें तो लाभदायक रहेगा। यदि इस तीस दिनों में घर से बाहर जाना पड़े तब भी इस साधना को निरंतर कर सकते हैं। पारद निर्मित विग्रह को यात्रा में साथ ले जाना शास्त्र सम्मत माना गया है। स्त्रियां रजस्वला काल में साधना स्थगित कर शेष दिनों में साधना पूर्ण कर सकती हैं, इसे व्यवधान नहीं माना जाता।

साधना आरम्भ करने के तीन-चार दिन के बाद से साधक को मधुर सुगंध साधना कक्ष में पदचाप, पायलों अथवा करघनी की ध्वनि, वस्त्रों की सरसराहट, कर्पूर की सुगंध, शीतलता जैसे विविध अनुभव भी प्रारम्भ हो जाते हैं। यदि ऐसे अनुभव प्रारम्भ हों तो साधक और सजग हो जाएं क्योंकि कनक प्रभा साधना के मध्य में ही उपस्थित होती है।

कनक प्रभा का साधना के मध्य में उपस्थित होना साधना की पूर्णता मान लेना उचित नहीं क्योंकि यह एक निश्चित क्रम है तथा तीस दिन का साधनामय जीवन व्यतीत करना आवश्यक है।

प्रतिदिन इस साधना की समाप्ति पर स्स्वर आद्यशंकराचार्च प्रणीत 'कनक-धारा स्तोत्र' का पाठ करना चाहिए, क्योंकि कनक धारा और कनक प्रभा एक ही देवी के दो विभिन्न ढंग से वर्णन हैं।

घुड़दौड़ में मिलने वाली सफलता हो या लॉटरी में मिलने वाला नम्बर, कौन व्यक्ति हमारे जीवन में लाभदायक होगा, किस सोत्र से हमें धन मिलेगा, किस व्यापार से रातों-रात लाभ हो जायेगा, ऐसी अनेक स्थितियां व्यक्ति को कनक प्रभा देवी के माध्यम से स्पष्ट होने लगती हैं, आवश्यकता है तो साधक के सर्तक और चौकन्ना रहने की क्योंकि साधना के पूर्ण होने से पूर्व भी सफलताएं मिलती देखी गयी हैं।

यह विशिष्ट साधना सामग्री तो उपहार स्वरूप ही है साथ ही इसके माध्यम से गुरु कार्य के रूप में आप अपने दो मित्रों को पत्रिका सदस्य बनाएं तथा कार्ड क्रं 6 पर अपने दोनों मित्रों का पता लिखकर भेजें। कार्ड मिलने पर 570/- की वी.पी.पी. द्वारा आपको इस साधना की मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठायुक्त सामग्री भेज देंगे तथा दोनों मित्रों को एक वर्ष तक नियमित रूप से पत्रिका भेजी जाएगी।

इस योजना का उद्देश्य आप द्वारा गुरु परिवार में दो नये सदस्यों को जोड़ना है। यदि आपके लिये यह संभव नहीं है तो आप की 570/- न्यौछावर राशि भेज कर साधना पैकेट प्राप्त कर सकते हैं।

## कनकधारा स्तोत्र

अंगं हरे पुलकभूषणाश्रवन्ती, भृंगांगनैव मुकुलाभरणं तमालम् ।  
 अंगीकृताखिलविभूतिरपांग लीला, मांगल्यदास्तु मम मंगलदेवतायाः ॥१॥  
 मुण्डा मुहुर्विदधती वदनै मुरारे:, प्रेमत्रापाप्रणिहितानि जतागतानि ।  
 माला दशोर्मधुकरीय महोत्पले या, सा में श्रियं दिशतु सागरसम्बवायाः ॥२॥  
 विश्वामरेन्द्रपदविभ्रमदानदक्ष, मानन्दहेतुराधिकं मधुविद्विषो यि ।  
 ईषद्विषीदतु मयि क्षणमीक्षणार्द्ध, मिन्दीवरोदरसहोदरमिन्दिरायाः ॥३॥  
 आमीलिताक्षमधिगम्य मुदा मुकुन्द, मानन्दकन्दमनिमेषमनंगतन्त्रम् ।  
 आकेकरस्थितकनीनिकपक्षम लेत्रं, भूत्यै भवेन्मम भुजंगशयांगनामयाः ॥४॥  
 बाह्यन्तरे मधुजितः श्रितकौस्तुभे या, हारावलीव हरिनीलमयी विभाति ।  
 कामप्रदा भगवतोपि कटाक्ष माला, कल्याणमावहतु मे कमलालयायाः ॥५॥  
 कालाम्बुदालितलिसोरसि कैटभारे, धर्माधरे सफुरति या तु तडंग दन्यै ।  
 मातुः समस्तजगता महनीयमूर्ति, र्भद्राणि मे दिशतु भार्यवनन्दनायाः ॥६॥  
 प्राप्तं प्रदं प्रथमतः किल यत्प्रभावान, मांगल्यभाजि मधुमाथिनी मन्मथेन ।  
 मव्याप्तेत्तदिह मन्थम मीक्षणार्द्ध, मन्दालसं च मकरालयकन्यकायाः ॥७॥  
 दद्याद् दयानुपवनो द्रविणाम्बुधारा, मस्मिन्न वि किंचनविहंगशिशौ विषाणे ।  
 दुष्कर्मधर्ममपनीय चिराय दूरं, नारायणप्रणविनीनयनाम्बुद्वाहः ॥८॥  
 इष्टा विशिष्टमतयोपि यथा दयार्द्ध, दृष्टया त्रिविष्टपदं सुलभं लभंते ।  
 दृष्टिः प्रहृष्टकमलोदरदीप्तिरिष्टां, पुष्टि कृषीष्ट मम पुष्करविष्टरायाः ॥९॥  
 जीर्तेवतेति गरुडध्वजभामिनीति, शाकभरीति शशिशेखवल्लभेति ।  
 सृष्टिस्थितिप्रलयकेलिषु संस्थितायै, तस्यै नमस्त्रिभुवनैकगुरुस्तस्तुत्यै ॥१०॥  
 श्रुत्यै नमोस्तु शुभकर्ममल्पसूत्यै, रत्यै नमोस्तु रमणीयगुणार्णवायै ।  
 शक्त्यै नमोस्तु शतपत्रनिकेतनायै, पुष्ट्यै नमोस्तु पुरुषोत्तवल्लभायै ॥११॥  
 नमोस्तु नालीकनिभाङ्गायै, नमोस्तु दुर्ज्ञोदधिजन्म भूत्यै ।  
 नमोस्तु सोमामृतसोदरायै, नमोस्तु नारायणवल्लभायै ॥१२॥  
 सम्पत्करणि सकलेन्द्रियनन्दनानि, साम्राज्यदान विभवानि सरोरुहाक्षि ।  
 त्वद्वद्वन्द्वनानि दुरिताहरणोद्यतानि, मामेव मातरनिशं कलयन्तु नान्यम् ॥१३॥  
 यत्कटाक्षसमुपासनाविधिः, सेवकस्य सकलार्थं सम्पदः ।  
 संतनोति वचनांगमान, सैस्त्वां मुरारिहदयेश्वरीभजे ॥१४॥  
 सरसिजनिलये सरोजहस्ते, ध्वलमांशुकर्णन्धमाल्य शोभे ।  
 भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे, त्रिभुवनभूतिकरि प्रसीद मह्यम् ॥१५॥  
 दिन्धस्तिभिः कनककुम्भमुखवसृष्ट, स्वर्वाहिनीतमलचारुजलप्लुतांगम् ।  
 प्रातर्नमामि जगतां जननीमशेष, लोकधिनाथगृहिणीममृताब्धिपुत्रीम् ॥१६॥  
 कमले कमलाक्षवल्लभे त्वं, करुणापूरतरंगितैरपाद्यै ।  
 अवलोकय मामकिंचनानां, प्रथमं पात्रमकृत्रिमं दयायाः ॥१७॥  
 स्तुवन्ति ये स्तुतिभिरमूभिरनवहं, त्रयोमयीं त्रिभुवेनमातरं रमाम् ।  
 शुणादिका गुरुतरभाण्यभामिनी, भवन्ति ते भुवि बुधभाविताशयाः ॥१८॥

## कनकधारा स्तोत्र (भावार्थ)

जैसे भगवान् कुसुमों से अलंकृत तमाल-तरु का आश्रय लेती है, उसी प्रकार जो श्रीहरि के रोमांच से सुशोभित श्री अंगों पर निरन्तर पड़ता रहता है तथा जिसमें सम्पूर्ण ऐश्वर्य का निवास है, सम्पूर्ण मंगलों की अधिष्ठात्री देवी भगवती महालक्ष्मी का वह कटाक्ष मेरे लिए मंगल-दायी हो ॥१॥

जैसे भगवान् कमल-दल पर मंडराती रहती है, उसी प्रकार जो मृत्युंजय श्रीहरि के मुख्खाविन्द की ओर बराबर प्रेमपूर्वक जाती और लज्जा के कारण लौट आती है, समुद्रकन्या लक्ष्मी की वह मनोहर मुग्ध दण्डिमाला मुझे धन-सम्पत्ति प्रदान करे ॥२॥

जो सम्पूर्ण देवताओं के अधिपति इन्द्र के पद का वैभव-विलास देने में समर्थ है, मधुरुन्ता श्रीहरि को भी अधिकाधिक आनन्द प्रदान करने वाली है तथा जो नील-कमल के भीतर भगव के समान मनोहर जान पड़ती है, उन लक्ष्मी जी के अद्यत्तुले नेत्रों की दण्डि क्षण भर के लिए मुझ पर थोड़ी-सी अवश्य पड़े ॥३॥

शेषशायी भगवान् विष्णु की धर्मपत्नी श्रीलक्ष्मी जी का नेत्र हमें ऐश्वर्य प्रदान करने वाला हो, जिसकी पुतली तथा बरौनियां अनंग के वशीभूत (प्रेमपरवश) हो, अद्यत्तुले किन्तु साथ ही निर्निमेष नयनों से देखने वाले आनन्द कंद श्रीमुकुन्द को अपने निकट पाकर कुछ तिरछी हो जाती है ॥४॥

जो भगवान् मधुसूदन के कौस्तुभमणि-मणिडित वक्ष स्थल में इन्द्रनील-मयी हारावली-सी सुशोभित होती है तथा उनके भी मन में काम (प्रेम) का संचार करने वाली है, वह कमल-कुंजनवासिनी कमला की कटाक्ष माला मेरा कल्याण करे ॥५॥

जैसे मेघों की घटा में बिजली चमकती है, उसी प्रकार जो कैटभशप्रु श्रीविष्णु के काली मेघमाला के समान श्यामसुन्दर वक्षःस्थल पर प्रकाशित होती है, जिन्होंने अपने अविभाव से भृगुवंश को आनन्दित किया है तथा जो समस्त लोकों की जननी हैं, उन भगवती लक्ष्मी की पूजनीया मूर्ति मुझे कल्याण प्रदान करें ॥६॥

समुद्र-कन्या कमला की वह मन्द, अलस, मन्थर और अर्धोन्मीलित दण्डि, जिसके प्रभाव से कामदेव ने मंगलमय भगवान् मधुसूदन के हृदय में प्रथम बार स्थान प्राप्त किया था, यहां मुझे पर पड़े ॥७॥

भगवान् नारायण की प्रेयसी लक्ष्मी का नेत्र रूपी मेघ दयारूपी अनुकूल पवन से प्रेरित हो दुष्कर्म (द्यानागम-विरोधी अशुभ प्रारब्ध) रूपी धाम को विरकाल के लिए दूर हटाकर विषाद रूपी धर्मजन्यताप से पीड़ित मुझे दीनरूपी चातक पर धनरूपी जल धारा की दण्डि करे ॥८॥

विशिष्ट बुद्धि वाले मनुष्य जिनके प्रीति पात्र होकर जिस दया दण्डि के प्रभाव से स्वर्ण पद को सहज ही प्राप्त कर लेते हैं, पन्नासना पन्ना की वह विकसित कमल-गर्भ के समान कान्तिमयी दण्डि मुझे मनोवाञ्छित पुष्टि प्रदान करे ॥९॥

जो सृष्टि-लीला के समय वानदेवता (ब्रह्मशक्ति) के रूप में विराजमान होती हैं तथा प्रलय-लीला के काल में शाकमभरी (भगवती दुर्गा) अथवा चन्द्रशेखरवल्लभा पार्वती (रुद्रशक्ति) के रूप में अवस्थित होती हैं, त्रिभुवन के एकमात्र पिता भगवान् नारायण की उन नित्ययौवना प्रेयसी श्रीलक्ष्मी जी को नमस्कार ॥१०॥

मातः । शुभ कर्मों का फल देने वाली श्रुति के रूप में आपको प्रणाम है । रमणीय गुणों की सिन्धु रूपा रति के रूप में आपको नमस्कार है । कमल वन में निवास करने वाली शक्ति स्वरूपा लक्ष्मी को नमस्कार है तथा पुष्टि रूपा पुरुषोत्तमप्रिया को नमस्कार है ॥१९१॥

कमल वदना कमला को नमस्कार है और सिन्धु संभूता श्री देवी को नमस्कार है, चन्द्रमा और सूर्या की सगी बहन को नमस्कार है । भगवान नारायण की वल्लभा को नमस्कार है ॥१९२॥

कमल सदृश्य नेत्रों वाली माननीया माँ! आपके चरणों में किए गए प्रणाम सम्पत्ति प्रदान करने वाले, सम्पूर्ण इन्द्रियों को आनन्द देने वाले, साम्राज्य देने में समर्थ और सारे पार्षों को हर लेने के लिए सर्वथा उद्यत हैं, वे सदा मुझे ही अवलम्बन दें (मुझे ही आपकी चरण वन्दना का शुभ अवसर सदा प्राप्त होता रहे) ॥१९३॥

जिनके कृपाकटाक्ष के लिए की गई उपासना उपासक के लिए सम्पूर्ण मनोरथों और सम्पत्तियों का विस्तार करती है, श्रीहरि की हृदयेश्वरी उन्हीं लक्ष्मी देवी का मैं मन, वाणी और शरीर से भजन करता हूँ ॥१९४॥

भगवति हरिण्यि! तुम कमल वन में निवास करने वाली हो, तुम्हारे हाथों में नील कमल सुशोभित है । तुम अत्यन्त उज्जवल वस्त्र, गन्ध और माला आदि से शोभित हो । तुम्हारी ज्ञानकी बड़ी मनोरम है । प्रिभुवन का ऐश्वर्य प्रदान करने वाली देवि! मुझ पर प्रसन्न हो जाओ ॥१९५॥

दिङ्गजों द्वारा सुवर्ण-कलश के मुख से गिराए गए आकाश गंगा ले निर्मल एवं मनोहर जल से जिनके श्री अंगों का अभिषेक सम्पादित होता है, सम्पूर्ण लोकों के अदीश्वर भगवान विष्णु की शृंगारी और क्षीरसागर की पुत्री उन जगजगनी लक्ष्मी को मैं प्रातः काल प्रणाम करता हूँ ॥१९६॥

कमल-नयन के शब्द की कमनीय कामिनी कमलो! मैं अंकित चन (दीन-हीन) मुनाफ्यों का अग्रगण्य हूँ, अतएव तुम्हारी कृपा का स्वाभाविक पात्र हूँ । तुम उमड़ती हुई करुणा की बाढ़ की तरह तरंगों के समान कटाक्षों द्वारा मेरी तरफ देखो ॥१९७॥

जो लोग इन स्तुतियों द्वारा प्रतिदिन वेदग्रन्थ-स्वरूपा प्रिभुवन-जननी भगवती लक्ष्मी की स्तुति करते हैं, वे इस भूतल पर महान गुणवान और अत्यन्त सौभाग्यशाली होते हैं तथा विद्वान पुरुष भी उनके मनोभाव को जानने के लिए उत्सुक रहते हैं ॥१९८॥

❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖

आदि गुरु शंकराचार्य ने 'श्री विद्या रहस्य' में लिखा है कि 'कनकधारा यंत्र' लक्ष्मी का ही साकार रूप है और यह यंत्र ताम्रपत्र पर अंकित हो, रजत पर अंकित हो अथवा स्वर्ण धातु पर, मूल बात यह है कि यह मंत्र सिद्ध एवम् प्राण प्रतिष्ठायुक्त होना चाहिए और जहां भगवती महा लक्ष्मी का साक्षात् स्वरूप 'कनकधारा यंत्र' स्थापित होता है वहीं से जीवन में अनुकूलता एवं मधुरता का प्रारम्भ हो जाता है । इसका चैतन्य स्वरूप साधक को अपार आनन्द देने वाला है जिससे वह द्वन्द्व रहित होकर जीवन में निरन्तर प्रगति पथ पर अग्रसर हो सकता है ।

जहां मंत्र द्वारा साधना एवं स्तोत्र पाठ द्वारा आराधना का सुखद संगम होता है, वहीं लक्ष्मी का प्रादुर्भाव होता है । जैसा कि इस स्तोत्र से स्पष्ट है कि इस में भगवती लक्ष्मी की आराधना है । अतः इस स्तोत्र का पाठ कनकधारा यंत्र स्थापित कर यदि उसके समक्ष किया जाय तो यह स्तोत्र मात्र स्तोत्र न रह कर साकार रूप धारण कर लेता है, ऐसा कुछ विशिष्ट साधकों ने अपने अनुभव से ज्ञात किया है, इसमें कनकधारा यंत्र स्थापना का विशेष महत्व है, और उसके सामने इस स्तोत्र का पाठ करना ज्यादा फलदायक माना गया है ।



आदिशुरु शंकराचार्य के सम्बन्ध में हजारों कथाएँ हैं उनमें से कुछ कथाएँ उनके शिष्यों, भक्तों के अनुभव के आधार पर रचित की गईं। इन सब कथाओं के सार में एक बात पूर्ण रूप से स्पष्ट होती है कि शंकराचार्य ने अपनी जीवन यात्रा में योगियों, वतियों और संन्यासीयों से ज्ञान घ्रहण किया। अँकारेश्वर में अपने गुरु गोविन्दपादाचार्य से दीक्षा प्राप्त कर उनके आशीर्वाद से आगे की यात्रा को निकल पड़े। धन के नाम शिक्षा का खाली झोला सा लेकिन दिमाग साधनाओं, मंत्र-तंत्र से भर्पूर। उन्होंने अपने जीवन यात्रा में एक गरीब ब्राह्मणी के घर साधना प्रयोग कर धन प्रदान (जिसे कालान्तर में धन वर्षा कहा गया) किया और आगे की यात्रा में निकल पड़े थे। प्रस्तुत है -

## शंकराचार्य विचरित

# लक्ष्मीतजा साधना

## उत्तम साधना लक्ष्मी प्राप्ति की

इसके मूल में अनेक रहस्य उद्घाटित होते हैं, सम्भवत: उन सबका विवेचन करना तो सम्भव नहीं है, परन्तु मूल विषय है, कि क्या स्तुति के माध्यम से धनवर्षा सम्भव है या शंकराचार्य ने किस मार्ग को अपनाया, कि वे लक्ष्मी को आबद्ध कर इच्छित स्थान पर धनवर्षा कराने में सक्षम हो सके?

इस प्रश्न का उत्तर यही है, कि मात्र स्तुति के माध्यम से लक्ष्मी आबद्ध करना सम्भव नहीं है, यदि स्तुति के माध्यम से ही लक्ष्मी आबद्ध की जा सकती, तो प्रत्येक गृहस्थ व्यक्ति के घर तथा वह व्यक्ति, जो नित्य अपने व्यवसाय स्थल पर जाकर लक्ष्मी की स्तुति करता है, उनके घरों में अब तक तो धन का ढेर लग जाना चाहिए था!

...परन्तु ऐसा प्रायः सम्भव नहीं होता, कोई भी व्यक्ति, जो स्तुति करता है, उसके घर धन की वर्षा नहीं होती, उनके घरों में धन का ढेर नहीं लगता; वे अपने पूरे जीवन में लक्ष्मी की स्तुति तो करते हैं, फिर भी कर्जदार ही बने रहते हैं, धन का उन्हें कोई अजस्र स्रोत नहीं मिलता, अतः स्पष्टतः शंकराचार्य ने अवश्य ही कोई ऐसा प्रयोग सम्पन्न किया होगा, जिसके माध्यम से वे लक्ष्मी को आबद्ध कर सकने में समर्थ हुए।

'तंत्र' एकमात्र ऐसा माध्यम है, जिसमें अनेक ऐसी विधाएं, अनेक ऐसे प्रयोग हैं, जिनका ज्ञान यदि व्यक्ति प्राप्त कर लेता

है तो उसके माध्यम से वह किसी भी देवी-देवता को आबद्ध करने में समर्थ हो सकता है।

शंकराचार्य तो तंत्र के उच्कोटि के ज्ञाता थे, उन्होंने ही बौद्ध धर्म को सम्पूर्ण भारतवर्ष से विस्थापित कर पुनः हिन्दुत्व की स्थापना की। तंत्र ही वह सबल माध्यम था, जिसके द्वारा शंकराचार्य कम उम्र में ही अपने लक्ष्य की पूर्णता प्राप्त कर सके। वास्तव में देखा जाय, तो शंकराचार्य का जीवन अनेक रहस्यों से ओत-प्रोत है, जिसकी विवेचना करना, अनेक गोपनीय रहस्यों को उजागर करना ही होगा।

शंकराचार्य के जीवन का गोपनीय तथ्य ही है, कि संन्यासी होते हुए भी, संन्यास धर्म का पालन करते हुए भी किसी के समक्ष याचना नहीं की; वरन् स्वयं तो समर्थ हुए ही, साथ ही सब कुछ प्रदान करने में सक्षम भी हुए।

जब शंकराचार्य ने देखा, कि समाज की व्यवस्था में असन्तुलन आ जाने के कारण उच्कोटि की आध्यात्मिक विभूतियां भी भिक्षा मांग कर जीवन यापन करने पर विश्वास करने लगी हैं एवं साधनाओं का महत्व न्यूनतर होता जा रहा है, बड़े-बड़े कृषि-मुनि कर्मक्षेत्र एवं साधनापक्ष को छोड़कर भिक्षावृत्ति में विश्वास करने लगे हैं, तब शंकराचार्य को इन सभी परिस्थितियों से बहुत झलनि हुई। वे चाहते थे, कि भारतवर्ष का कोई भी व्यक्ति भूखा, गरीब, लाचार, बीमार

यदि आप साधना करना चाहते हैं, तो सम्बन्धित सामग्री कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं अथवा आप जोधपुर कार्यालय, फोन : 0291-2432209 या टेलीफ़ोन : 0291-2432010 पर अपना सामग्री आदेश लिखवा दें, हम आपको वी.पी.से सामग्री भेज देंगे, धनराशि अप्रिम भेजने की जारीत नहीं है।

विधि-  
ग्राम प्राप्त  
पत्रिका  
व्यक्तिगति  
वन की  
योजना  
नेयमित  
प्रात्विक  
वार से  
दिकर  
लें उस  
त कर,  
मलगड़े  
क्षत से  
त तथा  
;

डाक व्यय पत्र प्राप्त  
करने वाले द्वारा  
दिया जायेगा।

**व्यापारी जवाबी पोस्टकार्ड**

परमिट नं. J.D. 8  
जोधपुर प्रधान डाकघर  
जोधपुर - 342001 (राजस्थान)

भारत में डाक  
टिकट लगाने  
की आवश्यकता  
नहीं है।

सेवा में

**मंत्र-तंत्र-चंत्र विज्ञान**

डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी,  
जोधपुर - 342001 (राजस्थान)

डाक व्यय पत्र प्राप्त  
करने वाले द्वारा  
दिया जायेगा।

**व्यापारी जवाबी पोस्टकार्ड**

परमिट नं. J.D. 8  
जोधपुर प्रधान डाकघर  
जोधपुर - 342001 (राजस्थान)

भारत में डाक  
टिकट लगाने  
की आवश्यकता  
नहीं है।

सेवा में

**मंत्र-तंत्र-चंत्र विज्ञान**

डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी,  
जोधपुर - 342001 (राजस्थान)

डाक व्यय पत्र प्राप्त  
करने वाले द्वारा  
दिया जायेगा।

**व्यापारी जवाबी पोस्टकार्ड**

परमिट नं. J.D. 8  
जोधपुर प्रधान डाकघर  
जोधपुर - 342001 (राजस्थान)

भारत में डाक  
टिकट लगाने  
की आवश्यकता  
नहीं है।

सेवा में

**मंत्र-तंत्र-चंत्र विज्ञान**

डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी,  
जोधपुर - 342001 (राजस्थान)

इसके  
उन सब  
विषय हैं:  
शंकराच  
आबद्ध  
सके?

इस प्र  
लक्ष्मी उ  
ही लक्ष्म  
घर तथा  
जाकर ल  
धन का  
...पर  
स्तुति क  
में धन क  
स्तुति ते  
उन्हें कोइ  
ने अवश्य  
माध्यम  
'तंत्र'

अनेक ऐ

तथा ज्ञान के अभाव में न जिये; जिये तो पौरुषता का जीवन जिये, श्रेष्ठता का जीवन जिये।

...और तब उन्होंने अथक परिश्रम एवं खोजबीन के पश्चात् अत्यन्त दुर्लभ एवं गोपनीय प्रयोगों का अन्वेषण किया। इन प्रयोगों को स्वयं सिद्ध कर दिखा दिया, कि एक सन्न्यासी भी सभी दृष्टियों से पूर्णता युक्त जीवन जी सकता है, एक गरीब से गरीब व्यक्ति भी साधना के माध्यम से आर्थिक सम्पन्नता प्राप्त कर सकता है... और यह सिद्ध किया एक ब्राह्मणी के घर में इस प्रयोग के माध्यम से धन वर्षा करवा कर... जिससे उस समय के लोग तो अचम्भित हुए ही और निश्चित रूप से आज भी इस प्रयोग को सम्पन्न कर लोग अचम्भित हुए बिना नहीं रह सकेंगे।

व्यक्ति के जीवन में इतनी अधिक विषमताएं उत्पन्न हो चुकी हैं, कि उसे समाज में प्रतिष्ठित व सम्मानित होने के लिए धन की आवश्यकता पड़ती है, बिना धन के तो वह समाज में अपनी प्रतिष्ठा व सम्मान स्थापित कर ही नहीं सकता।

आज छोटी-छोटी वस्तु की भी यदि आवश्यकता होती है, तो बिना धन के हम उसे खरीद नहीं सकते, ललचायी नजरों से दूसरों की ओर ताकेंगे या किसी अन्य माध्यम से उसे प्राप्त करने का प्रयास करेंगे, क्योंकि वस्तु की आवश्यकता हमें यह सब करने पर मजबूर करेगी, परन्तु यह नैतिकता के और समाज के नियमों के विपरीत है।

ऐसी दशा में यह आवश्यक हो गया है, कि हम साधना के महत्व को समझें। हम सभी अपने जीवन में साधनाओं को स्थान दें और अपनी हर आवश्यकता की पूर्ति का हेतु साधनाओं को बनायें।

शंकराचार्य कृत विविध प्रयोगों में एक प्रयोग 'लक्ष्म्योत्तमा प्रयोग' भी है, जो धन वर्षा कराने में सक्षम है। यह अपने आपमें अद्वितीय प्रयोग है। यह साधना अत्यन्त सरल, सटीक तथा शीघ्र प्रभाव देने वाली कही गई है। यदि यह प्रयोग पूर्ण

व्या मात्र स्तुति के माध्यम से लक्ष्मी को आबद्ध करना सम्भव है? नहीं, यदि स्तुति के माध्यम से ही लक्ष्मी आबद्ध की जा सकती, तो प्रत्येक गृहस्थ व्यक्ति के घर तथा वह व्यक्ति जो नित्य अपने व्यवसाय स्थल पर जाकर लक्ष्मी की स्तुति करता है, इनके घरों में अब तक तो धन का ढेर लग जाना चाहिए था।

श्रद्धा, निष्ठा, विश्वास एवं पूर्ण प्रामाणिक सामग्री तथा विधि-विधाने के साथ किया जाय, तो अवश्य ही सफलता प्राप्त होती है।

यह प्रयोग तो अब तक गोपनीय ही रहा है, किन्तु पत्रिका के उद्देश्य को ध्यान में रख कर साधकों के समक्ष उच्चकोटि की इस साधना को पत्रिका के इन पन्नों पर जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु प्रस्तुत कर रहे हैं -

### साधना विधान

- ❖ इस साधना में आवश्यक सामग्री है - 'लक्ष्म्योत्तमा यंत्र' तथा 'कमलगड्डे की माला'।
- ❖ यह रात्रिकालीन साधना है और 21 दिनों तक नियमित रूप से की जाती है। साधना काल में एक समय सात्विक भोजन करें व ब्रह्मचर्य का पालन करें।
- ❖ इस साधना को आप पूर्णिमा से या किसी भी रविवार से प्रारम्भ कर सकते हैं।
- ❖ साधक सफेद रंग की धोती पहनें तथा स्नान आदि कर रात्रि के 10 बजे के बाद साधना प्रारम्भ करें।
- ❖ लकड़ी के बाजोट पर लाल रंग का वस्त्र बिछा लें उस पर एक ताप्र पात्र में केसर से 'श्री' बीज अंकित कर, उस पर यंत्र स्थापित कर यंत्र का पूजन करें।
- ❖ बाजोट पर दाहिनी ओर चावलों की ढेरी बनाकर कमलगड्डे की माला को स्थापित कर पुष्प, कुंकुम तथा अक्षत से संक्षिप्त पूजन करें।
- ❖ धी का दीपक तथा धूप लगाकर उनका अक्षत तथा कुंकुम से पूजन करें।
- ❖ देवी का ध्यान करें -

अरुणकमलसंस्था तदजः पुंजवर्णा,

करकमल धृतेष्टामितिमम्बुजता।

मणिमुकुट विचित्रालंकृता कल्पजालै;

सकल भुवनमाता सततं श्रीः श्रियै नमः ॥

- ❖ कमलगड्डे की माला से नित्य 21 माला निम्न मंत्र का जप करें -

### मंत्र

॥३५० श्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै श्रीं श्रीं ३५० नमः ॥

- ❖ साधना समाप्त होने पर अगले दिन यंत्र व माला को बाजोट पर बिछे लाल रंग के कपड़े में बांध कर नदी में प्रवाहित कर दें।

आपके जीवन में भाग्योदय तभी संभव है।

जब स्थापित होगा आपके घर

# पारदृशी द्युष्मा

जिसका विशेष पूजन सीधार्य खंखली की संज्ञेन्द्रि किया जाता है।  
और उसी के साथ आगमन होता है जीवन में धन, यश और कीर्ति का

जीवन के कुल १४ पक्ष हैं जिनमें धन प्राप्ति, स्वास्थ्य, पारिवारिक सुख, शत्रु बाधा निवारण, राज्य सम्मान, विदेश यात्रा योग, पुत्र सुख, इत्यादि सम्मिलित किये और यह निष्कर्ष निकला कि जीवन में इन चौदह स्थितियों का प्राप्त होना ही जीवन की पूर्णता है, जिसे उन्होंने भाग्योदय के नाम से वर्णित किया।

## जीवन की यात्रा में कर्तव्य

जीवन में कर्तव्य आवश्यक हो सकते हैं लेकिन जिस प्रकार से कर्तव्य आकर जीवन को ग्रसित कर लेते हैं वह न तो आवश्यक होता है न सहज। बचपन, बचपन के बाद किशोरावस्था, किशोरावस्था के बाद यौवन और इसी यौवन की प्रथम सीढ़ी पर पांव रखते ही कर्तव्यों का संसार भी प्रारंभ हो ही जाता है। स्वयं खुद के भरण-पोषण के साथ-साथ माता-पिता का दायित्व, छोटे भाई-बहिनों का परोक्ष अथवा अपरोक्ष रूप में दायित्व एवं स्वयं अपने परिवार की जिम्मेदारी... यही लगभग पचहत्तर प्रतिशत व्यक्तियों के जीवन की कथा है। शेष पच्चीस प्रतिशत में हो सकता है कि उन्हें पैतृक सम्पदा मिली हो, पारिवारिक दायित्व, किन्हीं अन्य सुविधाओं से या तो न हो अथवा सीमित हो, किन्तु फिर भी जीवन यात्रा तो शेष रह ही जाती है।

प्रायः 20-22 वर्ष की अवस्था आते-आते व्यक्ति को अपने भविष्य और भावी जीवन की चिन्ताएं आकर घेर लेती ही हैं। स्व व्यवसाय अथवा नौकरी, इनमें से किसका चुनाव किया जाए, इस बात का द्रंद्र प्रारंभ हो ही जाता है। कुछ सौभाग्यशाली होते हैं, जिन्हें पैतृक रूप से जीवन-यापन का

मार्ग मिल जाता है। घर का व्यवसाय या पैतृक सम्पत्ति मिल जाती है किन्तु सम्पत्ति प्राप्त होना ही जीवन की पूर्णता और

सफलता नहीं मानी जा सकती, इसके बाद भी विवाह, खुद का स्वास्थ्य, शत्रुबाधा-निवारण, घर की शांति जैसे बहुत से पक्ष शेष रह जाते हैं। दूसरी ओर सामान्य व्यक्ति को तो प्रारंभिक बिन्दु अर्थात् धन के उपार्जन से ही अपने जीवन का प्रारंभ करना पड़ता है।

## कैसे पूरी होंगी इच्छाएं?

जीवन के कर्तव्यों और इन आवश्यक प्राथमिक पक्षों को यदि क्षण भर के लिये परे रखकर देखें तो व्यक्ति की अपनी इच्छाओं और भावनाओं का भी संसार होता है और वह संसार ही उसके दैनिक जीवन में सरसता तथा गति का आधार होता है। लेकिन कब जीवन कर्तव्य भावना और वास्तविकताओं के बीच गड़-मड़ होकर बीत जाता है इसका पता ही नहीं चलता और जब तक पता लगता है, जीवन में कुछ ठहराव आता है तब तक खुद ही संतान बड़ी हो गई लगती है। पता लगता ही नहीं कि यौवन की उस पहली सीढ़ी के बाद कब 20-22 वर्ष बीत गये और जीवन के उस चरण तक आने के बाद मन में उमगें बची हों या न बची हों, जीवन में आशा शेष रह गयी हो या न रह गयी हो, कुछ कहा नहीं जा सकता।

एक प्रकार से देखा जाये तो प्रायः पच्चीस वर्ष की अवस्था में कंधों पर कर्तव्यों का जो जुआ लाकर रख दिया जाता है वह

फिर मृत्यु के साथ ही उतरता है और उतरता कहां है? व्यक्ति जाते-जाते अपनी संतानों के कंधे पर बोझ रखकर चला जाता है, इसका क्या कारण है, इसका क्या उपाय है, यह सोचने के अवसर जीवन में आते ही नहीं, क्योंकि धन कमा कर कुछ फुर्सत पायी तो पत्नी की बीमारी सामने आकर खड़ी हो गयी, पत्नी स्वस्थ हुई हो तो बेटा पढ़ाई में कमज़ोर पड़ने लगा, उससे निपटे तो कहीं धन फंस गया, ज्यौं-त्यौं उसको भी निबटाया तो खुद का स्वास्थ्य...

साधक पत्रिका में वर्णित साधनायें पढ़ते हैं, उनका लाभ भी प्राप्त करते हैं, किन्तु उनके मन में एक प्रश्न शेष रह जाता है कि जीवन पूरी तरह से क्यों नहीं संवर रहा है? उन्हें शंका होती है कि मैंने अमुक साधनाएं कीं, दीक्षाएं भी लीं किन्तु पूर्णरूप से लाभ नहीं मिल सका... और एक प्रकार से उनका सोचना गलत भी नहीं है क्योंकि प्रत्येक जागरुक साधक अपनी ओर से अपनी क्षमता भर प्रयास करता ही है, इसमें कमी केवल यह रह जाती है कि उनके जीवन में प्रत्येक साधना आवश्यक होते हुए भी फल अपने विशेष स्वरूप के अनुसार ही देती है, और जीवन की सफलताएं अनेक पक्षों से निर्मित होती हैं।

### जीवन की पूर्णता

जीवन के अनेक पक्ष और वे भी पूर्णता से, प्रत्येक साधना नहीं समेट सकती जबकि एक इच्छा के बाद दूसरी इच्छा का जन्म होता ही है, एक स्थिति में सफलता मिलने के बाद दूसरी स्थिति सामने आती ही है और इनकी पूर्ति करना भी कोई दोष युक्त कार्य नहीं है। जीवन के ऐसे चिन्तन को लेकर योगियों ने वे सूत्र ढूँढ़ने चाहे जो जीवन के आवश्यक सूत्र हैं और उनके साथ ही साथ कोई ऐसी साधना भी प्राप्त करनी चाही जो जीवन के सभी प्रारंभिक और आवश्यक तत्वों को अपने साथ समेटती हो। उन्होंने अपने निष्कर्षों में पाया, कि जीवन के ऐसे पक्ष कुल 14 हैं: जिनमें धन प्राप्ति, स्वास्थ्य, पारिवारिक सुख, शत्रु बाधा निवारण, राज्य सम्मान, विदेश यात्रा योग, पुत्र सुख, इत्यादि सम्मिलित किये और यह निष्कर्ष निकला कि जीवन में इन चौदह स्थितियों का प्राप्त होना ही जीवन की पूर्णता है, जिसे उन्होंने भाग्योदय के नाम से वर्णित किया, जिसके द्वारा जीवन की प्रारंभिक स्थितियों को सुधारने के साथ ही साथ जीवन की भावी योजनाओं की पूर्ति भी हो सके।

जीवन में साधनाएं तो महत्वपूर्ण होती ही हैं उनके साथ ही साथ वे दिवस भी महत्वपूर्ण होते हैं जिनका तादात्म्य साधना विशेष से किया जाए और जब ऐसा संभव हो सकता है अर्थात् प्राप्त करने हेतु भी भाग्योदय साधना सम्पन्न करना अति



उचित मुहूर्त का समन्वय उचित साधना से कर दिया जाता है तब तो विशेष कुछ घटित होता ही है। यों तो जीवन में कोई भी साधना कभी भी सम्पन्न की जा सकती है किन्तु जो साधनाएं प्रारंभ की आधार एवं एक प्रकार से अंकुरण की साधनाएं होती हैं उनके संदर्भ में मुहूर्त का महत्व सबसे अधिक होता है। ठीक यही बात उन साधनाओं के संदर्भ में भी कही जा सकती है। जो सम्पूर्णता की साधनाएं हैं। इन दो दशाओं में साधना विशेष का महत्व काल के किन्हीं विशेष क्षणों से पूर्णतः बद्ध होता ही है।

भाग्योदय साधना एक ऐसी ही विशिष्ट साधना है, जिसका सम्बन्ध निश्चित सिद्धि दिवस से किया गया है, जो इस वर्ष दिनांक 22 अक्टूबर को सौभाग्य पंचमी, लाभ पंचमी के रूप में आ रहा है। इसी दिन से हेमन्त ऋतु प्रारंभ हो रही है। सिद्धाश्रम पंचांग द्वारा प्रणीत यह मुहूर्त अत्यन्त उच्चकोटि का मुहूर्त है। ... और जहां सिद्ध योगी इस दिवसे का उपयोग किसी उच्चकोटि की साधना को सम्पन्न करने में करते हैं, वहीं गृहस्थ व्यक्ति इस दिन का उपयोग भाग्योदय साधना में कर सकते हैं। उच्चकोटि की साधनाओं में प्रवेश लेने से पूर्व,

आवश्यक माना गया है।

इस साधना की मूल शक्ति भगवती महालक्ष्मी है और जहाँ केवल महालक्ष्मी साधना सम्पन्न करने से साधक को धन, ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है वर्षी महालक्ष्मी को आधार बनाते हुए इस दिवस की भाग्योदय साधना सम्पन्न करने से उसे सर्वविधि सौभाग्य प्राप्त होता है। एक प्रकार से महालक्ष्मी अपने एक हजार आठ वर्णित स्वरूपों के साथ पूर्ण कृपालु हो जाती है और विशेष यंत्रों के माध्यम से विशेष प्रक्रिया के द्वारा उनको चिरस्थायित्व दिया जा सकता है, जिससे साधक के जीवन में कदम-कदम पर बाधाएं और अड़चनें न आएं।

साधक को चाहिए कि इस दिवस की साधना सम्पन्न करने के लिए समय से बहुत पहले ही सचेत होकर इस साधना की सामग्री को प्राप्त कर लें, क्योंकि यह अवसर ऐसा विशिष्ट अवसर है जो वर्ष में एक बार ही घटित होता है। अन्य साधनाएं तो किन्हीं भी शुभ दिवसों या नक्षत्रों में की जा सकती हैं किन्तु भाग्योदय की यह साधना तो केवल निश्चित सिद्धि दिवस पर ही सम्पन्न की जा सकती है।

इस साधना में केवल तीन सामग्रियों की आवश्यकता होती है - पारद श्रीयंत्र, सौभाग्य शंख एवं कमलगड़ी की माला इसके अतिरिक्त इस साधना में किसी विशेष विधि-विधान या पूजन की आवश्यकता नहीं है। यदि साधक के पास महालक्ष्मी का चित्र हो तो वह उसे मढ़वा कर स्थापित कर दे अथवा महालक्ष्मी के किसी भी स्वरूप का प्राण-प्रतिष्ठित चित्र प्राप्त कर उसे साधना हेतु मढ़वा कर स्थापित कर लें।

### साधना विधान

साधना दिवस के दिन प्रातः आठ बजे से दस बजे के मध्य साधना में अवश्य बैठ जाएं और समय को इस प्रकार से निश्चित कर लें कि साधना बारह बजे के पहले-पहले अवश्य पूर्ण हो जाये। महालक्ष्मी के चित्र के सामने धी का बड़ा दीपक लगाएं, कुंकुम, केसर, अक्षत, पुष्प की पंखुड़ियाँ एवं नैवेद्य से उनका पूजन करने के उपरांत केसर से स्वस्तिक चिह्न अंकित कर उस पर 'सौभाग्य शंख' स्थापित करें और पहले से ही चुनकर रखे चावल के 108 बिना टूटे दानों को मंत्रोच्चार पूर्वक सौभाग्य शंख पर समर्पित करें।

### मंत्र

ॐ श्री ह्रीं क्लीं श्रीं लक्ष्मीराजच्छारजच्छ मम  
मंदिरे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा

इस पूजन के उपरान्त कमलगड़ी की माला से पारद श्रीयंत्र पर त्राटक करते हुए निम्न मंत्र की एक माला मंत्र जप करें।

### मंत्र

॥ॐ श्री ह्रीं क्लीं श्रीं सिद्ध लक्ष्मै नमः ॥

मंत्र जप के उपरांत भगवती महालक्ष्मी की आरती करें और प्रार्थना पूर्वक अपने स्थान को छोड़ें। उस सम्पूर्ण दिवस पूजन सामग्री को स्थापित रहने दें लेकिन ध्यान रखें कि चूहे आदि पूजा स्थान को अव्यवस्थित न करें।

सायं काल गोधूलि के पश्चात् उपरोक्त मंत्र की एक माला जप पुनः करें तथा सौभाग्य शंख पर चढ़ाए गये चावलों अथवा पुष्प की पंखुड़ियों को किसी रेशमी कपड़े में बांध लें जो आपके जीवन में स्थायी सौभाग्य के रूप में विद्यमान रहेंगे। सौभाग्य शंख एवं कमलगड़ी की माला को अगले दिन प्रातः विसर्जित कर दें और पारद श्रीयंत्र को किसी भी पवित्र स्थान पर स्थापित कर दें। सौभाग्य की यह विशेष सिद्ध सफल साधना किसी भी आयु वर्ग का कोई भी साधक या साधिका सम्पन्न कर सकती है।

साधना सामग्री - 450/-

### पृष्ठ संख्या 79 से - (कमल गड़ी की माला)

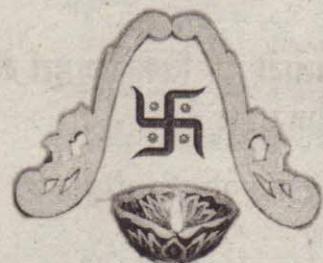
ऐसे लक्ष्मी की आराधना के लिए और कई मालाएं हैं, उनसे भी लक्ष्मी की आराधना संभव है, किन्तु कमल गड़ी की माला से लक्ष्मी मंत्र का जप करने से भगवती कमलवासिनी का आशीर्वाद शीघ्र प्राप्त होता है। इस माला के निर्माण में महालक्ष्मी के विशिष्ट मंत्रों से इसके एक-एक मनके को सौ-सौ बार मंत्र जप करके विशेष प्रकार की चैतन्यता दी जाती है तथा इस माला के सुमेरु को कम से कम 11 हजार महालक्ष्मी मंत्र से चैतन्य करने के बाद प्राण-प्रतिष्ठा के विशेष मंत्रों से चैतन्यता देकर शक्ति युक्त किया जाता है जिससे किसी भी महालक्ष्मी की जितनी भी साधना या अनुष्ठान हैं उनमें यह माला अत्यन्त उपयोगी है तथा अनुकूलता प्रदान करने वाली है।

महर्षि विश्वामित्र को आर्थिक उच्चता पर पहुंचाने का सबसे बड़ा श्रेय कमल गड़ी की माला को है। इस प्रमाण से यह सिद्ध होता है कि लक्ष्मी साधना में कमल गड़ी की माला की क्या उपयोगिता है, आप भी अपने पूजा स्थान में, विश्वास है कि इसे अवश्य स्थान देंगे।

इस माला को सुरक्षित रखने के लिए इस पर कभी कभी तेल का लेप करें क्योंकि इसमें कीड़े लगने की सम्भावना रहती है जिससे बहुत दिनों तक सुरक्षित रखने में दिक्कत होती है। इस प्रक्रिया को अपनाने के बाद बहुत दिन तक इसे अपनी साधना में उपयोग कर सकते हैं।

पत्रिका पाठकों के लिये

# दीपावली के शुभ अवसर पर विशेष छपहार



इस बार दीपावली पूजन विशेष रूप से सम्पन्न करना है  
लक्ष्मी दास नहीं,  
लक्ष्मी पति बनना आपका अधिकार है

# गणपति जाहुज्य महलक्ष्मी साधना पैकेट

छपहार योजना



पूर्ण समृद्धि, धनवान एवं अपने शहर के ऐश्वर्ययुक्त  
एवं लक्ष्मी पति लोगों में नाम गणना कराना  
आपका स्वप्न नहीं, आपका पूर्ण अधिकार है  
और ऐसा ही सकता है दीपावली के अवसर पर  
एक नये, मौलिक एवं चमत्कारिक इस तांत्रिक प्रयोग से  
हम जानते हैं कि यह सूचना थोड़ी समय से पहले है  
पर नहीं  
दीपावली पर्व आने में मात्र पैतालिस दिन बचे हैं



यह पत्रिका आप तक पहुंचने के बाद आप पोस्टकार्ड भर कर भेजें, फोन पर आर्डर करें  
अथवा फैक्स करें (लेकिन तीनों साधन में एक का ही प्रयोग करें - Phone, Fax or Postcard),  
यहां प्राप्त हो, और सामग्री आप तक पहुंचने में तीस दिन लग जाते हैं और यदि आप आर्डर करने में  
पांच-सात दिन भी विलम्ब करते हैं, तो सामग्री सही समय पर आप तक नहीं पहुंच पाती।  
और यह अद्भुत, आश्चर्यजनक अवसर आपके हाथ से निकल जायगा।  
यदि यह प्रयोग आपने करने का निश्चय कर ही लिया है, तो फिर विलम्ब मत कीजिए।

आज ही, अभी, हमें आर्डर भेज दीजिए।

और यह अद्भुत, चमत्कारिक रूप से सफलतादायक प्रयोग है -

शत प्रतिशत ऐश्वर्य एवं धन प्रदायक

तांग्रिक साधना से अभिमन्जित

सिद्धाश्रम संस्पर्शित

पूर्ण सिद्ध महालक्ष्मी यंत्र

(एवं अन्य सामग्री के साथ महालक्ष्मी पैकेट)

### इस दीपावली पर्व पर

केवल इस महायंत्र को पैकेट के साथ बताये हुए तरीके से, बताये हुए विशेष मुहूर्त में  
घर में या दुकान पर पूजा कर स्थापित करने की जरूरत है।

क्योंकि यह सिद्धाश्रम संस्पर्शित पैकेट है, यह विशेष तंत्र पूजन से सिद्ध पैकेट है,  
यह आपने आप में सफलतादायक है।

इस उत्तम कोटि के 'गणपति सायुज्य महालक्ष्मी साधना पैकेट' में

•०६६८०• आवश्यक यंत्र और सामग्री है, जिसकी न्यौछावर ₹७०/- रुपये है। •०३३५०•

पर आप पत्रिका सदस्य हैं तो अगले दो वर्षों की पत्रिका सदस्यता अथवा  
दो नये पत्रिका सदस्य बनाकर के एुवज में यह पैकेट सर्वथा मुफ्त में प्राप्त कर सकते हैं  
और यह उपहार आपको प्राप्त हो जायगा।

### अभी आप धनराशि मत भेजिये

हमें आप पर भरोसा है, आप पोस्टकार्ड संख्या ५ साफ-साफ हिन्दी या अंग्रेजी में भर कर

हमें भेज दीजिये अथवा फोन पर अथवा फैक्स द्वारा हमें आज ही आर्डर भेज दीजिए।

हम वी.पी.पी. से न्यौछावर ₹७०/- का यह दीपावली पूजन पैकेट आपको भेज देंगे।

जब पोस्टमैन यह पैकेट लेकर आवे, तब धनराशि देकर पैकेट छुड़वा लें।

आपका आर्डर प्राप्त होते ही यह पूजन पैकेट आपको भेज दिया जाएगा।

ध्यान रहे, यदि आप घर पर न हों तो सदस्यों को सूचित कर दें कि वे वी.पी. छुड़वा लें।

यदि पैकेट वापस लौट आया, तो हम किसी भी हालत में आपको वापिस पैकेट नहीं भेजेंगे,

और न श्विष्य में भी वी.पी.से कोई सामग्री आपको भेज सकेंगे।

आपके लिये यदि संभव हो तो फैक्स द्वारा ही दीपावली पैकेट का आर्डर करें।

पैकेट के साथ भी पूर्ण पूजन विद्यान आपको प्राप्त होगा तथा पत्रिका के  
अगले अंक में सर्वजन हिताय में भी पूजन विद्यान प्रकाशित किया जायेगा।

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.)

फोन: 0291-2432209, 2433623, फैक्स: 0291-2432010

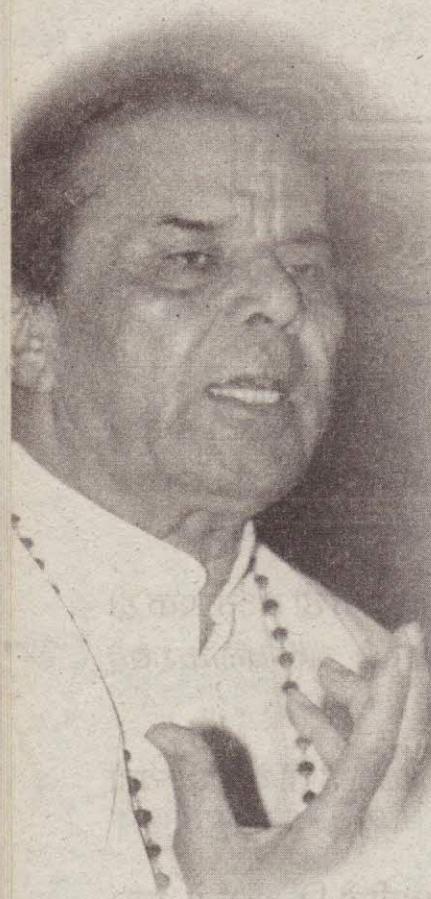
'सितम्बर' 2009 मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान '42'

सम्पर्क:

# शिष्य धर्म

- ❖ शिष्य बनने की क्रिया एक बूंद से समुद्र बन जाने की होती है। जिस प्रकार एक वर्षा की बूंद नदी बन कर सागर से मिलने को तड़पती हुई आगे बढ़ती है उसी प्रकार जब व्यक्ति गुरु में समाहित होने के लिए तत्पर होता है तभी वह शिष्य बन पाता है।
- ❖ बूंद का और कुछ ध्येय और कुछ विंतन होता ही नहीं। उसका एक ही लक्ष्य, एक ही विंतन, एक ही विचार होता है कि कैसे उमड़ कर वह आगे बढ़े, नदी बन कर बहे और सागर में मिल जाए।
- ❖ जब व्यक्ति इसी प्रकार एक ही लक्ष्य से प्रेरित होकर आगे बढ़ता है तो वह शिष्यता की ऊँचाइयों को स्पर्श कर पाता है।
- ❖ बूंद जब नदी बनती है तो वह इतने बेग के साथ आगे बढ़ती है कि मार्ग में अगर गांव हो तो उन्हें भी बहा ले जाती है। कोई भी मार्ग का अवरोध उसे रोक नहीं पाता।
- ❖ व्यक्ति भी जब सभी अवरोधों को पार करता हुआ, अङ्गनों और बाधाओं की परवाह किए बिना गुरु से एकाकार होने की ओर अग्रसर होता है तभी वह शिष्यता प्राप्त कर पाता है।
- ❖ बूंद जब नदी में जाकर सागर से मिलती है तो उसके आंनद का ठिकाना नहीं रहता। शिष्य भी जब गुरु के चरणों में समाहित होता है तो उसके आनंद का ठिकाना नहीं होता। शिष्य के लिए गुरु चरणों से पावन कोई अन्य स्थान नहीं, कोई तीर्थ नहीं।
- ❖ बूंद जब सूर्य के ताप से ऊपर उठती है और बादल बनती है तो उसमें एक तड़प पैदा हो जाती है कि वह कैसे सागर से मिले, और जब तक ऐसा होता नहीं, यह तड़प बढ़ती ही जाती है, उसी प्रकार शिष्य गुरु से दूर होकर तड़पता रहता है कि वह कब गुरु से फिर मिलेगा, कब वह गुरु से एकाकार हो पाएगा।
- ❖ शिष्य रूपी बूंद का एक मात्र धर्म और कर्तव्य है, गुरु रूपी सागर में एकाकार हो जाना और इसके लिए शिष्य को सभी अङ्गनों की परवाह किए बिना सदैव अग्रसर रहना चाहिए।

# गुरु वाणी



❖ गुरु ही ऐसे व्यक्ति हैं जो निःस्वार्थ भाव से शिष्य के आध्यात्मिक एवं भौतिक विकास की ओर ध्यान देते हैं। वे उसके विकारों के हलाहल को पीकर उसे जीवन में प्रसच्चाता, आनंद, आध्यात्मिक उच्चता तथा सफलता प्रदान करते हैं।

❖ गुरु तो हर क्षण सब कुछ लुटाने, सब कुछ दे देने के लिए तत्पर हैं, यह तो शिष्य पर निर्भर है कि वह कितना ग्रहणशील है। जितना वह खुला होगा, ग्रहणशील होगा, समर्पण युक्त होगा उतनी ही गुरु की चैतन्यता उसमें प्रवेश कर पाएगी।

❖ अगर व्यक्ति में या शिष्य में समर्पण नहीं है, प्रेम नहीं है तो दीक्षा का कोई अर्थ नहीं रह जाता। यह इतना संवेदनशील आदान प्रदान है, जो कि दो प्रेमियों के बीच ही घटित हो सकता है और गुरु शिष्य के संबंध का आधार प्रेम ही तो है।

❖ शिष्य को गुरु से ज्ञान प्राप्त करने, दीक्षा प्राप्त करने के लिए स्वयं ही तत्पर रहना चाहिए। जब भी गुरु का साक्षिंध्य प्राप्त हो, वह गुरु से दीक्षा के लिए प्रार्थना अवश्य करे।



- ❖ ऐसे बहुत से उदाहरण हैं जब मात्र गुरु की समीपता से ही आत्मोपलब्धि हो गई, परंतु ऐसा तब होता है जब शिष्य अहंकार रहित हो, बुद्धि से पूर्ण चैतन्य हो और आत्मज्ञान प्राप्त कर लेना ही जिसके जीवन का मुख्य ध्येय हो।
- ❖ जब व्यक्ति निःस्वार्थ भाव से गुरु सेवा करता है तो उसके और गुरु के बीच ब्रिज बनता है, एक दूसरे के निकट आने की क्रिया बनती है, पूर्ण स्वप्न से समाहित होने की क्रिया बनती है और ऐसा होने पर गुरु अपनी चैतन्यता शिष्य में उड़ेल देता है।
- ❖ सामान्य तौर पर गुरु और शिष्य के बीच एक बहुत बड़ा गैप है। जब तक वह दूर नहीं हो जाता तब तक शिष्य आध्यात्मिक उच्चता की स्थिति तक नहीं पहुंच सकता और यह गैप, यह दूरी कम करने का साधन है केवल दीक्षा और गुरु सेवा।
- ❖ केवल शिष्य के कान में मंत्र फूंक देना ही दीक्षा नहीं होती। शिष्य के जीवन के पाप, ताप को समाप्त कर उसे बंधन मुक्त करना, जन्म मृत्यु के चक्र से छुड़ाना ही दीक्षा है। नर से नारायण, पुरुष से पुरुषोत्तम बनाने की क्रिया दीक्षा है।
- ❖ दीक्षा परमेश्वर की कृपा का साकार स्वरूप है, जो कि जीव को प्राप्त होती है गुरु के माध्यम से हृदय को शुद्ध, निर्मल, पवित्र एवं दिव्य बनाना तथा गुरु के साथ जुड़ने की क्रिया को ही दीक्षा कहा गया है।

लक्ष्मी साधना में यही प्रार्थना की जाती है -



उपर्युक्त लक्ष्मी प्राप्तम्  
प्राप्त लक्ष्मी विरकाल स्थायी भव

अर्थात् जो लक्ष्मी मुझे अभी तक प्राप्त नहीं हुई है वह  
शीघ्र प्राप्त हो और प्राप्त लक्ष्मी विरकाल तक स्थायी रहे।

# जीन साधन तंत्र का अनुग्रह प्रयोग

जो गृहस्थ साधकों के लिए आवश्यक है।

...मैंने उनसे इस बात का रहस्य जानना चाहा, तो उन्होंने बिना हिचक के दिया कि उन्हें लक्ष्मी की प्रत्यक्ष सिद्धि है, जिससे वे भौतिक जीवन से विद्युत जो श्री मांग करते हैं, वह तत्क्षण पूर्ण हो ही जाती है।

- एक योगी के वचनामृत

गब्दों में पूछा जाए कि जीवन का सौन्दर्य क्या होगा 'अपने व अपने परिवार के पालन-पोषण के लिए तथा व्यक्ति का लिए ही नहीं, वरन् उससे भी आगे बढ़कर अपने परिवार के सदस्यों के लिए कुछ करने में जो प्रसन्नता मिलती है, वही जीवन का सौन्दर्य होता है और जब तक जीवन में ऐसा सौन्दर्य नहीं होता, तब तक व्यक्ति के मन में तृप्ति का भाव भी नहीं पनपता। जीवन के छोटे-छोटे क्षणों को जी लेने के बाद जब मनुष्य का मन सरस होता है, तृप्ति होता है व आह्वादित होता है तभी उसके मन में वह भाव-भूमि उत्पन्न होती है; जिसके आधार पर उसका मन ईश्वर के चरणों में नमित होता है।

लक्ष्य को एक पल के लिए

व्यक्ति से पूछें कि वह सारी

बनाना-बिगाड़ना किस

से उसका उत्तर यही

प से उसका उत्तर यही

एक प्रकार से देखा जाए तो भौतिक सुख एक ऐसी वर्षा होती है जिससे भीग कर ही व्यक्ति के नम हृदय में

आध्यात्मिकता के कोमल अंकुर फूटते हैं। अभाव ग्रस्त, दुःखी,

हीन, दरिद्रता और कष्ट से पीड़ित व्यक्ति ईश्वर की आराधना

भले ही कितनी जोर-शोर से कर ले, किन्तु उसके स्वर में तरलता नहीं होती, उसकी पुकार के पीछे एक चिङ्गिड़ाहट और ईर्ष्या के भाव ही छुपे होते हैं, अतः यदि यह कहा जाए कि दुःखी रहना, शरीर सुखाना और दीन-हीन बने रहना ही आध्यात्मिकता की सही पहचान है, तो खेद से कहना पड़ता है कि संभवतः, अभी तक हमारा चिन्तन उस दैन्य और दासता से मुक्त नहीं हुआ है, जो वर्षों की गुलामी की देन है।

दूसरी ओर यह भी सत्य है कि जब व्यक्ति को अर्थोपार्जन के उपाय नहीं मिलते, सम्पन्नता की स्थिति नहीं प्राप्त होती, तब वह हताश होकर अपनी चैतन्यता को ही आध्यात्मिकता मानने की ऐसी प्रवचना रच लेता है, जिससे वह कालांतर में खुद ही ग्रसित होकर दीन-हीन, पतित बना रह जाता है, क्योंकि अर्थोपार्जन करना, घर में 'श्री' का स्थापन करना सहज कार्य नहीं है। स्पष्ट शब्दों में कहा जाए तो लक्ष्मी को घर में स्थापति करना सहज कार्य नहीं है। इसका कारण यह नहीं कि लक्ष्मी चंचला है, वरन् इसका कारण यह है कि व्यक्ति के पास वह भाव-भूमि और चैतन्यता नहीं होती जिससे लक्ष्मी को स्थायित्व दिया जा सके। सङ्क पर चलते समय व्यक्ति किसी आकर्षक दुकान को देख कर दो क्षण ठिक जाता है लेकिन वहीं कहीं आगे बढ़ने पर गंदगी का ढेर देखकर जल्दी-जल्दी कदम बढ़ाने की क्यों सोचता है?

यहीं अंतर होता है लक्ष्मी के स्थापन में जहां स्वच्छता है, कितना पौरुष है, जिससे वह एक साधना - सिद्धि को सम्भाल स्थापना हेतु आधार है, पवित्रता और आग्रह है, लक्ष्मी वहीं स्थापित हो सकेगी। जहां दीनता, मलिनता, कलह और दुर्बुद्धि है; वहां लक्ष्मी किस आधार पर स्थापित होगी? देशकाल और परिस्थिति का अंतर साधना-जगत में बहुत अधिक नहीं पड़ता। इसके द्वारा साधना के पक्ष प्रभावित अवश्य होते हैं लेकिन इससे कोई गुणात्मक अंतर पड़ता हो, यह नितांत आवश्यक नहीं होता। अतः यदि शास्त्रों में प्रमाण मिलते हैं, पुराणों में कथाएं मिलती हैं कि यज्ञों, साधनाओं आदि के माध्यमों से लक्ष्मी प्रकट होती थी, तो यह आज के युग में भी संभव है। कलियुग की दूषित प्रवृत्तियां बाधाकारी अवश्य हैं किन्तु वे असंभव स्थितियां नहीं हैं।

### साधना में आवश्यक क्या?

साधना के मध्य मुख्य महत्व देशकाल का नहीं होता वरन् इस बात का होता है कि जो व्यक्ति साधना में प्रवृत्त है उसकी चैतन्यता क्या है, उसके प्राणों में कितना बल है और उसमें



कितना पौरुष है, जिससे वह एक साधना - सिद्धि को सम्भाल कर रख सके। साधना में केवल प्रारंभिक सफलता ही पर्याप्त नहीं होती वरन् यह भी महत्वपूर्ण होता है कि क्या साधक साधना के पश्चात की स्थितियों को संभालना जानता है, सिद्धि को चिरस्थायी करना जानता है? यदि इसे अतिशयोक्ति न समझा जाए तो साधना में सिद्धि तो एक बहुत मामूली सी घटना होती है क्योंकि देवी, देवता मंत्र स्वरूप होते हैं, जो विशिष्ट क्रियाओं द्वारा आबद्ध होने के लिए बाध्य होते ही हैं।

### साधना और मंथन

लक्ष्मी प्राप्ति तो समुद्र मंथन की क्रिया है और जीवन के समुद्र में साधनाओं के शेषनाग रूपी रज्जु से जो कुछ मथ कर प्राप्त होता है वही लक्ष्मी का यथार्थ स्वरूप होता है। इस प्रकार साधनाओं के द्वारा केवल लक्ष्मी का यथार्थ स्वरूप होता है। इस प्रकार साधनाओं के द्वारा केवल लक्ष्मी ही नहीं वरन् चौदह रत्नों की प्राप्ति भी होती है। इसी कारणवश जीवन में महालक्ष्मी की साधना अपने-आप में सम्पूर्ण साधना पद्धति

कही गई है किन्तु जहां मंथन होता है वहां विष की उत्पत्ति भी अनिवार्य होती है।

साधना के क्षेत्र में किया गया ऐसा मंथन विष की सृष्टि भी करता है और यह विष होता है - साधक की अहंमन्यता, प्रमाद, जिसके वशीभूत होकर साधक उस सुख को प्राप्त नहीं कर पाता, जो अमृत-पान का आनन्द होता है। यदि साधक इस विष को शमित करने की कला जानता हो, तब वह स्पष्ट अनुभव कर सकता है कि लक्ष्मी उसके समक्ष हर पल उपस्थित है ही। पग-पग पर उसके साथ ही चल रही है और चल ही नहीं वरन् अनुगमन कर रही है। साधनाओं के द्वारा ऐसा चमत्कार संभव है।

इसका आप भी प्रत्यक्ष उदाहरण देखते ही होंगे कि समाज के कुछ लोग सर्वथा तनाव रहित, मुक्त, स्वच्छंद एवं जीवन-ऊर्जा से भरे-पूरे, छलकते हुए दिखाई देते हैं और यह जानने की इच्छा होती ही है कि आखिर इन्होंने अपने जीवन में ऐसा क्या कुछ किया है, क्या पाया है, जिससे इस तनावयुक्त युग में भी वे सर्वथा उन्मुक्त दिखाइ दे रहे हैं। यह प्रभाव साधना से भी प्राप्त किया जा सकता है अर्थात् जो प्रारब्ध से न मिला हो उसे पुरुषार्थ से अर्जित किया जा सकता है।

अपने संन्यास जीवन में जब मैं निरंतर एक स्थान से दूसरे स्थान पर भ्रमण करता हुआ केवल प्राचीन पद्धतियों का संग्रहण कर रहा था तब मैंने अनुभव किया था कि जिस प्रकार गृहस्थ जीवन को लक्ष्मी की नितान्त आवश्यकता रहती है उसी प्रकार विरक्त जीवन में भी पग-पग पर लक्ष्मी का साहचर्य आवश्यक हो ही जाता है। मेरी भेंट एक ऐसे वृद्ध योगी से हुई जो जंगल में सर्वथा एकान्त में कुटी बनाकर रहते हुए निश्चिन्त और तृप्त रहते थे। संन्यास की समस्त मर्यादाओं का पालन करते हुए भी उनके जीवन में कोई अभाव नहीं था और उसी अनुरूप उनका स्वभाव भी खुली किताब जैसा था।

मैंने उनसे इस बात का रहस्य जानना चाहा, तो उन्होंने बिना हिचक के बता दिया कि उन्हें लक्ष्मी की प्रत्यक्ष सिद्धि है, जिससे वे भौतिक जीवन से सम्बन्धित जो भी मांग करते हैं, वह तत्क्षण पूर्ण हो ही जाती है, और मैंने उनके साथ एक सप्ताह रहकर पाया कि वास्तव में वे अपनी साधना के बल से उस घनघोर जंगल में भी जिस वस्तु की कामना करते थे वह उपलब्ध होती ही थी, चाहे वस्त्रों की बात हो अथवा सुस्वादु भोजन की। यह बात और है कि उस योगी की आवश्यकताएं अत्यन्त न्यून ही थीं।

मैंने उनसे इस साधना का रहस्य जानना चाहा और उन्होंने

यही अंतर होता है लक्ष्मी के स्थापन में जहां स्वच्छता है, स्थापना हेतु आधार है, पवित्रता और आग्रह है, लक्ष्मी वहीं स्थापित हो सकेगी। जहां दीनता, मलिनता, कलह और दुर्बुद्धि है; वहां लक्ष्मी किस आधार पर स्थापित होगी?

साधना के मध्य मुख्य महत्व देशकाल का नहीं होता वरन् इस बात का होता है कि जो व्यक्ति साधना में प्रवृत्त है उसकी चैतन्यता क्या है, उसके प्राणों में कितना बल है और उसमें कितना पौरुष है, जिससे वह एक साधना - सिद्धि को सम्भाल कर रख सके।

भी बिना किसी हिचकिचाहट के इस साधना का मूल धर्म समझा दिया, क्योंकि उनका विश्वास था कि साधना जीवन में गोपनीय रखा जाने वाला पक्ष होता ही नहीं है। सचमुच उनकी मस्ती, फक्कड़ स्वभाव देखकर ईर्ष्या ही होती है, उनकी यह विद्या सम्भवतः जैन साबर तंत्र पर आधारित थी।

#### साधना विधान

किसी भी अमावस्या की रात्रि में, लाल वस्त्र पहन कर, दो त्रिकोण उल्टे व सीधे खींच उसके प्रत्येक शीर्ष पर एक-एक गोमती चक्र रख (अर्थात् कुल छः गोमती चक्र), मध्य में एक कल्प चक्र रखकर मूँगे की माला से निम्न मंत्र की एक माला मंत्र-जप करना था। मंत्र-जप के काल में तेल का दीया जलते रहना था उसके तेल में पांच केलन डाल देना था, मंत्र इस प्रकार से था -

#### मंत्र

॥ॐ णमो लक्ष्म्यै सिद्धिं देहि प्रत्यक्षं भव णमो हुं ॥

मंत्र-जप के उपरांत तेल का दीया फूँक मारकर बुझा देना था, केलन चार दिशाओं में फेंक कर, समस्त साधना सामग्री को साधना स्थल पर ही गह्ना खोदकर एक बचा हुए केलन के साथ गाढ़ देना था।

मैंने उसके बताये ढंग से साधना सम्पन्न की, लेकिन अपने मन की शंका भी उनके समक्ष रखी कि जहां साधक गृहस्थ हो और इस प्रकार जंगल में बैठकर साधना न कर रहा हो तब वह क्या करे? इसके प्रत्युत्तर में उन्होंने बताया कि लाल वस्त्र में साधना सामग्री को बांधकर किसी कोने में डाल देना भी भूमि में दबा देने के समान ही माना गया है। मैं ऐसे दुर्लभ प्रयोग को प्राप्त करने के लिए आज तक उनका आभारी हूँ, साथ ही चलते समय उन्होंने जो बात कही वह मेरी स्मृति में

निरंतर बनी रहती है।

मैंने चलते समय उनसे हास्य पूर्ण ढंग से कहा कि आप तो सर्वथा वीतरागी हैं, वृद्ध हैं, आप को लक्ष्मी की क्या आवश्यकता पड़ गई? उनका उत्तर था - यह सत्य है मेरे स्वयं की आवश्यकताएं तो यहीं प्रकृति के माध्यम से पूरी हो जाती हैं लेकिन मेरे जो सैकड़ों संन्यस्त व गृहस्थ शिष्य हैं उनके जीवन की आवश्यकताएं उनके वस्त्र, भोजन आदि की आवश्यकताएं कैसे पूरी होंगी? कोई आवश्यक नहीं कि वे शिष्य आपकी दृष्टि के सामने हैं अथवा नहीं, किन्तु मेरे तो शिष्य हैं ही। मुझे तो उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति गुरु होने के कारण करनी ही पड़ती है। क्या बिना लक्ष्मी के यह संभव है?

आज अपने गृहस्थ जीवन में उनके बताये ढंग से लक्ष्मी का चैतन्य स्वरूप देख सका हूं, वहीं यह भी अनुभव कर सका हूं कि लक्ष्मी का प्रत्यक्षीकरण अर्थात् उसकी कृपाओं का जीवन में स्पष्ट अवतरण आवश्यक ही नहीं, वरन् पग-पग पर अनिवार्य भी है।

साधना सामग्री - 300/-

### \* \* \* \* \* \* \* \* \* जैन साबर तंत्र के अनुभूत प्रयोग

#### 1. दुकान की बिक्री बढ़ाने हेतु

सात गोमती चक्र लेकर प्रत्येक गोमती चक्र पर तीन-तीन बार निम्न मंत्र पढ़कर (अर्थात् कुल 21 बार) उन्हें दुकान के चौखटे के नीचे दबा दें तो सर्व ग्राहक आकर्षण प्रयोग सिद्ध हो जाता है।

मंत्र

ॐ अप्तिचक्रे फट् विचक्रात् स्वाहा

यह प्रयोग शनिवार के अतिरिक्त अन्य किसी भी दिन सम्पन्न कर सकते हैं।

साधना सामग्री - 150/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

#### 2. गृह कलह शांति हेतु

यदि एक सुधाणा लेकर सोमवार की रात्रि में अपने \*\*\*\*\* सामने स्थापित कर लें तो घर में नित्य प्रति बना रहने वाला गृह कलह, विषाद और आपसी झगड़े समाप्त होते ही हैं।

मंत्र

ॐ शांते शांते शांति प्रदे जगत् जीव हित शांति करे  
ॐ हीं भगवति शांते मम शांति कुरु कुरु शिवम् कुरु

३५ 'सितम्बर' 2009 मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान '49'

कुरु लिरुपदव कुरु कुरु सर्व भवं प्रशमव प्रशमव ॐ  
हाँ हीं हः शांते स्वाहा।

इस मंत्र का 21 बार जप करना पर्याप्त है।

साधना सामग्री - 150/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

#### 3. कामिनी मोहिनी प्रयोग

अपनी मनोवांछित प्रेमिका को वश में करने का यह जैन तंत्र का बहुन प्रभावशाली मंत्र माना गया है। अन्य स्त्रियों की बात तो क्या साक्षात् दैव पत्नियां भी इस मंत्र से प्रभावित हो उठती हैं। अपने समक्ष किसी भी बुधवार की रात्रि को 10 बजे के पश्चात् कामिनी कामेश्वर यंत्र रखकर, यदि सफेद हकीकी की माला से एक माला मंत्र जप करें तो मनोवांछित स्त्री सम्मोहित होती ही है।

मंत्र

ॐ सुग्रन्थवती सुग्रन्थवदन्नर कामिनी  
कामेश्वराय स्वाहा 'अमुक' स्त्रीं वशमानय  
वशमानय /

'अमुक' के स्थान पर मनोवांछित स्त्री का नाम लें।

साधना सामग्री - 300/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

#### 4. शिरोशूल की समाप्ति हेतु

यदि किसी आघात अथवा अज्ञात कारण से किसी व्यक्ति के सिर में असद्य पीड़ा उत्पन्न हो गयी हो तो निम्न मंत्र से जल को 21 बार अभिमंत्रित करके पिलाने से तुरंत आराम मिलता ही है।

मंत्र

ॐ जः हः सः

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

#### 5. नजर ढूर करने का प्रयोग

छोटे बच्चों को किसी ऐसी आपदा से बचाए रखने के लिए आवश्यक ही हो जाता है। जैन मंत्र से अभिमंत्रित एक विशिष्ट नजर निवारक ताबीज निम्न मंत्र के उच्चारण के द्वारा धारण करा दें तथा जब-जब वे अस्वस्थ प्रतीत हों, तब-तब इस मंत्र से अभिमंत्रित जल उनके ऊपर छिड़क दें।

मंत्र

आत्म चक्षु पर चक्षु भूत चक्षु शक्तिनी चक्षु  
डाकिनी चक्षु पिसुन चक्षु सर्व चक्षु हीं फट् स्वाहा।

साधना सामग्री - 150/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

आपके तीन गुरु हैं

## कुल गुरु, विद्या गुरु और रवधारण धर्म गुरु

स्वयं धारण किये गुरु से प्राप्त होता है

# जीवन का आठदेश सार

सद्गुरु उपदेश, दृष्टान्त और शक्ति प्रभाव से शिष्य के भीतर वह आत्मज्ञान प्रदान करते हैं, जो वे स्वयं साधना द्वारा प्राप्त करते हैं।

**गुरु-शिष्य सम्बन्धों का यह विवेचनात्मक अध्ययन -**

कोई भी संस्कृति अपनी विकास यात्रा में महान् नहीं बन जाती, उस संस्कृति में कुछ ऐसे गुण अपने आप बन जाते हैं, और उनका सम्पूर्ण विकास होता है, परम्पराओं का पूर्ण निर्वाह होता है, एक ठोस आधार होता है, तभी संस्कृति महान् बनती है, उसका एक गौरवशाली वर्तमान और आगे गौरवशाली भविष्य होता है।

भारतीय संस्कृति और पश्चिमी संस्कृति में आधारभूत अन्तर यह है कि उनके पास एक आधारभूत शक्ति नहीं है, बाहर से मजबूत दिखाई देने वाले ये व्यक्ति भीतर ही भीतर बड़े खोखले होते हैं, इनके जीवन-लक्ष्य केवल भौतिक ही रहते हैं, न सम्बन्धों की परम्परा है न ज्ञान की परम्परा, इसलिए जब मन में एक भटकन शुरू होती है तो फिर कहीं और ठिकाना नहीं मिलता, इसीलिए तो वहां इतना अधिक व्याभिचार, अनाचार, अत्याचार है क्योंकि वहां जीवन एक व्यापार है, जब कि भारतीय संस्कृति तो आदर्शों त्याग, ज्ञान, तप, तपस्या, साधना, उपासना; शक्ति की उर्वरा भूमि पर विकसित एक विशाल वृक्ष है।

हां, यहां जिसने भी कुछ पाया, वह दूसरों को सब कुछ बांटने का ही प्रयास किया, और उन्होंने अपना सब ज्ञान बांटा, अपने ज्ञान से हजारों-हजारों के जीवन में प्रकाश का उदय किया, वे ही गुरु कहलाये, इसीलिए गुरु को ईश्वर के समान माना गया, 'गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः' क्योंकि गुरु शिष्य का निर्माण करते हैं, इसलिए ब्रह्मा हैं, गुरु शिष्य की रक्षा करते हैं इसलिए विष्णु भी हैं, और गुरु साक्षात् महेश्वर है क्योंकि वह शिष्यों के दोषों का संहार करते हैं, इसीलिए व्याकरण शास्त्र में 'गुरु' शब्द का अर्थ है - **गुणातीति गुरुः**, 'गु' निगरणे अर्थात् जो अन्दर से कुछ निकाल कर दे, वह गुरु कहलाता है, और इसमें भी 'गुरु' शब्द के पहले अक्षर 'गु' का मतलब है अन्धकार और दूसरे शब्द 'रु' का अर्थ है उसको हटाने वाला और यही मूल गुरु तत्व है। ईश्वर के अस्तित्व के सम्बन्ध में शंका हो सकती है, अलग-अलग लोग अलग-अलग देवी देवताओं का, भगवान का ध्यान कर सकते हैं लेकिन गुरु के सम्बन्ध में कोई शंका मतभेद नहीं है, सभी ने गुरु की महानता और महत्व को माना है, इसीलिए 'यस्य देवे परां भक्ति यथा देवे तथा गुरौ' अर्थात्

जैसी भक्ति की आवश्यकता देवता के लिए है, वैसी ही गुरु के लिए भी आवश्यक है।

उत्तराकाण्ड रामचरितमानस में लिखा है, कि 'बिन गुरु होई न ज्ञान', और गुरु के ज्ञान के विषय में हिरण्य संहिता में कहा गया है, कि - गुरु तो ज्ञान सागर है, जिस ज्ञान को सद्गुरु देव ने अपने मुख से उच्चरित किया वह निरर्थक नहीं जाता और जब सागर अपने सामने है तो आप इस ज्ञान सागर से कितना ज्ञान ले सकते हैं, वह शिष्य की योग्यता पर निर्भर करता है ...इसीलिए एक जगह लिखा है कि -

**सत्तगुरु बपुरा क्या करे, जो शिष्य माही चूक ।  
भावे त्यं परबोधि लै, ज्यों बंसि बजई फूक ॥**

बंसी में तो मधुर संगीत उत्पादन करने की पूरी क्षमता है, किन्तु उस ध्वनि को उत्पन्न करने वाला ही सिर्फ फूक मारता रहे कोई लयबद्ध स्वर न निकाल सके, तो मधुर संगीत कैसे उत्पन्न होगा, यदि शिष्य ही ज्ञान का उपयोग न कर सके, ज्ञान को अपना न सके तो गुरु का क्या दोष?

**जन मन मंजु मुकुर मन हरनी,  
किए तिलक गुन जन बस करनी ।  
श्री गुरु एद नख मनि जन जोती,  
सुमिरत दिव्य दृष्टि हिय होती ॥**

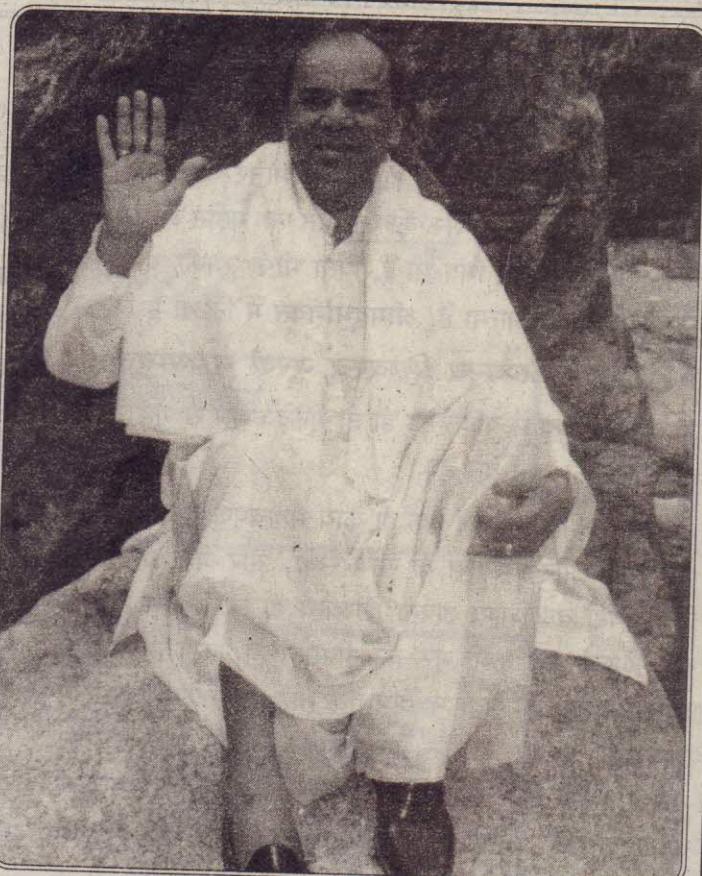
अर्थात् गुरु हृदय के विकारों को दूर कर उसे स्वच्छ दर्पण सदृश बना देते हैं, उनके चरण नखों से वह ज्योति निकलती है, जो हमारे हृदय को प्रकाशित कर देती है।

ईश्वर की कृपा न हो तो गुरु से मार्ग पूछ सकते हैं, अपने दोषों के सम्बन्ध में जान सकते हैं, लेकिन यह भी सत्य है कि -

**हरि रुठे गुरु ठौर है, गुरु रुठे नहीं ठौर ।**

**गुरु के भेद**

भारतीय शास्त्रों के अनुसार तीन प्रकार के गुरु माने गये हैं - 1. कुल गुरु, 2. विद्या गुरु और 3. धर्म गुरु। एक परिवार के गुरु कुलगुरु माने गये हैं और कुलगुरु साक्षात् उपस्थित हों या न हों उनकी पूजा पूरे परिवार द्वारा की जाती है, दूसरे विद्या गुरु जो कि शिक्षा देते हैं जो कि शिष्य अपने जीवन में अपनी आखों से देख समझ कर उन्हें ग्रहण करता है, तीसरे गुरु होते हैं धर्म गुरु। धर्म गुरु का तात्पर्य है जिन्हें हम अपने मन के धर्म से, मन की इच्छा से गुरु बनाते हैं। धर्म गुरु से ही शिष्य दीक्षा ग्रहण करता है, धर्म गुरु से ही शिष्य वह गुरु प्रभावशाली दृष्टान्त होता है, गुरुदेव उसे साक्षात् प्रत्यक्ष



मंत्र प्राप्त करता है जिसका वह अपने पूरे जीवन पालन करता है, लेकिन शिष्य नाम का यह जीव बड़ा विचित्र होता है, यह जब गुरु के पास आता है तो बड़ा ही अभिमान, अन्धकार, अहंकार तथा व्यक्तिगत स्वार्थों से भरा होता है, अपने आप को चोटी का खिलाड़ी समझते हुए कुश्ती लड़ने को तत्पर होता है, उसके भीतर ही भीतर इतना कोलाहल होता है कि उसे दूसरी वाणी सुनाई नहीं देती और सद्गुरु देव एक दृष्टि से ही पहचान जाते हैं कि शिष्य कहां जा रहा है लेकिन वे बड़े ही विचित्र ढंग से विभिन्न रूपों में विभिन्न उपदेशों द्वारा सबसे पहले तो उसके भीतर के कोलाहल को शांत कर, शांत आत्म ज्ञान की प्रतिष्ठा कराते हैं... इसीलिए कहा गया है कि -

**गुरु कुम्हार, शिष्य कुम्भ है, गढ़ि-गढ़ि कढ़े खोट ।  
हाथ सहारा दे रहे, लागि न यावे चोट ॥**

...और फिर गुरु क्या करते हैं, वे देखते हैं कि शिष्य कैसी मिट्टी का बना है, उसकी प्रकृति कैसी है, उसकी प्रकृति के अनुसार ही उसके भीतर की शक्तियों और अनुभूतियों को बढ़ावा देंगे, क्योंकि गुरु के पास तो तीन साधन हैं - उपदेश, उदाहरण अर्थात् दृष्टान्त और प्रभाव, श्रेष्ठ कोटि के शिष्य तो केवल उपदेश से ही समझ जाते हैं, और उपदेश से अधिक शिष्य दीक्षा ग्रहण करता है, धर्म गुरु से ही शिष्य वह गुरु प्रभावशाली दृष्टान्त होता है, गुरुदेव उसे साक्षात् प्रत्यक्ष

उदाहरण प्रस्तुत कर उसके भीतर ही आत्म ज्योति को जगाते हैं और जब यह उपाय भी काम नहीं करता तो फिर प्रभाव ही एक मात्र उपाय है, जिसमें गुरु अपनी शक्ति प्रयास से, अपनी दिव्य शक्तियों के माध्यम से शिष्यों के भीतर वह चीज डाल देते हैं, जो वह स्वयं है। गुरु का कार्य तो एक महान दायित्वपूर्ण है, वे शिष्यों के लिए मित्र भी हैं, पिता भी हैं उनकी आत्माओं को जगाने वाली आत्मा है, श्रीमद्भागवत में लिखा है कि -

**‘ब्रू वुः स्तिंगधस्य शिष्यस्य गुरुवौ गुह्यमप्युत’**

अर्थात् शिष्य में यदि स्नेह हो तो गुरुदेव गुप्त से गुप्त रहस्य भी शिष्य को बता देते हैं।

शिष्य के लिए केवल एक ही कार्य महत्वपूर्ण है और वह है पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ सेवा, और जहां यह श्रद्धा हिली, वहां वह शिष्य अपना शिष्यत्व ही त्याग देता है और यदि शिष्य द्वारा कभी गुरु का अपमान हो जाता है तो उसे भगवान शंकर की सेवा भी दोष मुक्त नहीं कर सकती, इसलिए शिष्य को चाहिए कि गुरु बनाने से पहले और गुरु के पास जाने से पहले अपने अहंकार को त्याग कर ही निश्छल भाव से जाना चाहिए, और गुरु शिष्य सम्बन्ध के बारे में श्री भास्कराचार्य लिखते हैं -

**स अगृणत्यवित्थेन कणविदुःखं कुर्वश्चमृतं सम्प्रयच्छन् ।  
तं मन्येत पितरं मातरं च तस्मै न द्रुहेत्कतमच्च नाह ॥**

अर्थात् गुरु तो सत्य नामक कुरेदनी से शिष्य के कानों को खोलता है, उसमें पहले से भरी हुई गलत-गलत बातों को खोद-खोद कर निकालता है और फिर शिष्य में अमृत भरता है, ये दो कार्य करने वाला गुरु होता है और गुरु से द्रोह करने वाले को कहीं भी ठौर नहीं है।

इसीलिए शास्त्रों में कहा गया है कि सोच-विचार कर योग्य गुरु का वरण करना चाहिए, केवल इसलिए नहीं कि आप किसी विशेष मत को मानने वाले हैं, हिन्दू धर्म के विभिन्न सम्प्रदाय के लोग अपने ही सम्प्रदाय में गुरु का वरण करते हैं, जो कि गलत है, यह एक देखा-देखी है, गुरु तो उसे बनाना चाहिए जिसके प्रति आपकी भावना जाग्रत हो, सात कार्य भावना के अनुसार करने चाहिए। 1. मन्त्र, 2. तीर्थ, 3. द्विज, 4. देव, 5. देवज, 6. भैषज अर्थात् वैद्य या डॉक्टर, 7. गुरु। और एक बार जब इन्हें अपना ले, अपनी भावना का विकास कर लें तो फिर श्रद्धा नहीं तोड़नी चाहिए।

गुरु, शिष्य को जो जपनीय मंत्र देते हैं, और यह मंत्र देने का कार्य ‘दीक्षा’ कहलाता है, गुरु, शिष्य को उसके स्तर के

**ज्ञानस्वरूपम् निजभावयुक्तम्,  
आनन्दमानन्दकरं प्रसङ्गम् ।  
योगीनद्रमीड्यं भवरोग वैद्यं,  
श्रीमद्गुरुं नित्यमहं नमामि ॥**

ज्ञान स्वरूप, स्वभाव में प्रतिष्ठित, आनन्दस्वरूप, आनन्द देने वाले, प्रसन्न, योगियों में श्रेष्ठ, स्तुत्य, संसार रोग के वैद्य, श्री सद्गुरु को मैं नित्य प्रणाम करता हूँ।

**श्री मत्परं ब्रह्म गुरुं स्मरामि,  
श्री मत्परं ब्रह्म गुरुं भजामि ।  
श्री मत्परं ब्रह्म ददामि,  
श्री मत्परं ब्रह्म गुरुं नमामि ॥**

मैं परब्रह्म गुरु का स्मरण करता हूँ, परब्रह्म गुरु का भजन करता हूँ। मैं परब्रह्म गुरु के सम्बन्ध में कहता हूँ और परब्रह्म श्री गुरु को नमस्कार करता हूँ।

अनुसार उसकी दीक्षा का क्रम निर्धारित करते हैं, बिना दीक्षा प्राप्त शिष्य अधूरा ही है, अर्थात् बिना नाविक के भटकती हुई खाली नाव के समान है। दीक्षा मंत्र देते ही गुरु शिष्य के जीवन रूपी नौका के नाविक का स्थान ग्रहण करता है, और उसे उसकी शक्ति के किनारे तक पहुंचाते हैं, इसलिए क्रमानुसार गुरुदेव से दस दीक्षाएं ग्रहण करनी चाहिए।

कुछ शिष्य गुरु कृपा को क्रृपण समझते हैं, और धन आदि से चुकाने का प्रयास करते हैं, लेकिन याद रहे कि गुरु शिष्य का सम्बन्ध कोई व्यापार नहीं है, गुरुत्व तो शिष्य के शरीर में बहते हुए रक्त के समान है, जो कि जब तक शरीर के भीतर रक्त बहता रहेगा तब तक यह गुरु कृपा का क्रृपण रहेगा।

...और शिष्य को यह जान लेना चाहिए कि जब तक उसकी देह में प्राण है, तब तक गुरु उसे कोई आदेश दे सकते हैं और उसे इस आज्ञा का पालन करना ही है। इसीलिए एक शिष्य ने लिखा है कि -

**नस्था धर्मो न वसुनिचये नैव कामोपभोगे यद्भाव्यं  
तद्वत् भगवन्पूर्वकमनुरूपम् ।  
एतत्प्रार्थ्ये मम बहुमतं जन्मजन्मातरेऽपि  
त्वपादमभोरुहयुग्मता निश्चलाभक्तिरस्तु ॥**

हे भगवन्! मैं धर्म, धन-संग्रह और काम भोग की आशा नहीं रखता, पूर्व क्रमानुसार जो कुछ होता हो सो हो जाय, पर मेरी बार-बार प्रार्थना है कि जन्म-जन्मान्तरों में भी आपके चरणारविन्द युगल में मेरी निश्चल भक्ति बनी रहे।

डाक व्यय पत्र प्राप्त  
करने वाले द्वारा  
दिया जायेगा।

व्यापारी जवाबी पोस्टकार्ड

परमिट नं. J.D. 8

जोधपुर प्रधान डाकघर

जोधपुर - 342001 (राजस्थान)

भारत में डाक  
टिकट लगाने  
की आवश्यकता  
नहीं है।

सेवा में

व्यवस्थापक : मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान

डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी,

जोधपुर - 342001 (राजस्थान)

डाक व्यय पत्र प्राप्त  
करने वाले द्वारा  
दिया जायेगा।

व्यापारी जवाबी पोस्टकार्ड

परमिट नं. J.D. 8

जोधपुर प्रधान डाकघर

जोधपुर - 342001 (राजस्थान)

भारत में डाक  
टिकट लगाने  
की आवश्यकता  
नहीं है।

सेवा में

व्यवस्थापक : मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान

डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी,

जोधपुर - 342001 (राजस्थान)

डाक व्यय पत्र प्राप्त  
करने वाले द्वारा  
दिया जायेगा।

व्यापारी जवाबी पोस्टकार्ड

परमिट नं. J.D. 8

जोधपुर प्रधान डाकघर

जोधपुर - 342001 (राजस्थान)

भारत में डाक  
टिकट लगाने  
की आवश्यकता  
नहीं है।

सेवा में

व्यवस्थापक : मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान

डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी,

जोधपुर - 342001 (राजस्थान)

मुंह  
न्मेक  
ब्ल्यूंद  
ससे  
नपने  
है।

मंत्र  
न्गत

की  
ठिन  
देश्य  
गा है

उद्देश्य को ले लें। एक दिवसीय देते हैं।

यदि आप दीक्षा प्राप्त करने के इच्छुक हों, तो समय एवं स्थान का निर्धारण सुनिश्चित कर सकते हैं या आप अपना फोटो सम्बन्धित न्यौछावर राशि के साथ जोधपुर कार्यालय के पाते पर भेज कर भी फोटो द्वारा दीक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.) फोन : 0291-2432209, 2433623 टेलीफ़ोन : 0291-2432010

प्रिय सम्पादक जी,

(पृष्ठ संख्या 22 पर प्रकाशित)

दिनांक : ..... सितम्बर 2009

मैं लोकप्रिय पत्रिका मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान का 'वार्षिक सदस्य' बनना चाहता हूँ। कृपया आप मुझे सम्बन्धित उपहार 'ज्वालामालिनी यंत्र' स्वरूप भेज दें। 303/- की वी.पी.पी. आने पर (258/- वार्षिक सदस्यता शुल्क + 45/- डाक व्यय) के रूप में जमा कर मुझे रसीद भेज दें। वी.पी.पी. आने पर मैं पोस्टमैन को धनराशि दे कर वी.पी.पी. छुड़ा लूँगा एवं हर माह मुझे पत्रिका भेजते रहे अथवा आप मेरे मित्र को हर माह पत्रिका भेजते रहें।

मेरा नाम : .....

मेरे मित्र का नाम : .....

पूरा पता : .....

उसका पूरा पता : .....

.....

.....

.....

.....

प्रिय सम्पादक जी,

(पृष्ठ संख्या 41 पर प्रकाशित) दिनांक : ..... सितम्बर 2009

मुझे निःशुल्क उपहार स्वरूप पूर्ण मंत्रसिद्ध, चैतन्य, प्राण प्रतिष्ठा युक्त 'दीपावली पूजन पैकेट' सामग्री भिजवा दें। मैं 570/- की वी.पी.पी. आने पर उसे छुड़ा लूँगा। मेरा पता निम्न है –

नाम व पता : .....

पता : .....

और मेरे दोनों मित्रों को एक वर्ष तक नियमित पत्रिका भेजते रहें। मेरे दोनों मित्रों के नाम व उनके पूरे पते निम्न हैं

1. ....

2. ....

.....

.....

.....

.....

प्रिय सम्पादक जी,

(पृष्ठ संख्या 28 पर प्रकाशित) दिनांक : ..... सितम्बर 2009

मुझे निःशुल्क उपहार स्वरूप पूर्ण मंत्रसिद्ध, चैतन्य, प्राण प्रतिष्ठा युक्त 'कनकप्रभा साधना' सामग्री भिजवा दें। मैं 570/- की वी.पी.पी. आने पर उसे छुड़ा लूँगा। मेरा पता निम्न है –

नाम व पता : .....

पता : .....

और मेरे दोनों मित्रों को एक वर्ष तक नियमित पत्रिका भेजते रहें। मेरे दोनों मित्रों के नाम व उनके पूरे पते निम्न हैं

1. ....

2. ....

.....

.....

.....

.....

'54'

4

5

6

मंत्र साधना केवल भजन नहीं है  
यह तो जीवन का आवश्यक तत्व है

मंत्र की ध्वनि आपकी चेतना का विस्तार करती है  
मंत्र की नियमितता आपको एकाग्र करती है  
मंत्र का जप आपकी शक्ति को जाग्रत करता है



## मंत्र साधना का विस्तार

मंत्र जीवन में क्यों आवश्यक हैं? मंत्र साधना से क्या लाभ हैं? क्योंकि आज का मनुष्य अपने जीवन में ट्यापारी बन गया है, हर बात को लाभ हानि की तराजू में तोलता है। मैंने ऐसा पाया है कि ज्यादातर साधक मंत्र साधना किसी न किसी भौतिक लाभ के लिए ही करते हैं, न कि अपनी आध्यात्मिक उन्नति के लिए, ...प्रस्तुत विवेचन में मंत्र साधना के सम्बन्ध में आपकी जिजासाओं का समाधान किया जा रहा है -

**प्रश्नः** मैंने अनेक मंत्रों की साधना की परन्तु मेरा मन आध्यात्मिक पवित्रता को याद रखिये। इधर-उधर मुहूर्मित ही रहा। मैं यह कैसे जानूँ कि कौन सा मंत्र मेरे मारने की पुरानी आदत को कम से कम अपने आध्यात्मिक जीवन से दूर रखिये। भौतिक जीवन में भले ही आप स्वच्छंद लिए उपयुक्त हैं?

यह प्रश्न घुमाकर इस तरह भी पूछा जा सकता है कि मैंने इससे पति-पत्नियों, मकान अथवा देश बदलते रहिये। इससे अनेक विवाह किये परन्तु कोई भी सफल नहीं रहा। मंत्र के कोई फर्क नहीं पड़ेगा परन्तु आध्यात्मिक जीवन में अपने लिए यह आवश्यक है कि किसी स्थान में टिककर उसकी लक्ष्य के प्रति एकाग्रता और पवित्रता अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

**प्रश्नः** व्यक्तिगत तथा सामान्य मंत्र में क्या अन्तर है?

जब तक मंत्रदीक्षा नहीं होती आप कोई भी सामान्य मंत्र यही है कि एक को मजबूती से पकड़े रहो, भले ही जिसे तुमने जप सकते हैं। दीक्षा में गुरु द्वारा प्रदत्त मंत्र आपका व्यक्तिगत पकड़ा है वह कमजोर ही क्यों न हो। हो सकता है तुम अपनी मंत्र हो जाता है, उसे बदलना नहीं चाहिये।

मंजिल पर विलम्ब से पहुंचो, परन्तु पहुंचोगे निश्चय ही। मंत्र कुछ विशिष्ट मंत्र भी होते हैं जो किसी खास उद्देश्य की साधना से ऊबना नहीं चाहिये। चाहे आप मेरे द्वारा अथवा पूर्ति अथवा प्रारब्ध को प्रभावित करने या किन्हीं कठिन अन्य किसी के द्वारा प्रदत्त मंत्र की साधना करें, परन्तु उसे समस्याओं से निपटने के लिये प्रयुक्त किये जाते हैं। उद्देश्य नियमित रूप से करते जाइये। एक गुरु एक मंत्र और एक की पूर्ति के बाद इसका अनुष्ठान समाप्त कर दिया जाता है नाधना पद्धति को आध्यात्मिक पवित्रता कहते हैं। और पुनः वे सामान्य मंत्रों की श्रेणी में आ जाते हैं।

**प्रश्नः** यदि किसी व्यक्ति का गुरु है तो क्या वह किसी अन्य गुरु से मंत्र ग्रहण कर सकता है?

जहां तक मैं समझता हूं गुरु को उचित रूप से परिभाषित किया जाना चाहिए। यदि आपने किसी से योग सीखा है तो वह व्यक्ति आपका योग-गुरु होगा। इसी प्रकार यदि आपने किसी से गीता अथवा बाइबिल को सीखा है तो वह आपका गीता अथवा बाइबिल का गुरु होगा। यदि आप दीर्घकाल तक उसके पास जाकर आध्यात्मिक जीवन के विषय में सीखते हैं तो वह आपका आध्यात्मिक गुरु होगा। ऐसा व्यक्ति, जो आध्यात्मिक ज्ञानालोक से सम्पन्न होगा तथा जिसके प्रति आपके मन में आदर का उच्च भाव होगा, वह भी आपका गुरु होगा। इस प्रकार एक व्यक्ति के अनेक गुरु हो सकते हैं। जो आपको मंत्र प्रदान करे वह आपका मंत्र गुरु होता है। वही आपको आध्यात्मिक शिक्षा देता है।

**प्रश्नः** गुरु से प्रत्यक्ष मंत्र ग्रहण करने से क्या लाभ होता है?

जब गुरु द्वारा बोला गया मंत्र शिष्य सुनता है तो उसकी आत्मा उसे नोट कर लेती है। यह मंत्र बीज रूप में आत्मा में स्थापित हो जाता है। जैसे-जैसे मंत्र साधना में उसकी प्रगति होती है, वह बीज वृक्ष बनता जाता है।

**प्रश्नः** तांत्रिक तथा वैदिक मंत्र में क्या अन्तर है?

तांत्रिक मंत्र ब्रह्माण्ड की प्रकृति को गहराई से प्रभावित करते हैं और साथ ही वे मानव अभीप्सित कामनाओं की पूर्ति भी करते हैं। वे बड़े शक्तिशाली होते हैं। जब आप उनका अभ्यास करते हैं तो आपके आसपास के वातावरण में एक प्रचंड शक्ति क्षेत्र निर्मित हो जाता है।

वैदिक मंत्र इष्ट पूजन तथा आत्म-साक्षात्कार के लिए प्रयुक्त होते हैं। वे साधक की प्रकृति में परिवर्तन लाकर उसे अधिकाधिक पवित्र तथा भक्तियुक्त करते हैं।

**प्रश्नः** क्या यह आवश्यक है कि मंत्र का स्पष्ट और सही उच्चारण किया जाये?

यदि आप किसी अन्य प्रकार के मंत्रोच्चार में गलती करते हैं तो इससे कोई विशेष नुकसान नहीं होगा, परन्तु तांत्रिक मंत्रों का एकदम सही और स्पष्ट उच्चारण करना अत्यन्त आवश्यक है।

यदि आप किसी मंत्र को पूरी सजगता के साथ सुनें तो उसका सही उच्चारण कर सकते हैं। परन्तु हो सकता है कि आप प्रारम्भ में ऐसा न कर पायें। यदि आप किसी ध्वनि

अथवा राग को अनेक बार सुनें तो आप उसे अपने मन में सोच सकते हैं, भले ही गा न सकें। इसी प्रकार मंत्र के उच्चारण को

सुन सकते हैं, भले ही उसे जोर से दोहरा न पायें। आप इस प्रकार मंत्र को मन में धारण कर सकते हैं और यही पर्याप्त होगा।

**प्रश्नः** क्या मंत्र की बौद्धिक व्याख्या महत्वपूर्ण है?

मंत्र शक्तिशाली ध्वनि-तरंगों का पुंज है। अतएव उसकी बौद्धिक व्याख्या करना अथवा सुमझाना कर्तई आवश्यक नहीं है। मंत्र की ध्वनि-तरंगें मस्तिष्क तथा बाह्य ब्रह्माण्डीय वातावरण की प्रभावित करती हैं, न कि उसका शास्त्रीय अर्थ। अनेक मंत्र ऐसे हैं, जिनका अर्थ हम नहीं जानते। प्रत्येक मंत्र के दो पक्ष होते हैं - ध्वनि तथा स्वरूप। जैसे, जब आप ॐ का उच्चारण करते हैं तो वह ध्वनि होती है परन्तु जब आप उसे लिखते हैं तो वह उसका स्वरूप होता है। मंत्र का सर्वाधिक शक्तिशाली पक्ष उसकी ध्वनि है।

प्रत्येक शिक्षित व्यक्ति के मन में लिपि की एक परिकल्पना होती है। यदि आप शिक्षित नहीं हैं तो आपके मन में मंत्र के स्वरूप की परिकल्पना नहीं हो सकती। ऐसी स्थिति में आप उसकी ध्वनि ही ग्रहण करेंगे। अब समस्या यह है कि आप ध्वनि से स्वरूप को विलग नहीं कर पाते। यदि ॐ को दोहराते हैं तो न केवल उसकी ध्वनि अपितु उसका स्वरूप प्रत्यक्ष होने लगता है। जब आप मंत्र का अभ्यास करें तो धीरे-धीरे उसके स्वरूप के विचार को छोड़कर ध्वनि को पकड़ने का प्रयास कीजिये।

**प्रश्नः** अपने नित्यप्रति के कार्यकलापों में मंत्राभ्यास को कैसे शामिल करें?

प्रातःकाल अन्य लोगों के जागने से पूर्व तथा रात्रि में सोने के पूर्व प्रतिदिन कम से कम दस मिनट अपने मंत्र का जप करना चाहिए। इसके अतिरिक्त दिन में अपने कार्यों को करते हुए थोड़ी - थोड़ी देर बाद उसे मानसिक रूप से दोहराते रहना चाहिये, भले ही आप कितने ही व्यस्त हों।

**प्रश्नः** मंत्राभ्यास में नियमितता का क्या महत्व है?

मंत्र इतना शक्तिशाली होता है कि वह आपके प्रारब्ध को भी बदल सकता है। इतना ही नहीं, आपकी अर्थिक तथा भौतिक परिस्थिति में भी आमूल परिवर्तन ला सकता है। यदि आप जीवन में परिवर्तन चाहते हैं तो नियमित रूप से मंत्र साधना कीजिये।

**प्रश्नः** प्रारम्भ में मंत्र को जोर-जोर से दोहराने के लिए क्यों कहा जाता है?

यदि आपका मन स्थिर तथा एकाग्र नहीं है और यदि आप मंत्र का मानसिक जप करते हैं तो आपका मन अत्यधिक

चंचल और बेचैन हो जाएगा। इसलिये प्रारम्भ में मंत्र को धीरे उच्चारण करते हैं तो आप अपनी स्वयं की गति तथा लय जोर-जोर से दोहराने के लिए कहा जाता है। प्रारंभिक का अनुसरण करते हैं। ॐ अ, उ और म तीन ध्वनियों के मेल अवस्था में मंत्र का शब्दिक अभ्यास मन की चंचलता को से बना है। व्याकरण के नियमानुसार इन तीनों ध्वनियों का कम करता है।

**प्रश्नः ॐ के सामूहिक उच्चारण का क्या अर्थ है?**

समूह में ॐ के उच्चारण से प्रत्येक व्यक्ति का मन स्थिर और एकाग्र होता है। ॐ का दो तरह से उच्चारण किया जाता है। एक में प्रत्येक व्यक्ति जोर से ओ... म... म... म... करते हैं?

का उच्चारण करता है और दूसरे में प्रत्येक धीरे-धीरे ॐ कहता है। जब समूह में एक साथ ॐ का उच्चारण करते हैं तो आपस में उनके मन एक दूसरे पर निर्भर होते हैं। जब धीरे-

तथा उ मिलकर ओ बनता है। इस तरह सही उच्चारण ओ... ओ... ओ... म... म... म... होगा।

**प्रश्नः क्या आप मंत्र-सिद्धि के बाद मंत्र के बिना ध्यान**

**मंत्र ध्यान का उपकरण है। जब मन शांत और स्थिर होता है तथा ध्यान तैल घारावत् अदृट लगता है तो मंत्र पीछे छूट जाता है। अतः मंत्र ध्यान का बाह्य उपादान है।**

## ००० सिद्ध महालक्ष्मी साधना ०००

सिद्ध महालक्ष्मी की साधना दुःख दारिद्र्य नाश हेतु और रुके हुए कार्यों की सिद्धि हेतु सम्पन्न की जाती है, देवी के इस स्वरूप के सम्बन्ध में लिखा है कि श्वेत वस्त्र धारण करने वाली शुभमयी चतुर्भुजा सिद्ध लक्ष्मी कमल, कलश, बेल और शंख धारण किये हुए, बेल की उन्नति प्रतीक है, शंख विजय प्रतीक, कमल धन प्रतीक, कलश पीड़ा का निवारण प्रतीक है।

सिद्ध महालक्ष्मी की साधना साधक को किसी भी बुधवार को प्रातः कर, 15 दिन तक निरन्तर सम्पन्न करनी चाहिए।

**विनियोग - ॐ अस्य श्रीसिद्ध महालक्ष्मी मंत्रस्य हिरण्यगर्भत्रिष्ठिः अनुष्टुप् छन्दः श्रीमहाकाली महालक्ष्मी महासरसवती देवता: श्री बीजे हीं शक्तिः क्लीं कीलकं मम सर्वकलेश्पीडापरिहारार्थ सर्वदुःखदारिद्र्य नाशानार्थं सर्वकार्यसिद्धयर्थं च श्रीसिद्धलक्ष्मी मंत्रजये विनियोगः।**

इस प्रकार संकल्प लेकर ताम्र पात्र में अथवा थाली में सिद्ध महालक्ष्मी यंत्र स्थापित कर यंत्र को धी, दूध तथा जल से धो कर स्वच्छ वस्त्र से पौछ कर स्वस्तिक बना कर मध्य में एक पुष्प रख कर निम्न आसन मंत्र से आसन मंत्र देकर चार शक्ति चक्र स्थापित करें फिर ज्यारह बत्तियों का दीपक जलाएं, साधक 11 दीपक अलग-अलग भी जला सकते हैं।

**आसन मंत्र - ॥३०० सिद्ध महालक्ष्मी पद्मपीठाय नमः ॥**

पूर्व की ओर मुङ्ह कर बैठें, सामने केवल यंत्र व चक्र हीं स्थापित होने चाहिए तथा लक्ष्मी की तस्वीर अथवा चित्र रखें। शास्त्रोक्त कथन है कि केवल शक्कर का नैवेद्य ही महालक्ष्मी को अर्पित करना चाहिए और अब इस सिद्ध महालक्ष्मी देवी का मंत्र 108 बार यह जप करना चाहिए, स्फटिक माला से ही सम्पन्न करें।

**सिद्ध महालक्ष्मी मंत्र - ॥३०० श्रीं हीं क्लीं श्रीं सिद्धमहालक्ष्म्यै नमः ॥**

इसी प्रकार यह विधान 15 दिन तक निरन्तर मंत्र अनुष्ठान सम्पन्न कर ब्राह्मण भोजन कराएं और संभव हो तो जप का दशांश हवन करें।

जैसा कि विनियोग में लिखा है, सिद्ध महालक्ष्मी साधना से सर्व क्लेश पीड़ा का परिहार्य होता है, दुःख दारिद्र्य का नाश होकर साधक के कार्य सिद्ध होते हैं, इसमें कोई संशय नहीं है। इस मंत्र को तो साधक नित्य प्रति जप करें तो भी अधिक उत्तम है।

साधना सामग्री - 300/-

लौकिकी का एक अद्भुत तंत्र

# वाहालक्ष्मी तंत्र

छोटे लौकिक हृषि नृशंक में प्राप्ति किया जाता है



लक्ष्मी तंत्र से सम्बन्धित ग्रन्थों में कामेश्वरी लक्ष्मी का विशेष विवेचन आया है, कामेश्वरी लक्ष्मी का तात्पर्य है कामना को पूर्ण करने वाली लक्ष्मी, मनुष्य की सबसे बड़ी कामना दरिद्रता और कर्ज समाप्त करने की रहती है। हस्त नक्षत्र में इस अनुष्ठान को प्रारम्भ करने से यह कामना अवश्य पूर्ण होती है -

लक्ष्मी साधना के सम्बन्ध में जो विधियां तंत्र साहित्य में तथा अन्य शास्त्रों में दी गयी हैं, साधक उनका पालन पूर्णतया नहीं करते, कुछ दिन मंत्र अनुष्ठान करने के पश्चात् उसे छोड़ देते हैं, कई बार तो साधना में उचित सामग्री अथवा उचित विधि का अभाव होने से ही इस साधना में सफलता नहीं मिलती। लक्ष्मी साधना में कुछ बातों का ध्यान रखना आवश्यक है -

- ◆ लक्ष्मी साधना में आसन ऊनी हो और उस पर पीला रेशमी वस्त्र बिछा कर लक्ष्मी पूजा सम्पन्न करनी चाहिए।
- ◆ लक्ष्मी साधना में मंत्र जप केवल कमलगड्ढा माला से ही सम्पन्न किया जाता है, तथा कमलगड्ढा का ही अर्पण किया जाना उचित रहता है।
- ◆ यदि कमल के पुष्प की व्यवस्था हो सके तो वह पुष्प अर्पित करना चाहिए।
- ◆ साधक की मुद्रा पद्म मुद्रा होनी चाहिए, अर्थात् दोनों हाथों की उंगलियों तथा अंगूठों को मिला कर खुले हुए कमल के आकार की मुद्रा को पद्म मुद्रा कहा जाता है, उसी मुद्रा में लक्ष्मी आह्वान तथा प्रार्थना करनी चाहिए।
- ◆ लक्ष्मी साधना में दूब (दुर्वा) का विशेष महत्व है और इस दुर्वा को दूध में डूबो कर देवी को अवश्य अर्पित करें।
- ◆ ऊपर लिखे गये नियम सभी प्रकार की लक्ष्मी साधनाओं के लिए आवश्यक भी हैं, इसके अतिरिक्त निश्चित संख्या में मंत्र जप इत्यादि करना चाहिए, नित्य ताजा शक्कर का प्रसाद, खीर, बताशे आदि देवी महालक्ष्मी को अर्पित
- ◆ लक्ष्मी साधना में साधक को अपना मुंह पश्चिम दिशा प्रसाद, खीर, बताशे आदि देवी महालक्ष्मी को अर्पित

किया जाता है।

सामग्री -

इस विशिष्ट प्रयोग हेतु केवल 'श्री कामेश्वरी महालक्ष्मी यंत्र' तथा 'कमलगद्वा माला' आवश्यक है।

साधना - विधान

अर्द्धरात्रि को स्नान कर शुद्ध वस्त्र पहन कर ऊनी आसन पर पीला रेशमी वस्त्र बिछा कर पश्चिम दिशा की ओर मुंह कर साधक अपने पूजा स्थान में बैठें, अपने सामने एक लकड़ी के बांजोट पर पीला वस्त्र बिछा कर उस पर चावल की ढेरी बना कर ताम्र कलश स्थापित करें, कलश में जल डालें तथा इसके साथ ही ग्यारह कमल गद्वा तथा दूब डालें, तत्पश्चात् अपने सामने एक तांबे का दीपक जलाएं, इस दीपक में जो बत्तियाँ हों वे कम से कम पांच अवश्य हों, तथा इससे अधिक बत्तियों का प्रयोग करें तो वे विषम संख्या में ही होनी चाहिए। दीपक में शुद्ध धी का ही प्रयोग करें।

अब साधक चन्दन तथा अबीर गुलाल से कलश का पूजन कर दूसरे ताम्र पात्र में श्री कामेश्वरी महालक्ष्मी यंत्र स्थापित करें, चन्दन, गुलाल तथा सिन्दूर से यंत्र का पूजन करें तथा यंत्र के आगे पुष्प स्थापित करें।

अब साधक पद्म मुद्रा में बैठ कर प्रसाद अर्पित करते हुए प्रार्थना मंत्र का इक्यावन बार उच्चारण करें।

प्रार्थना मंत्र

॥ॐ महालक्ष्मी नमस्तुभ्यं, गृह-वासी करोसि त्वम् ॥

अब साधक जल को अपने नेत्रों में लगावें तथा सामान्य मुद्रा में बैठ कर कमलगद्वा माला से इस विशिष्ट कामेश्वरी बीज मंत्र का जप करें। विशेष अनुष्ठान हेतु 41 हजार मंत्र जप का विधान है, इसी के अनुसार नित्य प्रति जप संख्या निश्चित कर लें।

मंत्र

॥ॐ महालक्ष्मी श्रीं श्रीं श्रीं कामशीजाय फट् ॥

इस प्रकार मंत्र जप पूर्ण कर प्रसाद ग्रहण करें और जितने दिन भी यह अनुष्ठान चल रहा हो, उतने दिन तक एक समय भोजन करें।

इस अनुष्ठान की पूर्णता होने पर महालक्ष्मी की पूजा से साधक को निश्चित फल प्राप्ति अवश्य होती ही है और कितना ही घोर दरिद्र हो, कर्जदार हो, उसकी दरिद्रता तथा कर्ज समाप्त अवश्य होता है।

### दुःखों का बोझ

बात बहुत पुरानी है पृथ्वी पर चारों ओर से संकट ही संकट आ गया, लोग आपस में लड़ने लगे तथा लगा कि पृथ्वी पर दुःख की स्थितियाँ अत्यधिक बढ़ गईं। थोड़े समय तक तो विचार करके शांत रहे कि शायद ये स्थितियाँ सुधर जाएंगी। लेकिन स्थिति सुधरते नहीं देखकर कुछ तथाकथित ज्ञानवान और समझदार व्यक्तियों ने विचार किया कि अब समय आ गया है कि अपनी बात और अपने दुःख भगवान के सामने स्पष्ट रूप से रख दिए जाएं और उनसे ही दुःखों के निवारण का उपाय पूछा जाए।

जैसा की पृथ्वी पर रिवाज है, उन्होंने एक जुलूस रैली रूप में बनाया तथा नारे लगाते हुए स्वर्ग में पहुंचे।

उनके नारों की आवाज सुनकर भगवान ने उन्हें बुलाया और पूछा कि इतनी लम्बी यात्रा करने का उद्देश्य क्या है? मनुष्यों ने चिल्ला-चिल्ला कर अपनी समस्याओं के बारे में कहा और यह भी बताया कि यदि इन समस्याओं का समाधान नहीं हुआ तो पृथ्वी पर अफरा-तफरी मच जाएगी।

भगवान ने कहा, क्या आप अपने-अपने दुःखों का बोझ लेकर आए हैं?, उस बोझे को थोड़े दिन के लिए मेरे पास छोड़ दो, सारे व्यक्ति प्रसन्न हो गए और अपने दुःखों का बोझ वहीं पटक दिया और भगवान ने कहा कि कुछ दिन बाद वापस आना, मैं सबका बोझ थोड़ा-थोड़ा हल्का कर दूंगा क्योंकि संसार में जीना है तो थोड़े-बहुत दुःख तो रहेंगे ही। सारे व्यक्ति प्रसन्न हो गये और जब कुछ दिनों बाद वापस भगवान के पास लौटे तो भगवान ने कहा कि पास वाले कमरे में दुःखों के बोझ के बण्डल पड़े हैं। इनमें जो गद्वार तुम्हें सबसे हल्का लगे उसे लेकर चले जाओ।

खुशी-खुशी हर व्यक्ति उस कमरे में गया और उसने एक-एक गद्वार उठा लिया।

आश्चर्य की बात यह है कि प्रत्येक व्यक्ति ने दुःखों का वही गद्वार उठाया जो गद्वार वह छोड़ गया था। इससे यह बात सिद्ध होती है कि सुख और दुःख एक मानसिक स्थिति है। दुःखों का बोझ जब भारी अनुभव करते हैं तो ज्यादा अनुभव होता है और जब उसे हल्का अनुभव करते हैं तो उसे दुःख कम मालूम होते हैं तथा समस्याओं के समाधान मिल जाते हैं।

# छात्राचार्यकृष्णपाणी

## मेष -

मान-सम्मान एवं प्रतिष्ठा की दृष्टि से यह माह आपके लिये बहुत लाभप्रद सिद्ध होगा। इस माह आप विभिन्न प्रकार के आयोजनों में भाग लेंगे, जिससे समाज, मित्रों, परिचितों में आपकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी। आपको आपके किसी कार्य के लिये सम्मान भी प्राप्त हो सकता है। आपको कोई बड़ा कार्य भी मिल सकता है, जिससे आपकी आर्थिक स्थिति और अधिक परेशान भी रह सकते हैं। आप 'कुबेर साधना' (अगस्त 2009) करें। शुभ तिथियां - 3, 9, 10, 13, 30 हैं।

## वृष -

इस माह आपको शांत एवं धैर्यशील बने रहने की आवश्यकता है। आपको लोगों की ईर्ष्या एवं विरोध का सामना करना पड़ सकता है। वैसे आपको नुकसान तो कुछ नहीं होगा, परन्तु आप मानसिक रूप से दुःखी हो सकते हैं। विद्यार्थियों एवं बेरोजगारों के लिये समय कठिन होगा। महिलाओं को परिवार में वाद-विवाद एवं उलझन से बचना चाहिये। आप 'हरिद्रा गणपति अनुष्ठान' (जून 2009) करें। शुभ तिथियां - 5, 7, 12, 18, 19 हैं।

## मिथुन -

ग्रह नक्षत्रों की स्थिति के अनुसार इस माह आपको नुकसान एवं निराशा का सामना करना पड़ सकता है। आपके बनते-बनते कार्य अटक या बिगड़ सकते हैं। आप किसी विवाद अथवा परेशानी में भी फंस सकते हैं। इस विपरीत परिस्थिति में आपको शुभचितकों का पूरा लाभ प्राप्त होगा। माह के मध्य परेशानियां धीरे-धीरे समाप्त होंगी। आपको आय के नये स्रोत मिल सकते हैं। आप मानसिक शांति हेतु यात्रा पर भी जा सकते हैं। महिलाओं को घर-परिवार में शांति रखनी चाहिए। आप 'शत्रुमर्दन राहु साधना' (अगस्त 2009) करें। शुभ तिथियां - 9, 13, 14, 16, 17 हैं।

## कर्क -

पिछले माह प्राप्त धन, सम्पत्ति एवं सफलताओं का प्रभाव इस माह भी आपके जीवन पर देखने को मिल सकता है। आप अपने आप में एक नई ऊर्जा का अनुभव करेंगे। आप नई योजनाओं एवं व्यापार में नये क्षेत्रों के बारे में विचार कर सकते हैं परन्तु आपके लिये श्रेष्ठ होगा कि आप जो भी कार्य करें, भविष्य को ध्यान में रखते हुए तथा शुभचितकों से विचार विर्मश के पश्चात ही करें। सुख के पश्चात आने वाला दुःख बहुत घातक होता है। आप 'रतिप्रिया यक्षिणी साधना' (जुलाई 2009) करें। शुभ तिथियां - 5, 10, 11, 16, 20 हैं।

## सिंह -

आत्म चिंतन के पश्चात् आप अपनी आदतों एवं जीवनशैली में परिवर्तन करने में सफल हो सकते हैं। इसका प्रभाव आप परिवारिक सुख-शांति एवं आपके पराक्रम में वृद्धि के रूप में देख सकेंगे। गृहस्थ जीवन में, परिवार में लम्बे समय से अगर आपको अपने स्वास्थ्य पर भी विशेष ध्यान देने की कोई मन-मुटाव चल रहा है तो आपसी समझ एवं शांति पूर्वक आवश्यकता होगी। छोटी सी लापरवाही भी नुकसानदायक हो सकती है। विद्यार्थियों एवं बेरोजगारों के लिये समय कठिन होगा। महिलाओं को अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना होगा अन्यथा वे गंभीर बीमार हो सकती हैं। आप 'इच्छापूर्ति गोविन्द प्रयोग' (जुलाई 2009) करें। शुभ तिथियां - 4, 13, 18, 22, 29 हैं।

## कन्या -

इस माह आप काफी व्यस्त रह सकते हैं, परन्तु आपको इसका उतना लाभ प्राप्त नहीं होगा। आप अपनी व्यस्तता के कारण स्वयं को भी पूरा समय नहीं दे पायेंगे। इस माह आपकी मुलाकात आपके किसी पुराने अथवा शुभचितक मित्र से होगी, जो आपके लिये लाभप्रद सिद्ध हो सकती है। आप किसी यात्रा पर भी जा सकते हैं। इस माह किसी को रुपया उधार नहीं दे, अन्यथा आपका रुपया फंस सकता है। फंसे हुए धन को प्राप्त करने के लिये आपको काफी परिश्रम करना पड़ेगा। आप 'अमृत्व साधना' (जून 2009) करें। शुभ तिथियां - 5, 10, 14, 23, 24 हैं।

## तुला -

इस माह आपके लिये ग्रह नक्षत्रों की स्थिति थोड़ी प्रतिकूल नजर आ रही है। बीच-बीच में परिवारिक बाधाएं एवं विरोधी हावी होते नजर आएंगे, जिसके कारण आप अपने लक्ष्य एवं चिन्तन से भटक सकते हैं। आपके लिये श्रेष्ठ होगा कि आप ईश्वरीय भक्ति एवं गुरु सेवा में समय व्यतीत करें ताकि आपकी मानसिक शक्ति यथावत् बनी रहे। महिलाओं को इस माह परिवारिक जिम्मेवारियों पर ध्यान देने की जरूरत है। जिससे कि परिवार में शांति और आपसी मेल-मिलाप बना रहे। आप 'तांत्रोक्त पापांकुश साधना' (जुलाई 2009) करें। शुभ तिथियां - 7, 16, 17, 21, 27 हैं।

## वृष्टिवक -

यह माह आपके लिये उन्नतिशील सिद्ध होगा। कैरियर एवं भविष्य निर्माण से जुड़ी आपकी इच्छाओं को आप पूर्ण आकार देने में सफलता प्राप्त कर सकते हैं। आकस्मिक धन प्राप्ति के भी प्रबल योग इस माह आपके लिये बन रहे हैं। पुराना उधार दिया हुआ रुपया आपको प्राप्त होने की भी संभावना है। माह के मध्य में आपको किसी कारण कानूनी बाधा का सामना करना पड़ सकता है। राजकीय कार्यों में आपको नुकसान भी हो सकता है। विद्यार्थियों के लिये समय उत्तम होगा। आप 'उच्छिष्ठ चाण्डालिनी साधना' (अगस्त 2009) करें। शुभ तिथियां - 2, 8, 19, 20, 23, 30 हैं।

## धनु -

इस माह आपके जीवन में कुछ नया होने के बहुत योग बन रहे हैं, जैसे कि जीवन में किसी नये व्यक्ति का आगमन, नयी गाड़ी, नया घर, नये मित्र इत्यादि। इस माह आपके जीवन में परिवर्तन के विशेष योग बन रहे हैं। आप किसी नये स्थान पर भी जीवकोपार्जन हेतु जा सकते हैं। उच्च शिक्षा में लगे व्यक्तियों को इस माह उनके कार्यों हेतु पारितोषिक भी प्राप्त हो सकता है। प्रेम-प्रसंगों की दृष्टि से यह माह बहुत महत्वपूर्ण सिद्ध होगा। कुंवरे युवक-युवतियों को भी योग्य साथी प्राप्त हो सकते हैं। आप 'ललिताम्बा साधना' (जुलाई 2009) करें। शुभ तिथियां - 3, 4, 16, 26, 30 हैं।

## भक्त -

यह माह आपके लिये सामान्य ही प्रतीत होगा। आपके लिये श्रेष्ठ होगा कि आप स्वयं की प्रगति एवं सफलता पर गर्व नहीं करें। आप अपने व्यवहार से अपने मित्रों एवं शुभ चिन्तकों से दूर हो सकते हैं। विरोधी एवं शत्रु भी आपके व्यवहार के कारण आपको नुकसान पहुंचाने का प्रयत्न कर-

**योग:** सिद्ध योग - 16, 30 सितम्बर / 3, 9, 17 अक्टूबर ☆ सर्वार्थ सिद्ध योग - 3, 8, 11, 20, 24 सितम्बर / 6, 13 अक्टूबर ☆ अमृत सिद्ध योग - 8, 20 सितम्बर / 6, 21 अक्टूबर ☆ द्विपुष्कर योग - 1 सितम्बर / 20 अक्टूबर ☆ त्रिपुष्कर योग - 10 अक्टूबर ☆

सकते हैं। महिलाओं को इस माह परिवार में चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है। गृहस्थ जीवन में भी बाधाएं एवं परेशानियां आ सकती हैं। प्रेम-प्रसंगों से स्वयं को दूर ही रखें। आप 'शत्रुमर्दन राहु प्रयोग' (अगस्त 2009) करें। शुभ तिथियां - 1, 5, 7, 28, 30 हैं।

## कुंभ -

माह का प्रारम्भ आपके लिये कठिन अवश्य होगा परन्तु बाद में आपको अनुकूलता प्राप्त होगी। आपको अपने शत्रुओं एवं विरोधियों पर नजर रखने की आवश्यकता है। वे आप पर घात लगाकर नुकसान पहुंचाने का प्रयत्न कर सकते हैं। माह के मध्य आप किसी यात्रा पर भी जा सकते हैं जो कि आपके लिये भाग्योदयकारी ही सिद्ध होगी। आकस्मिक धन प्राप्ति के भी विशेष योग इस माह आपके लिये बन रहे हैं। इस माह आपको पैतृक सम्पत्ति प्राप्त होने के भी संभावना है। आप 'शत्रुबाधा शांति कृष्ण साधना' (जुलाई 2009) करें। शुभ तिथियां - 4, 5, 9, 26, 27 हैं।

## मीन -

इस माह आपको अपने व्यापार एवं व्यवसाय में अनुकूलता के साथ ही साथ आर्थिक क्षेत्र में भी लाभ प्राप्त होने के योग है। नौकरी पेशा व्यक्तियों को उन्नति के विशेष अवसर प्राप्त होंगे। उनके अधिकारी उनके कार्यों एवं व्यक्तित्व की प्रशंसा करेंगे। आपके जीवन स्तर में भी महत्वपूर्ण सुधार होगा। इस माह आपका सम्पर्क प्रभावशाली व्यक्तियों से स्थापित हो सकता है जो कि आपके भविष्य निर्माण में विशेष योगदान प्रदान करेंगे। विद्यार्थियों को भी सफलता के नये रास्ते प्राप्त होंगे। आप 'अमृत्व साधना' (जून 2009) करें। शुभ तिथियां - 1, 2, 7, 11, 28 हैं।

## इस मास के व्रत, पर्व एवं त्यौहार

26 सित.	आश्विन शु. -08	शनिवार	दुर्गाष्टमी
27 सित.	आश्विन शु. -09	रविवार	दुर्गानवमी
28 सित.	आश्विन शु. -10	सोमवार	विजयादशमी
29 सित.	आश्विन शु. -11	मंगलवार	पापांकुशा एकादशी
01 अक्टू.	आश्विन शु. -12	गुरुवार	प्रदोष ब्रत
3 अक्टू.	आश्विन शु. -15	शनि	शरद पूर्णिमा
11 अक्टू.	कार्तिक कृ. -08	रविवार	अहोई अष्टमी
14 अक्टू.	कार्तिक कृ. -11	बुधवार	रमा एकादशी

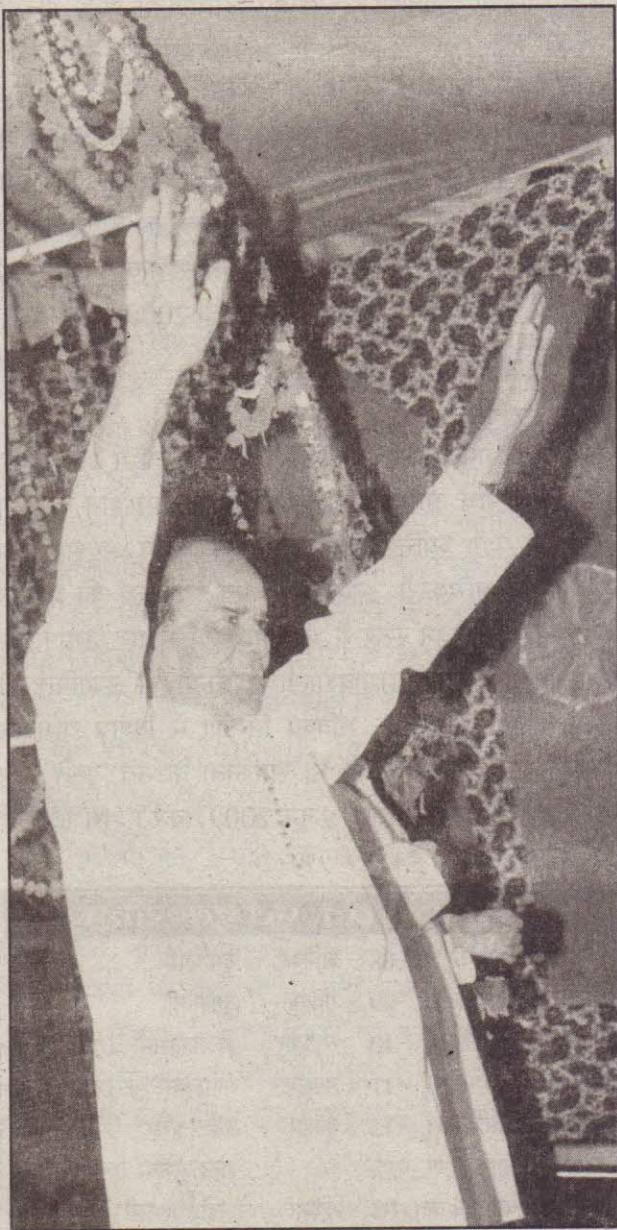
**ॐ** साधक, पाठक तथा सर्वजन सामान्य के लिए समय का वह रूप यहां प्रस्तुत है; जो किसी भी व्यक्ति के जीवन में उन्नति का कारण होता है तथा जिसे जान कर आप स्वयं अपने लिए उन्नति का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

नीचे दी गई सारिणी में समय को श्रेष्ठ रूप में प्रस्तुत किया गया है - जीवन के लिए आवश्यक किसी भी कार्य के लिये, चाहे वह व्यापार से सम्बन्धित हो, नौकरी से

सम्बन्धित हो, घर में शुभ उत्सव से सम्बन्धित हो अथवा अन्य किसी भी कार्य से सम्बन्धित हो, आप इस श्रेष्ठतम् समय का उपयोग कर सकते हैं और सफलता का प्रतिशत 99.9% आपके भाव्य में अंकित हो जायेगा।

# समय हैं

**ब्रह्म मुहूर्त का समय प्रातः 4.24 से 6.00 बजे तक ही रहता है।**



वार/दिनांक	श्रेष्ठ समय
रविवार (सितम्बर 6, 13, 20, 27) (अक्टूबर 4)	दिन 07:36 से 10:00 तक 12:24 से 02:48 तक 04:24 से 04:30 तक रात 07:36 से 09:12 तक 11:36 से 02:00 तक
सोमवार (सितम्बर 7, 14, 21, 28) (अक्टूबर 5)	दिन 06:00 से 07:30 तक 09:00 से 10:48 तक 01:12 से 06:00 तक रात 08:24 से 11:36 तक 02:00 से 03:36 तक
मंगलवार (सितम्बर 8, 15, 22, 29) (अक्टूबर 6)	दिन 06:00 से 07:36 तक 10:00 से 10:48 तक 12:24 से 02:48 तक रात 08:24 से 11:36 तक 02:00 से 03:36 तक
बुधवार (सितम्बर 9, 16, 23, 30) (अक्टूबर 7)	दिन 06:48 से 11:36 तक रात 06:48 से 10:48 तक 02:00 से 04:24 तक
गुरुवार (सितम्बर 10, 17, 24) (अक्टूबर 1)	दिन 06:00 से 06:48 तक 10:48 से 12:24 तक 03:00 से 06:00 तक रात 10:00 से 12:24 तक
शुक्रवार (सितम्बर 11, 18, 25) (अक्टूबर 2)	दिन 09:12 से 10:30 तक 12:00 से 12:24 तक 02:00 से 06:00 तक रात 08:24 से 10:48 तक 01:12 से 02:00 तक
शनिवार (सितम्बर 5, 12, 19, 26) (अक्टूबर 3)	दिन 10:48 से 02:00 तक 05:12 से 06:00 तक रात 08:24 से 10:48 तक 12:24 से 02:48 तक 04:24 से 06:00 तक

# गृह छन्नाने नहीं वराहमिहि॒र कै छहा है

किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्ण प्रत्येक व्यक्ति के मन में संशय-असंशय की भावना रहती है कि यह कार्य सफल होगा या नहीं, सफलता प्राप्त होगी या नहीं, वाधाएं तो उपरिथित नहीं हो जायेगी, पता नहीं दिन का प्रारम्भ किस प्रकार होगा, दिन की समाप्ति पर वह स्वयं को तनावरहित कर पायेगा या नहीं? प्रत्येक व्यक्ति कुछ ऐसे उपाय अपने जीवन में अपनाना चाहता है, जिनसे उसका प्रत्येक दिन उसके अबुकूल एवं आनन्दद्युक्त बन जाय। कुछ ऐसे ही उपाय आपके समक्ष प्रस्तुत हैं, जो वराहमिहिर के विविध प्रकाशित ग्रंथों से संकलित हैं, जिन्हें यहां प्रत्येक दिवस के अबुसार प्रस्तुत किया गया है तथा जिन्हें सम्पूर्ण करने पर आपका पूरा दिन पूर्ण सफलतादायक बन सकेगा।

## अकट्टूबर

1. सदगुरु को सफेद पुष्प अर्पित करते हुए, 'ॐ नि॑ निखिलेश्वराय नि॑ उ॒' मंत्र का 21 बार जप करें।
2. 'प्रज्ञा गुटिका' (न्यौछावर 75/-) को जेब में रखकर कार्य पर जाएं। सफलता प्राप्त होगी।
3. निम्न मंत्र का 21 बार उच्चारण कर ही घर से बाहर जाएं - 'ॐ हाँ हीं हूँ नमः'
4. प्रातः सूर्योदय के समय जल में अक्षत, पुष्प, कुंकुम डालकर उगते हुए सूर्य को अर्घ्य दें।
5. आज पूर्ण सफलता हेतु 11 बार निम्न मंत्र का जप करें- 'ॐ श्रीं हीं कर्त्तौं ज्लौं गं गणपतये वर वसदाय नमः'
6. 'हुं जानकी वल्लभाय स्वाहा' मंत्र का 21 बार जप करें एवं भगवान राम का स्मरण करें।
7. आज विवाहित स्त्रियां 'ॐ श्रीं श्रीं सर्व सौभग्यम् सिद्धि॑ श्रीं श्रीं उ॒' मंत्र का 51 बार जप करें।
8. विष्णु को धी का दीपक लगाकर, 'ॐ हीं वासुदेवाय सर्व सिद्धिप्रदाय नमः' मंत्र का 5 मिनट जप करें।
9. भगवती जगदम्बा का पूजन सम्पन्न कर नौ कन्याओं को भोजन कराएं।
10. कुंकुम से पीपल के पत्ते पर स्वस्तिक बनाकर शनि मंदिर में चढ़ा दें।
11. 'ॐ हीं दिवाकराय नमो नमः' मंत्र का पांच बार जप करते हुए उगते सूर्य को जल अर्पित करें।
12. शिव मंदिर में काले उड़द का दान करें।
13. प्रातः काल 15 मिनट गुरु ध्यान व चिंतन करें।
14. आज बगलामुखी गुटिका (न्यौछावर 80/-) को धारण करें, शत्रुओं पर विजय प्राप्त होगी।
15. आज दही खाकर ही घर से बाहर निकलें।
16. आज धन्वन्तरी साधना और कुबेर साधना करें।
17. पत्रिका में दी गई विधि अनुसार भगवती लक्ष्मी का पूजन सम्पन्न करें तथा लक्ष्मी साधनाएं सम्पन्न कर इस अवसर का लाभ प्राप्त करें।
18. विपत्तियों से रक्षा हेतु 'ॐ त्र्यम्बकाय नमः' मंत्र का 21 बार जप करें।
19. प्रातः काल गुंजरित वेद ध्वनि आडियो कैसेट का श्रवण कर घर से बाहर जाएं।
20. आपद निवारक भैरव गुटिका (75/-) को परिवार के सदस्यों को स्पर्श करा कर दक्षिणा दिशा में फेंक दें।
21. गुरु जन्म दिवस के अवसर पर निखिलेश्वरानंद स्तवन का पाठ करें। दिन भर गुरु स्मरण करें तथा गुरु सेवा का संकल्प लें।
22. 'ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः' मंत्र का प्रातः काल 21 बार जप करें।
23. प्रातः काल 15 मिनट 'ॐ नमः कमलवासिन्दै स्वाहा' मंत्र का जप करें। धन लाभ होगा।
24. प्रातः काल पीली सरसों को अपने सिर पर 5 बार धुमाकर बाहर फेंक दें।
25. 'ॐ ऐं हीं महामैस्वराय' मंत्र का 5 मिनट तक जप करें।
26. एक गिलास पानी लेकर, उसमें 'ऐं' बीज का 11 बार उच्चारण कर जल को अभिमंत्रित कर जल पी लें।
27. 'हनुमान बाण' का ही पाठ कर 'हनुमान यंत्र' (120/-) को जेब में रख कर ही घर से निकलें।
28. भगवान गणपति को नारियल चढ़ायें।
29. चेतना मंत्र की 4 माला जप कर कार्य आरम्भ करें।
30. आज प्रातः काल भगवती जगदम्बा का शास्त्रोक्त पूजन अवश्य सम्पन्न करें।
31. आज प्रातः काल शिवलिंग पर बिल्व पत्र अर्पित करते हुए 'ॐ नमः शिवाय' का 21 बार जप करें।

यम द्वितीया

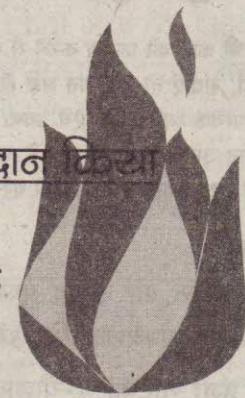
19-10-2009

# आग्निं विद्या

जिसका साक्षात् ज्ञान यमराज ने नचिकेता को प्रदान किया

जिस विद्या की साधना करने से

- \* बालकों की अकाल मृत्यु का दोष समाप्त हो जाता है
- \* स्वयं के पूर्ववर्ती दोष भस्म हो जाते हैं
- \* साधक स्वयं तेजोमय बन जाता है



सम्पन्न करें यमद्वितीया के दिन

## नचिकेता आग्नि विद्या साधना

उपनिषद् जीवन से सम्बन्धित सभी प्रश्नों की व्याख्या को भोजन, जल उसके द्वार पर बैठा रहा, इन तीन दिनों के लेकर लिखे गये हैं। कठोपनिषद् में 'मृत्यु', उसका व्यक्ति से पश्चात् यमराज जब आये तो उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ, उन्होंने कहा कि हे ब्राह्मण देवता! आप अतिथि हैं, आपने तीन दिन तक मेरे घर पर बिना भोजन किये प्रतीक्षा की है, आप मुझसे तीन वर अवश्य मांगें, नचिकेता ने तीन वर मांगे -

नचिकेता महर्षि उद्दालक का पुत्र था। महर्षि ने एक विशेष विश्वजित यज्ञ किया, और अपना सारा धन ब्राह्मणों को दान में दे दिया, इस दान में बूढ़ी, बीमार, मरणासन्न गायें भी थीं, जिन्हें देखकर बालक नचिकेता ने सोचा कि यह तो पाप हो जायेगा, पिता को रोकना चाहिए, उसने अपने पिता से कहा कि हे पिताश्री! आप मुझे दान में किस को देंगे? उसके बार-बार पूछने पर पिता ने क्रोध में कहा कि मैं तुझे मृत्यु को देता हूं, इस पर नचिकेता को बड़ा विचार आया, उसने सोचा कि मैंने ऐसा कौनसा आचरण किया है, जिस कारण मेरे पिता ने मुझे ऐसा वचन कहा! फिर भी उसने पिता को समझाया कि अब आप शोक न करें और सत्य का पालन करते हुए मुझे यमराज के पास जाने की अनुमति दें।

पिता की आज्ञा प्राप्त कर नचिकेता यमपुरी गया, उस समय यमराज कहीं बाहर गये हुए थे, वह तीन दिन तक बिना

1. मेरे पिता मेरे प्रति खेद और क्रोध से रहित हो जाएं, मुझ पर पूर्ण विश्वास कर मेरे साथ प्रेम पूर्वक बात करें।
2. स्वर्गलोक में भय और मृत्यु कुछ भी नहीं हैं, वहां जरा, पीड़ा, वृद्धावस्था भी नहीं है, मुझे इस विद्या की प्राप्ति का ज्ञान कराएं।
3. मेरे हुए मनुष्य के विषय में यह संशय है कि मरने के बाद आत्मा रहता है, और कोई कहता है कुछ भी नहीं रहता, आप मुझे भलीभांति समझाइये, जिससे इस सम्बन्ध में उचित निर्णय ले सकूं।

यहां हम नचिकेता के दूसरे वर के सम्बन्ध में व्याख्या करेंगे, जिसमें उसे यम द्वारा स्वर्गदायिनी विद्या का ज्ञान कराया गया। स्वर्ग का तात्पर्य है, पीड़ा, दुःख, भय से मुक्ति, जीवन इच्छानुसार जिया जाय, अकाल मृत्यु का दोष न हो, अपमृत्यु न हो, यह विद्या ही स्वर्गदायिनी 'अग्नि विद्या' है।

मां-बाप अपने बारे में जितना चिन्तित नहीं रहते, उससे अधिक चिन्तित बच्चों के प्रति रहते हैं, क्योंकि मां-बाप के दोषों का सुफल, कुफल बच्चों को ही भोगना पड़ता है। जीवन प्रक्रिया में बच्चा पूर्ण रूप से विकसित प्राणी नहीं होता है, इस कारण बीमारी का प्रभाव भी उस पर ज्यादा पड़ता है, मृत्यु डर भी बालकों में ही ज्यादा रहता है।

बच्चे ही मां-बाप की आशा का केन्द्र होते हैं, बच्चे उनकी स्वनिर्मित रचना होते हैं, और मां-बाप चाहते हैं कि हमारे जीवन में जो कमियां रहीं वे हमारे बच्चों के जीवन में नहीं रहें। मैं जो जीवन में प्राप्त नहीं कर सका वह हमारा बच्चा प्राप्त करें, हमारी संतान अपने जीवन में पूर्ण उन्नति कर मां-बाप का नाम रोशन करें, बच्चों के सुख में ही मां-बाप का सुख रहता है, और ऐसे में जब कोई बालक अपमृत्यु प्राप्त कर लेता है, तो उसकी पीड़ा मां-बाप के लिए असहनीय होती है, इससे बड़ा दुःख हो ही नहीं सकता।

इसी महत्वपूर्ण प्रश्न पर नचिकेता द्वारा पूछने पर यमराज ने, जो मृत्यु के अधिपति हैं, विस्तार से अग्नि विद्या का ज्ञान दिया। इसको पूर्ण रूप से स्पष्ट किया जाय तो कई ग्रन्थों के समान रचना हो जायेगी। आज पत्रिका के पाठकों के सम्मुख इसके सार रूप में एक विशेष 'नचिकेता प्रयोग' दिया जा रहा है, जो इस यम द्वितीया को सम्पन्न कर जीवन का एक महादोष, जो बालकों की अपमृत्यु, अकाल मृत्यु से सम्बन्धित है, दूर किया जा सकता है।

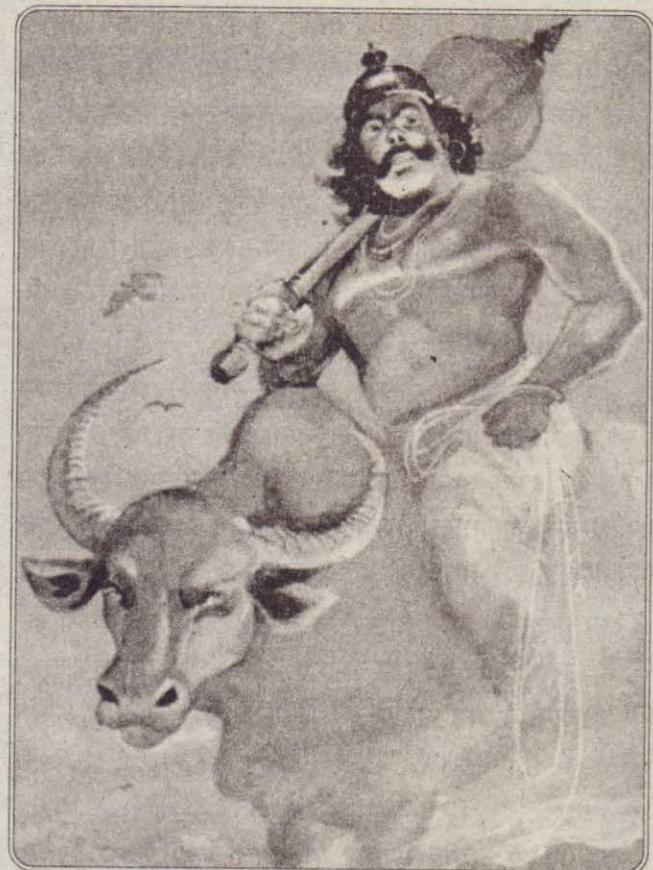
## नचिकेता अग्नि विद्या

मृत्यु का पाश अपने ही सामने काट कर जीवन में स्वर्ग के समान आनन्द प्राप्त करने की क्रिया का नाम ही नचिकेता अग्नि विद्या है। इसमें केवल आवश्यकता है निर्दोष श्रद्धा, अडिग ओज की, आकांक्षा, क्षुद्र प्रलोभन से रहित होकर धैर्य के साथ कार्य करने की, तभी वह आनन्द पूर्ण रूप से बना रहता है।

जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है, इसका आधार अग्नि है, अग्नि को साक्षी रखते हुए अनुष्ठान सम्पन्न किया जाता है, और इस प्रयोग को केवल यम द्वितीया को ही सम्पन्न करना है।

इस साधना हेतु एक अग्नि कुण्ड पात्र, जो कि लौहे का अथवा तांबे का बना हो, व्यवस्था पहले से कर लेनी चाहिए, सुविधानुसार जमीन पर यज्ञवेदी मिट्टी से बना सकते हैं, मूल अनुष्ठान इसी पर सम्पन्न किया जाता है।

इसके अतिरिक्त साधना में 'बारह सविता चक्र', 'हिरण्यमेन



पात्र', 'अग्नि प्रोक्त यंत्र' आवश्यक हैं, साथ ही लाल चन्दन, धूप, दीप, नैवेद्य, सुपारी, तिल, कुश, चावल, दूध, अष्टगंध आवश्यक हैं।

## साधना विधान

यम द्वितीया के दिन प्रातः सूर्योदय से पहले उठकर स्नान कर लाल वस्त्र धारण करें, तथा एक लोटे में जल लें, उसमें चन्दन और सरसों डालें, बाएं हाथ से जल को अपने पूरी देह पर थोड़ा छिड़कर पवित्रीकरण रूप से स्पर्श कराएं तथा शेष जल को बाँई नासिका के स्पर्श कर अपनी देह में भगवान शंकर का चिन्तन करें, अब एक ताम्र पात्र में गन्ध, जल, चन्दन, तिल, कुश, चावल, दूध, अष्टगंध मिलाकर सूर्य की ओर मुंह कर सूर्य नमस्कार कर उसे अर्ध्य अर्पित करें, सूर्य नमस्कार करते समय मंत्रों द्वारा सूर्य का आह्वान करें -

ॐ भूः ब्रह्महृदयाय नमः ।

ॐ भुवः ब्रह्मशिरसे ।

ॐ स्वाः रुद्र शिखायै ।

ॐ भूभुर्व स्वः ज्वलामालिनी शिखायै ।

ॐ महाः महेश्वराय कवचाय ।

ॐ जनः शिवाय नैत्रेभ्यः ।

ॐ तपः तपकाय अस्त्राय फट् ।

इस प्रकार तीन बार अर्पित करने के पश्चात् साधक अपने पूजा स्थान में जाये, तथा संक्षिप्त रूप में गुरु, गणपति पूजन तथा शिव पूजन सम्पन्न करें, तत्पश्चात् अपने हाथ में जल लेकर संकल्प करें, कि मैं अपने बच्चों (यहां बच्चों का नाम लें) के दुःस्वप्न नाश हेतु, आयु वृद्धि हेतु, दृश्यमान और अदृश्यमान बाधाओं के नाश हेतु, अपने गुरु, सूर्य, शिव और गणेश को साक्षी रखते हुए यह अग्नि विद्या सम्पन्न कर रहा हूं, सभी देव मेरी साधना में सहायक हों।

अब अपने सामने एक बाजोट पर सफेद वस्त्र बिछाकर मध्य में 'हिरण्यमेन पात्र' एक चावल की ढेरी पर स्थापित करें, और इसके आगे मंत्र सिद्ध 'अग्नि प्रोक्त यंत्र' रखें, इस पर चन्दन का तिलक लगाएं और पूजन प्रारम्भ करें, एक दीपक बांई ओर तथा एक दाईं ओर जला दें।

रक्त चन्दन से जिस बालक या बालकों हेतु यह साधना कर रहे हैं, उन्हें तिलक अवश्य लगा दें, अब अग्नि मंत्र जप करते हुए 'हिरण्यमेन पात्र' पर चन्दन, सुपारी, दूध, अष्टगंध अर्पित करें -

### अग्नि मंत्र

**॥ॐ नमो भगवते हिरण्यमयं ज्योति रूपं  
आदित्याय अहोवाहिनी अहोवाहिनी स्वाहा ॥**

अब यज्ञ कार्य प्रारम्भ किया जाता है, इस हेतु श्रेष्ठ लकड़ी, उपले (गोबर के कण्डे), तिल, जौ, यज्ञ सामग्री पैकेट की व्यवस्था कर लें, अग्नि जला कर थोड़ी प्रचण्ड होने दें और उसके पश्चात् तिल, जौ से मिश्रित यज्ञ सामग्री से आहुतियां प्रारम्भ की जाती हैं।

सर्व प्रथम अग्नि का बारह स्तोत्र का आह्वान किया जाता है, और निम्न मंत्रों का जप करते हुए आहुति दें -

### ॐ इन्द्राय नमः स्वाहा

ॐ धाताय नमः स्वाहा  
ॐ भगवाय नमः स्वाहा  
ॐ पूषाय नमः स्वाहा  
ॐ मित्राय नमः स्वाहा  
ॐ वरुणाय नमः स्वाहा  
ॐ अर्यमाणाय नमः स्वाहा  
ॐ अंशु नमः स्वाहा  
ॐ विवस्वान् नमः स्वाहा  
ॐ त्वष्टाय नमः स्वाहा  
ॐ सविताय नमः स्वाहा  
ॐ विष्णु नमः स्वाहा

जो आपने गुण एवं चक्रित्र के माता-पिता को भुख्य प्रकान लेके, वही श्रेष्ठ पुत्र है, जो आपने पति की भक्ता मंगल ऊमना लेकर हुए भुख्य-दुःख में काथ कहे, औक लेया, उकाकता तथा श्रील गुणों के युक्त हो, वही श्रेष्ठ पत्नी है, जो भुख्य दुःख दोनों ही क्षितियों में काथ दे, वही श्रेष्ठ मित्र है, ये तीनों ही भुख्य भाव्यवान् को ही जीवन में प्राप्त होते हैं।

अब अग्नि के बारह स्वरूपों का यज्ञ करना है, इस हेतु पूजा सामग्री में लाये हुए 'बारह सविता चक्रों' का प्रयोग करें, ये बारह निम्न स्वरूप हैं -

1. तपिनी, 2. तापिनी, 3. धूमा, 4. मरीचि, 5. ज्वालिनी, 6. रुचि, 7. सुधूमा, 8. भोगदा, 9. विश्वा, 10. बोधिनी, 12. धारिणी, 13. क्षमा।

इन 'बारह सविता चक्रों' की आहुति देने के पश्चात् अग्नि मंत्र बोलते हुए 108 आहुति तिल-जौ की और 108 आहुति धी की देनी है, इस प्रकार कूल 216 आहुतियां सम्पन्न करनी हैं।

इसके पश्चात् उपसंहार आहुति सम्पन्न की जाती है, जिसमें अग्नि देव को दोनों हाथ जोड़ कर प्रार्थना करते हुए निवेदन करें कि - जिस प्रकार अग्नि से अन्धकार का नाश होता है, उसी प्रकार हमारे सभी दोष का दुष्प्रभाव नष्ट करें, यह पूर्ण यज्ञ आपको समर्पित है, ऐसा बोल कर शेष बची सारी सामग्री यज्ञ कुण्ड में अर्पित कर देनी चाहिए।

जब यह प्रयोग पूर्ण हो जाय तो गुरु आरती सम्पन्न करें, तथा सामने पात्र में रखा हुआ जल पूरे घर में छिड़कें, बच्चों पर जल का स्पर्श कराएं तथा प्रसन्न मन से बाह्यण भोजन कराएं अथवा इच्छानुसार दान इत्यादि सम्पन्न करें।

यह अग्नि विद्या रहस्यात्मक विद्या है, और इसका प्रभाव चमत्कारिक रूप से स्पष्ट होता है, सिद्ध होने पर अग्नि देव साक्षात् साधक के भीतर समा कर उसे तेजोमय बना देते हैं, बालकों की अभय रक्षा करते हैं, और जिस प्रकार अग्नि में कोई भी वस्तु भस्म हो जाती है, उसी प्रकार रोग, शोक, दुःख भस्म होकर पूर्णतः समाप्त हो जाते हैं।

साधना सामग्री - 390/-

लक्ष्मी की नियमित साधना आवश्यक है  
लक्ष्मी कर्म और भाज्य के संयोग से प्राप्ति होती है  
साधना से कर्म और भाज्य जाग्रत होते हैं

# स्थायी लक्ष्मी साधना

जिन्हे आपको इस रूप अवश्य सम्पन्न करना है

साधक का कर्तव्य है कि वह अपने जीवन में श्रेष्ठ कर्म करे, श्रेष्ठ ज्ञान की प्राप्ति हो, उसे श्रेष्ठ गुरु प्राप्त हो, जब जीवन में गुरु प्राप्त होते हैं। तो वे साधक को साधना पथ पर अग्रसर करते हैं। गुरु मुख से प्रदत्त छः आवश्यक लक्ष्मी साधना - अष्ट लक्ष्मी साधना, बाधा निवारण - शिव लक्ष्मी प्रयोग, स्थिर लक्ष्मी प्रयोग, ऋषि मोचन लक्ष्मी प्रयोग, कुबेर लक्ष्मी प्रयोग, नित्य लक्ष्मी प्रयोग।

लक्ष्मी से सम्बन्धित साधनाओं के कुछ विशेष नियम हैं, जो कि साधक को पूर्ण सिद्धि प्रदान करते हैं, लक्ष्मी की सकता है, ऐसी स्थिति में साधक को चाहिए कि वह अपने साधना पूर्ण निष्ठा एवं आत्मविश्वास के साथ करनी चाहिए।

लक्ष्मी मंत्र का जप किसी भी समय सम्पन्न किया जा सकता है, लक्ष्मी साधना में साधक को शुद्ध एवं पवित्र वस्त्र पहनने चाहिए, स्त्री को सुन्दर वस्त्र पूर्ण साज-सज्जा के साथ पहन कर लक्ष्मी पूजा करनी चाहिए।

लक्ष्मी पूजन के समय वातावरण अत्यन्त सुगन्धित होना चाहिए, वस्त्रों पर इत्र, सुगन्धित द्रव्य आदि का प्रयोग करना चाहिए।

पूजन में सुगन्धित पुष्पों का प्रयोग करना चाहिए, आसन के लिए पीला आसन उपयुक्त रहता है तथा सुन्दर वस्त्र धारण कर अथवा पीले वस्त्र धारण कर लक्ष्मी साधना सम्पन्न करें।

साधक के बांध ओर तेल का तथा दाहिनी ओर शुद्ध धी का दीपक प्रज्वलित करना चाहिए, दोनों दीपकों के बीच सुगन्धित अगरबत्ती लगानी चाहिए।

साधक का मुंह पूर्व या उत्तर की ओर होना चाहिए, उनके सामने साधना से सम्बन्धित यंत्र, चित्र, मूर्ति आदि स्थापित करनी चाहिए।

लक्ष्मी साधना, साधक अपनी धर्म पत्नी के साथ बैठ कर सकता है, ऐसी स्थिति में साधक को चाहिए कि वह अपने दाहिनी ओर पत्नी को बिठाएं।

लक्ष्मी से सम्बन्धित निरन्तर साधना, करने वाले साधक के लिए यह पूर्ण अभीष्ट फलदायक रहता है, कि उसके पूजा स्थान में लक्ष्मी से सम्बन्धित तीन महायंत्र - श्रीयंत्र, कुबेर यंत्र, कनकधारा यंत्र में कम से कम एक को तो अवश्य ही स्थापित होना चाहिए, यंत्र पूर्णतया शुद्ध एवं प्राण प्रतिष्ठा युक्त हो।

लक्ष्मी साधना से पूर्व गणपति पूजन एवं गुरु पूजन शास्त्रों में आवश्यक माना गया है।

## 1. अष्टलक्ष्मी साधना

यह प्रयोग शनिवार या मंगलवार को छोड़ कर किसी भी दिन प्रारम्भ किया जा सकता है, यदि नित्य ज्यारह मालाएं जप किया जाय तो निश्चय ही साधक को धन, धान्य, कुटुम्ब-

सुख, व्यापार-वृद्धि, कीर्ति, सम्मान एवं भाग्योदय संभव होता

है, इस साधना में साधक को अपने पूजा स्थान में ताम्रपात्र पर

अंकित मंत्र सिद्ध 'अष्टलक्ष्मी यंत्र' स्थापित करना चाहिए।

यंत्र एवं चित्र का पूजन कुंकुम, केसर, अबीर-गुलाल, मौली,

अक्षत, पंचामृत, गंगाजल, सुपारी, इत्र, दूध के प्रसाद से सम्पन्न करना चाहिए।

### मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं रूपे प्रसीद । ॐ श्रीं दिव्यानुभावे प्रसीद  
प्रसीद । ॐ ह्रीं उज्ज्वले प्रसीद प्रसीद । ॐ ह्रीं श्रीं स्वाहा ॥  
उज्ज्वल रूपे प्रसीद प्रसीद । ॐ ह्रीं श्रीं ज्योतिमयि  
प्रसीद प्रसीद । ॐ श्रीं ज्योतिरूपथरे प्रसीद प्रसीद । ॐ ह्रीं श्रीं मम  
मम गृहं मम गृहस्य अंगणं नन्दनवनं कुरु कुरु । ॐ अमृत कुम्भे प्रसीद प्रसीद । ॐ अमृतकुम्भ रूपे प्रसीद  
प्रसीद । मम वाञ्छितं देहि देहि । ॐ ऋद्धिदे प्रसीद  
प्रसीद । ॐ समृद्धिदे प्रसीद प्रसीद । ॐ महालक्ष्मी  
प्रसीद प्रसीद । ॐ श्रीं लोकमातः प्रसीद प्रसीद । ॐ  
श्रीं लोकजननि प्रसीद प्रसीद ।

ॐ श्रीं शोभा वर्द्धिनि प्रसीद प्रसीद । ॐ श्रीं अमृत  
संजीवी प्रसीद प्रसीद । ॐ श्रीं शांत लहरि प्रसीद  
प्रसीद । ॐ श्रीं प्रशान्तलहरि प्रसीद प्रसीद । ॐ श्रीं  
ॐ श्रीं शान्तप्रशान्तलहरि प्रसीद प्रसीद । ॐ श्रीं  
जलैं श्रीं नमः । ॐ ह्रीं सर्वशत्रु दमनि सर्व शत्रु निवारय  
निवारय, विघ्नं छिन्दि छिन्दि प्रसीद । धरणेन्द्रपद्मावति  
मम सुखं कुरु कुरु प्रसीद प्रसीद ।

इस मंत्र का जप कमलगद्वा माला 51 बार सम्पन्न करना चाहिए। यह प्रयोग एक से अधिक बार कर सकते हैं।

साधना सामग्री - 300/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

## 2. बाधा निवारण - शिव लक्ष्मी प्रयोग

जिस साधक अथवा साधिका को अपने कार्यों की पूर्णता में बार-बार बाधाओं का सामना करना पड़ रहा हो, उचित के उचित साधन प्राप्त नहीं हों, शत्रुओं का भय अधिक रहता हो, उसे यह शिव प्रयोग अवश्य सम्पन्न करना चाहिए।

किसी भी सोमवार को प्रारम्भ किये जाने वाले इस साधना प्रयोग हेतु मंत्र सिद्ध प्राणप्रतिष्ठायुक्त 'स्फटिक शिवलिंग' अथवा 'नमदेश्वर शिवलिंग' अत्यन्त उत्तम रहता है, मंत्र जप 'शंख माला' से सम्पन्न करना चाहिए, साधना के समय सर्वप्रथम गुरु पूजन एवं गणपति पूजन करने के पश्चात् शंख माला से 'ॐ नमः शिवाय' मंत्र की एक माला का जप करें, साथ ही साथ निरन्तर दूध मिश्रित जल शिवलिंग पर अर्पित करते रहें, इसके पश्चात् नीचे लिखे शिव लक्ष्मी मंत्र जप के साथ ही साथ बिल्व पत्र शिवलिंग पर अर्पित कर एक माला मंत्र जप करें।

### मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं ठं ठं ठं नमो भगवते मम सर्व कार्याणि  
साधय साधय मां रक्ष रक्ष शीघ्रं मां धनिनं कुरु कुरु हुं  
फट् श्रियं देहि प्रज्ञां देहि ममापत्ति निवारय निवारय  
स्वाहा ॥

यह साधना प्रयोग सात दिन तक सम्पन्न करने से साधक को सभी कार्यों में सिद्धि प्राप्त होती है, और उसकी विपत्तियां दूर होती है, शत्रुओं को तेज क्षीण होता है।

साधना सामग्री - 300/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

## 3. स्थिर लक्ष्मी प्रयोग

यह प्रयोग लक्ष्मी प्राप्ति का तंत्र प्रयोग है, इस प्रयोग में साधक को मृग चर्म का आसन या ऊनी आसन बिछा कर मंत्र जप करना चाहिए, इस साधना में साधक अपने सामने पूजा स्थान में लकड़ी के बाजोट पर लाल वस्त्र बिछा कर चौकोर रूप में '21 लक्ष्मी प्राकाम्य' स्थापित करें और बीच में 'गणपति लक्ष्मी चित्र' तथा 'गुरु चित्र' स्थापित करें, मौन रूप से प्रतिदिन एक माला मंत्र जप कर, एक लक्ष्मी प्राकाम्य किसी सरोवर, जलाशय अथवा कुंए में अर्पित कर दें।

21 दिन के इस विशिष्ट साधना काल में ही साधक को विशेष अनुभव होते हैं, रुके हुए कार्य पूरे होने प्रारम्भ हो जाते हैं, इस साधना में 'स्फटिक माला' का प्रयोग करना चाहिए।

### मंत्र

॥ॐ हां ह्रीं हां ह्रीं श्रीं क्रीं क्रीं क्रीं स्थिरां स्थिरां ॐ ॥

साधना सामग्री - 260/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

गृहस्थ से भागने की जस्तरत नहीं  
है, जस्तरत है एक तरफ रखड़े होकर  
देखने की, ...तुम्हारी एक आंख  
गृहस्थ पर हो, तो दूसरी आंख गुरु  
चरणों में नमन युक्त होनी चाहिए,\*  
तब तुम्हारे जीवन में कोई न्यूनता  
रहेगी ही नहीं, क्योंकि वह नमन  
युक्त आंख तुम्हारे जीवन को पूरी  
तरह से संवार देगी, सजग कर देगी,  
प्रकाशित कर देगी।

#### 4. ऋण मोचन लक्ष्मी प्रयोग

इस साधना में साधक को अपने पूजा स्थान में 'लक्ष्मी चित्र' स्थापित करने के पश्चात् बहुत सारा चन्दन घिस कर थाली में लगा कर उस थाली में मंत्रसिद्ध प्राणप्रतिष्ठायुक्त 'तीन मोतीशंख' एक साथ स्थापित करने चाहिए, इन तीनों पर 'श्रीं' बीज मंत्र का जप करते हुए सिन्दूर अर्पित करें, बीज मंत्र की एक माला जप के पश्चात् सुगन्धित अगरबत्तियां जलाएं और ऋणमोचन लक्ष्मी मंत्र का जप कमलगद्वा माला से सम्पन्न करें, इस साधना में तेल का दीपक होना चाहिए। प्रतिदिन एक माला मंत्र जप सम्पन्न करने से साधक के ऋणों का नाश होता है तथा मानसिक शांति प्राप्त होती है।

सात दिन की इस साधना में सफलता पूर्ण रूप से प्राप्त हो तो 44 दिन तक यह मंत्र जप करें, साधना की पूर्णता के पश्चात् तीनों मोती शंख अपने पूजा स्थान में ही लाल वस्त्र में बांध कर रख दें।

मंत्र

॥ॐ ह्रीं क्रीं श्रीं श्रीवै नम मम लक्ष्मीं मामृणेत्तरीण्  
कुरु कुरु सम्पदं वर्धय वर्धय नमः ॥

साधना सामग्री - 290/-

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

#### 5. कुबेर लक्ष्मी प्रयोग

यह सरल प्रयोग एक दिन का है, और बाद में नित्य प्रति एक माला इस विशेष मंत्र का जप करना आवश्यक है, इस प्रयोग में पूजा स्थान में 'लक्ष्मी चित्र' के साथ-साथ 'कुबेर यंत्र' स्थापित करना आवश्यक है, इस प्रयोग में अपने सामने धी का दीपक और अगरबत्ती अवश्य जलाएं।

मंत्र

कुबेर त्वं धनाधीश गृहे ते कमला स्थिता।  
तां देवी प्रेषयाशु त्वं मदगृहे ते नमो नमः ॥

यह साधना प्रयोग बुधवार को प्रारम्भ करना चाहिए, पूजन कक्ष में कुबेर यंत्र पर अबीर-गुलाल, अक्षत, फल इत्यादि समर्पित करने के पश्चात् मंत्र जप के साथ-साथ दूब, कमलबीज अवश्य अर्पित करने चाहिए, यह प्रयोग सम्पूर्ण दरिद्रता नाशक प्रयोग है, इस मंत्र का 'स्फटिक माला' से निरन्तर जप करने से दरिद्रता दूर होती है, और लक्ष्मी साधक के घर में स्थिर होती है।

साधना सामग्री - 350/-

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

४५ 'सितम्बर' 2009 मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान '69' ४५



#### 6. नित्य लक्ष्मी प्रयोग

यह प्रयोग प्रत्येक साधक को नियमित रूप से सम्पन्न करना चाहिए, इस साधना में अपने पूजा स्थान में 'कनकधारा यंत्र' स्थापित कर प्रतिदिन पुष्प आदि से पूजा करनी चाहिए, तत्पश्चात् नित्य प्रति पूजन सम्पन्न किया जाता है, फिर गणपति एवं गुरु पूजन के पश्चात् एक माला निम्न मंत्र का जप अवश्य करना चाहिए।

मंत्र

ॐ नमो ह्रीं क्रीं श्रीं क्लर्णं क्लर्णं श्रीं लक्ष्मी मम  
गृहे धनं चिन्तां दूरं करोति स्वाहा ॥

इस मंत्र का जप किसी भी समय किया जा सकता है, इस मंत्र के निरन्तर जप से नित्य प्रति की चिन्ताएं कम होती हैं, तथा खर्च के अनुपात में आमदानी में वृद्धि होती है तथा मन में हर समय प्रसन्नता बनी रहती है।

साधना सामग्री - 240/-

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

रूप और उनंग उपापके जीवन का उल्लास है

पुरुष का सौन्दर्य अनंग रूप है  
स्त्री का सौन्दर्य इति रूप है

उनंग इति मिलन उपापके जीवन में हो

## सौन्दर्यान्विषय साधना

जब मन और तन में बम्बन की ब्याह हो, शीत ऋतु में भीतर उष्णता हो, वर्षा में मन भीगे और शरीर का अंग-प्रत्यंग जाग्रत हो बही सौन्दर्य है, जो छिपाये नहीं छिपता, कभी आंखों से तो कभी हावभाव से प्रकट हो ही जाता है, अवश्य करें सौन्दर्य साधना -

जीवन में हास्य, विनोद, आनन्द व तृप्ति प्राप्त हो जाना कोई सामान्य सी बात नहीं है, यह तो जीवन की श्रेष्ठतम उपलब्धि है, जिसे प्राप्त करने के लिए बड़े-बड़े योगियों और ऋषि मुनियों ने कठिन से कठिन तप किये हैं, तब जाकर वे पूर्ण कहलाये और यह दिखा दिया कि यदि व्यक्ति दृढ़ निश्चयी कुछ नहीं कर पाता, और जब ऐसा होगा तो उसके चेहरे पर एक ओज, एक उमंग, एक आह्लाद, एक प्रसन्नता, स्वतः ही इलकने लग जायेगी... और यहीं तो वास्तविक सौन्दर्य है।

सौन्दर्य किसी नारी, अप्सरा या प्रकृति का नाम नहीं है, वे तो केवल सौन्दर्य के प्रतिमान हैं। जिसे देखकर आप अपने-आप को चिंतामुक्त अनुभव करने लगें, और आनन्द की स्थिति उत्पन्न होने लगे, सही अर्थों में वही सौन्दर्य है।

आज सौन्दर्य प्रसाधनों के माध्यम से व्यक्ति सौन्दर्यशाली बने रहने का प्रयास करता है तरह-तरह के विटामिन्स खाता है। सौन्दर्य विशेषज्ञ भी सौन्दर्य का स्थायी हल ढूँढने के प्रयास में रत है, किन्तु आज तक स्थायी उपाय प्राप्त करने में असफल ही है। हां, यह जरूर है कि सर्जरी के माध्यम से चेहरे व शरीर की झुरियां को समाप्त करने में डॉक्टर सफल हुए हैं, किन्तु यह चिकित्सा अत्यन्त मंहगी है, और अत्यन्त कष्ट साध्य भी है, जिसे अपनाना प्रत्येक व्यक्ति के सामर्थ्य की बात नहीं है।

यदि हम अपना थोड़ा-सा ध्यान ऋषि परम्परा द्वारा अविष्कृत उपायों पर डालें, तो हमें पता चलेगा कि सौन्दर्य का स्थायी उपाय उन लोगों ने बहुत पहले ही ढूँढ निकाला है। हमारे प्राचीन ऋषियों धन्वन्तरी, अश्विनी, च्यवन आदि ऐसे व्यक्तित्व हुए हैं, जिन्होंने अपने पूरे जीवन को इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु लगा दिया कि -

- ★ आखिर जीवन का वास्तविक तथ्य क्या है?
- ★ कैसे अपने आप को ओजस्वी, यौवनवान और सौन्दर्यवान बनाया जा सकता है?
- ★ किस प्रकार बुढ़ापे को जवानी में बदला जा सकता है?
- ★ किस प्रकार अपने पूरे शरीर का कायाकल्प किया जा सकता है?

‘कायाकल्प’ का तात्पर्य उस सदाबहार तरोताजगी अद्वितीय सौन्दर्य और उस मस्ती से है, जो जीवन में आनन्द का बीज बो दें, 60 वर्ष के वृद्ध को भी 16 वर्षीय पूर्ण सौन्दर्य प्रदान कर दें, क्योंकि व्यक्ति तन से भी अधिक मन पर थोपे गये विचारों से बूढ़ा हो जाता है, और उसका सारा सौन्दर्य ही ढल जाता है... जीवन में इस आनन्द का होना ही सौन्दर्य वृद्धि है।

सौन्दर्य तो आधार है जीवन का, ईश्वर का दिया हुआ वरदान है, जिसका तात्पर्य प्राप्त होना जीवन की श्रेष्ठता, पूर्णता कहीं जाती है। जितने भी ग्रंथ, वेद, पुराण लिखे गये हैं, उन सब में सौन्दर्य का विस्तृत विवेचन हुआ है।

सुन्दर होना, सुन्दर विखना, सुन्दरता का सम्मान करना, उसकी प्रशंसा और सराहना करना मानव का धर्म है।

मैंने अपनी जीवन में सिद्धाश्रम में अनिन्द्य सुन्दर साधिकाओं और संन्यासियों को देखा है एक से बढ़कर एक सुन्दरियों व अप्सराओं को भी साधनारत होते देखा है, जो अपनी देहयष्टि को पूर्ण योवनवान और चैतन्यवान बनाये रखने के लिए साधनारत रहती है।

**अनिन्द्यं अद्वितीयं च सौन्दर्यं यान्ति निश्चितम् ।  
साधनां सौन्दर्यर्थ्याम् कांक्षन्त्यपसरोऽपि यत् ॥**

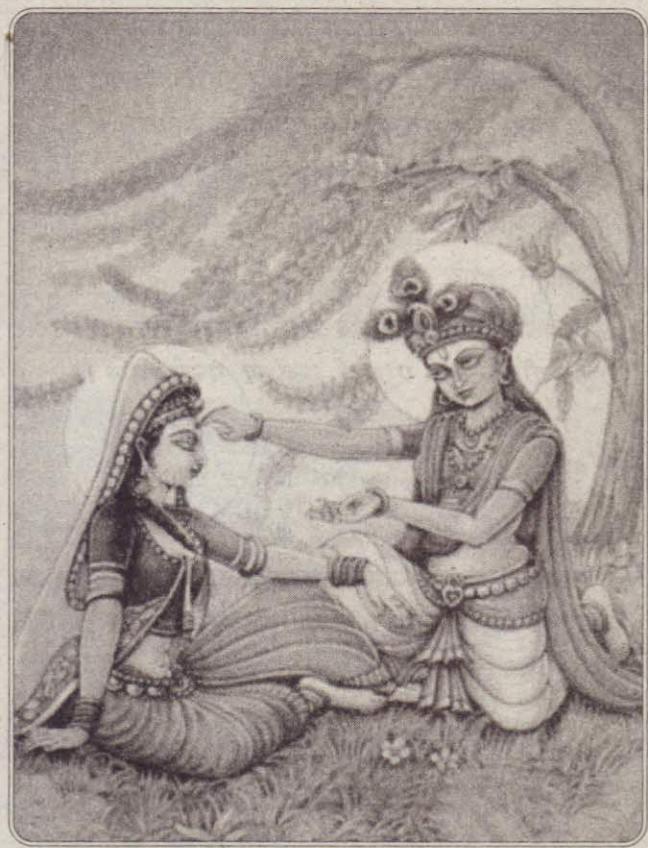
‘निश्चित रूप से साधना के द्वारा भी अनिन्द्य सौन्दर्य प्राप्त किया जा सकता है, अप्सराएं भी सुन्दरतम बनने के लिए सौन्दर्य करती हैं।’

‘सौन्दर्य साधना’ ऐसी ही अद्वितीय साधना है, जिसे अप्सराओं ने भी सिद्ध किया, वेसे तो पूर्ण योवनवान और सौन्दर्यवान बनने के लिए 16 प्रकार की अप्सराओं की साधनाओं का ही महत्व पुराणों में प्रतिपादित किया गया है, किन्तु जिसे प्राप्त करने के लिए स्वयं अप्सरायें भी लालायित हों, उस सौन्दर्य की तो मात्र कल्पना होना, जीवन का सौभाग्य है, जीवन की श्रेष्ठता है, जीवन की सम्पूर्णता है।

इस साधना को स्त्री व पुरुष दोनों ही सम्पन्न कर अपने शरीर का पूर्ण कायाकल्प कर सकते हैं, जहां पुरुष यह साधना कर ऊंचा कद, उन्नत ललाट, अत्यधिक दिव्य और तेजस्वी आंखें, उभरा हुआ वक्षस्थल, लम्बी भुजाएं और उसके साथ ही साथ दृढ़ता, पौरुषता, साहस प्राप्त कर ऐसे सौन्दर्य का मालिक बनता है, जो दर्शनीय हो, शौर्य और साहस का प्रतिबिम्ब हो, वहीं स्त्रियों भी सांचे में ढला हुआ भरा-पूरा शरीर, गोरा रंग, अण्डाकार चेहरा, उन्नत उरोज और मुट्ठी में आने लायक कमर - एक ऐसा शरीर जो खिले हुए गुलाब के पुष्प की याद दिलाता हो, जिसे देखकर बहते हुए झरने का लुभावना नृत्य दिखाई दें, जिसके एहसास से ही जीवन में आनन्द की अनुभूति होती हो, अवश्य प्राप्त कर लेती है।

### साधना विधान

1. कामदेव के मंत्रों से प्रतिष्ठित ‘सौन्दर्य यंत्र’, ‘रूपा माला’ और ‘नीलकर्ण मुद्रिका’ इन तीनों सामग्रियों को साधना से पूर्व साधक प्राप्त कर लें।
2. यह साधना कार्तिक मास में किसी भी दिन प्रारंभ करें या फिर माह के किसी भी शुक्रवार के दिन इस साधना को प्रारम्भ करें।



3. रात्रि को 8.45 से 11.30 के मध्य यह साधना करें। साधना करने से एक दिन पूर्व ही अपने साधना कक्ष को अच्छी तरह धोकर साफ-सुथरा कर लें। साधना काल में प्रत्येक सामग्री में नूतनता स्पष्ट होनी चाहिए, क्योंकि सौन्दर्य साधना के लिए यह सब आवश्यक है।
4. स्वयं भी स्वच्छ और सुरुचिपूर्ण वस्त्र धारण करें। अपने सामने एक चौकी बिछा कर, उसके ऊपर एक कपड़ा बिछा लें, पानी से भरा एक सुन्दर कलश रखें, उसके ऊपर पीले चावल हल्दी से रंगकर एक प्लेट में, जो उस कलश पर रखी जा सके, रख दें।
5. पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुख कर, सफेद आसन पर बैठकर यह साधना सम्पन्न करें।
6. इसके बाद यंत्र को जल से धोकर पोंछ लें, और यंत्र पर इत्र छिड़क दें, तथा अपने ऊपर भी इत्र छिड़कें, धूप व दीप से वातावरण को सुगन्धित बनायें।
7. यंत्र को पीले चावलों के ऊपर स्थापित करें, इसके बाद यंत्र पर केसर से पांच बिन्दी लगाएं, जो पांच प्राणों की प्रतीक हैं, क्योंकि सौन्दर्य का प्रतिस्फुरण इन्हीं प्राणों के माध्यम से शरीर में अभिव्यक्त होता है।

10. 'मुद्रिका' को भी यंत्र के ऊपर स्थापित कर दें।
11. उ॒ँ गन्धद्वारा दुराधर्षा नित्यंपृष्ठा करीषिणी।  
ईश्वरी सर्वभूतानां तामिहोपहवयेश्रियम् ॥  
इस मंत्र को बोलते हुए यंत्र पर पांच बिन्दियां लगायें,  
तथा मुद्रिका पर भी एक बिन्दी लगायें।
12. अक्षत चढ़ायें -  
**अक्षतान् धवलान् देवि शालीयांतन्दुलांस्तथा ।**  
**आनीतांस्तव पूजार्थं ज्ञाणं परमेश्वरि ॥**  
यंत्र, कलश तथा मुद्रिका पर चावल छिड़कें।
13. इसके बाद धूप और दीप दिखाकर दोनों हाथों में खुले  
पुष्प लेकर पुष्पांजलि अर्पित करें -  
**नाना सुगन्धं पुष्पाणि यथा कालोद् भवानि च ।**  
**पुष्पांजलिर्मयादत्ता ज्ञाणं परमेश्वरि ॥**  
यंत्र के ऊपर पुष्प चढ़ा दें।
14. इसके बाद दोनों हाथ जोड़कर प्रार्थना करें 'हे देवी!  
आपके भीतर समाहित सभी गुण मुझमें अनुप्राणित  
हों।'
- सौन्दर्यं भवतीरहोके, माधुर्यं ओजमं तेजस्तथेदं ।  
रूपोज्जला, रूपदिव्या प्रपञ्चा, याचे य नित्यं त्वं देहि मातः ॥  
'हे मां! आप सौन्दर्य की अधिष्ठात्री देवी हैं, ओज और  
तेज सभी दिव्य गुण आप में समाहित हैं, मैं आप से  
इसी रूपराशि की प्राप्ति की कामना करता हूँ।
15. इसके बाद निम्न मंत्र का 'रूपमाला' से 54 माला मंत्र  
जप सुविधानुसार रात्रि में 7 दिन में करें -  
**मंत्र**  
**॥उ॒ँ श्रीं सौन्दर्यभिवास्ये श्रीं नमः ॥**
16. जप समाप्ति के बाद गुरु पूजन करें व इच्छानुसार गुरु  
मंत्र जप करें।
17. दो दिन तक इसी प्रकार मंत्र जप करें, इसके बाद  
समस्त सामग्री को नदी या कुएं में प्रवाहित कर दें।  
यह साधना अत्यंत ही प्रभावोत्पादक एवं शीघ्र लाभप्रद है।  
साधना के थोड़े दिन बाद ही आप अपने भीतर विशिष्ट गुणों  
का आविर्भाव अनुभव करेंगे, तथा शनैः शनैः सौन्दर्य वृद्धि  
अनुभव होने लगेंगी और दूसरों के साथ साथ स्वयं को भी इस  
बात का एहसास होने लगेगा। इस साधना को गम्भीरता  
पूर्वक पूर्ण श्रद्धा से करें।

साधना सामग्री - 300/-

५५ 'सितम्बर' 2009 मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान '72' ५५

लक्ष्मी साधना, लक्ष्मी मंत्र,  
गणेश-लक्ष्मी पूजा  
लक्ष्मी से सम्बन्धित अनुभूत विवेचन

## सद्गुरुदेव की अमृतवाणी में

गृहस्थ साधकों के लिये आवश्यक  
लक्ष्मी साहित्य  
जिसमें हैं

### पूर्ण विधि-विधान

#### सद्गुरुदेव साहित्य

ऐश्वर्य महालक्ष्मी साधना	40/-
लक्ष्मी प्राप्ति	60/-
भौतिक साधना एवं सफलता	120/-
विश्व की डलौकिक साधनाएँ	96/-

#### सद्गुरुदेव की सीडी/कैसेट

महालक्ष्मी स्वरूप साधना
जाज्वल्य मान महालक्ष्मी पूजन
श्री लक्ष्मी साधना
विशेष दीपावली पूजन
स्वर्ण पात्र साधना
स्वर्ण प्रिया लक्ष्मी साधना
महालक्ष्मी पूजन
न्यौछावर प्रति सीडी 30/-

#### सद्गुरुदेव वी.सी.डी

लक्ष्मी युक्त शिव शक्ति साधना,  
मनाली (भाग - 1,2,3)  
न्यौछावर प्रति भाग 60/-



# गुरु चरणों में शिष्य की गति है

★ ★ गुरु चरण कमलेभ्यो नमः ★ ★

## गुरु प्रधान ! गुरु समर्पण



गुरु चरणों का ध्यान एवं नित्य प्रति गुरु पूजन ही तो शिष्य का जीवन है, यह पूजा समर्पण साधना है, जिसमें साधक अपने समस्त राग-द्वेष, पीड़ा अपने आंसुओं के माध्यम से कण्ठ से गुरु पुकार करते हुए समर्पित कर देता है, सौंप देता है, अपना समस्त जीवन।

गुरु महिमा का वर्णन केवल वेद पुराण उपनिषद् इत्यादि शास्त्रों में ही नहीं है अपितु जनजन में एक निश्चित आधार के रूप में विख्यात है। महान् सद्गुरुओं ने अपनी स्वयं की

प्रशंसा में कुछ नहीं लिखा, उन्होंने परम ब्रह्म को आधार माना, अपने विचारों को कभी थोपने का प्रयास नहीं किया, उनका चिन्तन केवल सामाजिक चेतना को जागृत कर पूरे समाज के स्तर को सुधारना था। गुरु चाहे वशिष्ठ हों, याज्ञवल्क्य हों, गोरखनाथ हों अथवा रामतीर्थ या विवेकानन्द, किंतु शिष्यों के जीवन में ज्ञान की लौ जलाई जाए। उनके लिए शिष्य की कोई श्रेणी नहीं थी, जो भी शिष्य भावना से युक्त होता था, अपने भीतर आत्म साक्षात्कार करना चाहता था, अपने जीवन के वास्तविक स्वरूप को देखना चाहता था, उस प्रत्येक शिष्य

यदि सद्गुरुदेव सूर्य हैं तो शिष्य उनकी किरणें हैं, और जब ये किरणें, अपना प्रकाश फैलाती हैं, तो सब कुछ आलोकित हो जाता है, अन्धकार का नाश हो जाता है।

### असत्य से सत्य की ओर

महान् गुरुओं ने कभी भी अपनी शक्ति का दुरुपयोग नहीं किया और न ही अपनी शक्ति के चमत्कारिक प्रदर्शन किये, क्योंकि उन्हें ज्ञान था, कि यदि पूरे समाज का उत्थान करना अज्ञान रूपी परत हटानी है तो उसे एक साधारण रूप में अपने पास बिठा कर अपने हाथ से ज्ञान का अमृत प्याला पिलाना पड़ेगा, उसे अपने साथ रख कर कुछ सिखाना पड़ेगा, अन्यथा प्रभाव केवल ऊपर-ऊपर ही रहेगा, और शिष्य वास्तविक अनुभूति प्राप्त नहीं कर सकेगा, इसके लिए उन्होंने सबसे बल पर अपने आपको उस स्तर पह पहुंचाया कि वे जो भी उसके जीवन को आलोकित किया।

बातें कहें वह एक ठोस आधार लिये हो, स्वयं की देखी-

परखी, अनुभव की हुई हों, स्वयं के भीतर संशय की कोई गुजाइश नहीं रहे, क्योंकि यदि स्वयं के भीतर ही संशय है तो जो वाणी उच्चारित होगी उसमें आधार नहीं होगा।

### गुरु और वरदान

क्या आपने आज तक कहीं पढ़ा है कि गुरु ने कोई वरदान कोई भौतिक इच्छा मांगी हो? उन्होंने केवल ब्रह्मत्व प्राप्ति हेतु साधनाएं सम्पन्न कीं, और ब्रह्मत्व प्राप्ति से उनके भीतर वह तेज उत्पन्न हो गया कि यदि किसी ने उनसे कोई वर मांगा तो सद्गुरुदेव के श्रीमुख से उच्चारित हुआ 'तथास्तु' अर्थात् जैसी तुम्हारी इच्छा है, वैसा ही कार्य पूर्ण हो। अब महत्वपूर्ण प्रश्न यह आता है, कि क्या वरदान मांगना शिष्य के लिए उचित है? यहीं शिष्य की भक्ति और उसकी क्षमता का प्रश्न उठ खड़ा होता है। सद्गुरुदेव सब कुछ देखते हुए भी शिष्य के मुंह से कहलाना चाहते हैं और जब शिष्य अपने भीतर के प्रश्नों के उत्तर, अपनी इच्छाओं के उत्तर अपने आप गुरु भक्ति से समाधान कर लेता है, वहीं शिष्य अपने जीवन में सद्गुरुदेव के निकट पहुंच जाता है, इसीलिए शास्त्रों में गुरुदेव के लिए निवेदन है -

**//ॐ ब्रह्म वै दिवो हः सः हिवो वै गुरु वै सदा हः॥**

हे गुरुदेव! आप ब्रह्म स्वरूप हैं, सूर्य स्वरूप हैं, विष्णु स्वरूप हैं, आप मुझे आत्मवत् बना लें, यहीं प्रार्थना है।

आत्मवत् बनने की शिष्य की भावना असत्य से सत्य की खोज के लिए बढ़ते हुए, सार तत्त्व को प्राप्त करना है, जिसे गुरु की सरलता से सूर्य के सदृश तेज पुंज बन कर शिष्य को जाग्रत कर देते हैं।

तुम्हें साधना के और सिद्धियों के मोती  
नहीं मिल रहे हैं, तो यह क्सूर तो  
तुम्हारा ही है, क्योंकि तुम्हें समुद्र में  
घहराई के साथ उत्तरने की क्रिया नहीं  
आई, तुम में पूर्ण रूप से छुबने का भाव  
नहीं आया, गुरु के हृदय सागर में  
निश्चिन्त हो कर छुबकी लगाने की  
क्षमता नहीं आई, और जिस दिन तुम  
घहराई के साथ गुरु के हृदय में छुब  
सकोगे, तब वापिस बाहर आते समय  
तुम्हारी दोनों हथेलियाँ 'सिद्धि' के  
मोतियों से भरी होंगी।

### शिष्य का तात्पर्य नजदीक

आना है, और ज्यादा नजदीक, इतना नजदीक कि गुरु के प्राणों में समा जाय,  
उकाकार हो जाय, गुरु की धड़कनों में  
अपनी धड़कनें मिला ले और जब ऐसा होगा  
तो तुम्हारे अन्दर स्वतः गुरुत्व प्रारम्भ हो  
जायेगा स्वतः दिव्यत्व प्रारम्भ हो जायेगा,  
और स्वतः सिद्धियाँ तुम्हारे सामने नृत्य  
करती सी प्रतीत होंगी।

### तमसो मा ज्योतिर्गमय

जैसे ही शिष्य के अन्तर में गुरु उपरोक्त क्रिया सम्पन्न करता है, उसके जीवन में अज्ञान अन्धकार के बादल स्वतः छिट्ठे जाते हैं, एक नयी सिहरन नयी उमंग, नयी गति, नयी तरंग, जीवन में नाचने लगती है, उसे अहसास होने लगता है कि यहीं वह सब कुछ नहीं है, जिसे पाने के लिए उसने अनमोल मानव रत्न, यह देह रूपी मन्दिर प्राप्त किया है, इसमें स्थापित आत्मा और ब्रह्म का संयुक्त स्वरूप ही उसका अभीष्ट है, गुरु का 'गु' अक्षर और 'रु' अक्षर निश्चय ही अज्ञान से सत्य एवं अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाने की एक मधुर तांत्रोक्त क्रिया है, इसीलिए कहा गया है -

**गुकारस्त्वदन्धकारश्च रुकारस्तेज उच्यते ।  
ज्ञानग्रासक ब्रह्म गुरुरेव न संशयः ॥**

गुरु के पावन चरणों में मानव अपने संचित पुण्यों को लेकर जब दीक्षा का सौभाग्य प्राप्त करता है, तो गुरु का मिलन दिव्य वात्सल्य और ममतायुक्त पिता और माता का शिशु में आत्म मिलन जैसा मनोहारी दृश्य पैदा कर कर देता है। जब गुरु शिष्य को सीने से लगाकर उसे प्यार से ढुलारते हुए 'बेटा' का उच्चारण करते हैं, गुरु अपने हाथ से स्पर्श से आंखों के तेज से शिष्य को नया जीवन, नया चिन्तन, नया दर्शन प्रदान करते हैं तो यहीं तो 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' की पादाम्बुज कल्प कथ्य है।

### मृत्योमर्तिमृतंगमयः

मृत्यु मानव मात्र के लिए भयप्रब्द है, बालक हो अथवा वृद्ध, स्त्री हो अथवा पुरुष, पशु-पक्षी हो अथवा अन्य जीवनधारी, सभी इससे बचना चाहते हैं, लेकिन विद्वि की विडम्बना के आगे कहीं किसी की पार नहीं पड़ती, सभी मृत्यु के आगे नतमस्तक हो युग्मो-युग्मो से काल कवलित होते चले आये हैं,

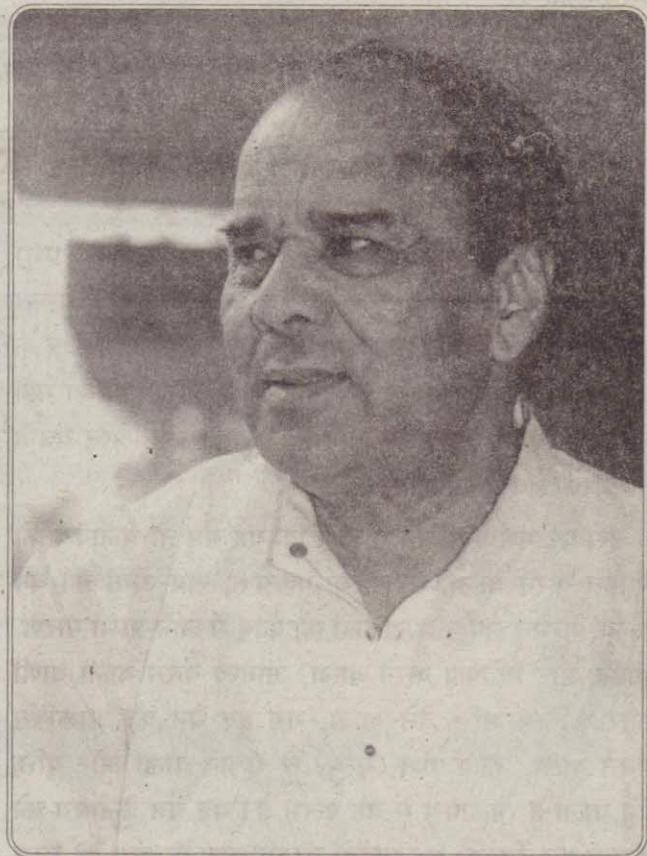
आगे भी यह क्रम चलता जा रहा है। यदि किसी ने मृत्यु को जीवन का श्रुंगार बनाया है, हंसते हुए गले लगाया है, तो वह व्यक्तित्व गुरु का ही है, जिसके आगे मृत्यु अपने आपको ठगा सा महसूस करती है, बौनी हो जाती है उनके व्यक्तित्व के सामने, क्योंकि गुरु ने सदा अमरता को पाठ पढ़ा है, और मृत्यु पर विजय प्राप्त करने की संजीवनी कला से वह पूर्ण पारंगत है।

गुरु अपने शिष्य को आत्मवत् बनाना चाहता है, उसके मृत्यु की ओर बढ़ते कदमों को मोड़ कर उसे अमरता का पाठ पढ़ाता है, वह चाहता है कि अपने सामने ही वह अपने शिष्य को इस योग्य बना दे, कि वह उसके बाद भी स्वयं पूर्ण तेजस्विता प्राप्त करते हुए, समाज को नयी दिशा दे सके, उसके लक्ष्य और कार्य को आगे गति दे सके। शिष्य गुरु के चरणों में बैठ कर अपने जीवन को संवारता जाता है, गुरु रूपी कामधेनु का ज्ञान रूपी मधुर दुर्घटपान करते हुए कल्पवृक्ष सी शीतल छांव रूपी गुरु का वरदानमय आशीर्वाद प्राप्त करते हुए वह कभी थकता और अद्याता नहीं, नित्य नूतन होता हुआ अपने जीवन का पूरा कायाकल्प कर लेता है और इसे ही गुरु पादाम्बुज कल्प का सही रूप कहा जाता है इसीलिए शिष्य अपने गुरु को हर पल, हर क्षण प्रसन्न रखने का प्रयास करता है, क्योंकि उसे मालूम है -

शिवे क्रुद्धे गुरुस्त्राता गुरु क्रुद्धे शिवे न हि ।  
तस्मात्सर्वप्रवृत्तेन श्री गुरुं शरणं द्रजेत् ॥

### गुरु प्राणधार

गुरु और शिष्य की धड़कनें जुदा-जुदा नहीं होतीं, शिष्य के रोम-रोम में गुरु की छवि समाहित रहती है, आंखों में गुरु का तेजस्वी स्वरूप नाचता है, हर पल, हर क्षण, उठते-बैठते, सोते- जागते शिष्य गुरु में ही खोया रहता है, उसका संसार गुरुमय हो जाता है, उसकी हर क्रिया गुरु को अर्पित होती है, अपना स्वयं का अस्तित्व गलते हुए बर्फ सा गलता जाता है, और एक क्षण जीवन में वह आता है कि समस्त क्रियाओं के प्रति उसका कर्त्ताभाव सदा-सदा के लिए तिरेहित हो जाता है, वह गुरु की परछाई सा बैन, गुरुतुल्य हो जाता है, और यही वह क्षण होता है कि गुरु अपने शिष्य को दोनों बांहों में समेट सीने से लगा कर सब कुछ समाहित कर देता है अपने शिष्य में, गुरु पाद सेवा और गुरु युगल चरण शिष्य की धरोहर बन कर साकार हो उठती है, ज्ञान के विराट पुंज में बोध के उन्मुक्त वातायनी क्षणों में, जहां व्यापकता ही व्यापकता भक्ति की महिमा तो अपार है, सत् चित् आनन्द का मधुर मिलन शिष्य का व्यापक



जीवन बन जाता है और इसीलिए शिष्य गुरु को प्राणधार मानते हुए अनायास स्वीकार कर लेता है -

गुरोः पदोदकं युक्त्वा सो सोऽक्षयोवटः ।  
तीर्थराजः प्रव्यागश्च गुरुमूर्त्ये नमो नमः ॥

### कैसे करें गुरु ध्यान -

पद्मासन या सिद्धासन में बैठ कर अपने शरीर के रोम-रोम में गुरु को समाहित करते हुए उनकी उपस्थिति का अहसास करें, मूलाधार से लेकर सहस्रार तक सभी चक्रों में गुरु के ही बिम्ब का ध्यान करें, ज्ञान मुद्रा या तत्व मुद्रा में पांच मिनट शान्त चित्त बैठ कर अपने आपको गुरुमय बना लें और फिर नीचे लिखे मन्त्र का 'गुरु माला' से नित्य 5 माला जप 10 दिन तक करें, तो यह गुरु पादाम्बुज कल्प सिद्ध होता है, जब शिष्य सद्गुरु के चरण कमलों में नमन करता है -

### गुरु मन्त्र

॥ ॐ परम तत्त्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः ॥

वास्तव में गुरु साधना से शिष्य को वह शक्ति प्राप्त होती है कि जब भी चाहे, शान्त भाव से बैठ कर अपने गुरु का ध्यान करता है तो गुरुदेव उसके भीतर समाहित हो कर आधार प्रदान करते हैं, उसके संकट में मार्ग बतलाते हैं..., गुरु भक्ति की महिमा तो अपार है।



अद्भुत उवं आश्चर्यजनक प्रभाव युक्त

## सिद्ध बीसा यंत्र



एक बार देवी पार्वती ने भगवान शिव को कहा कि प्रभु! कर इसे धारण करना ही रहना है। साधक को इसका पूजन आपने मुझे साधनात्मक तत्व की सारी बातें बता दी है परन्तु एक विशेष तरीके से ही सम्पन्न करना चाहिए।

एक बात छिपा रखी है, वह बता दें। मेरु पृष्ठीय बीसा यंत्र के बारे में आपने मुझे अब तक इसकी विधि और माहात्म्य नहीं बताया है और आपका ही कथन है कि यह तो सर्वश्रेष्ठ यंत्र है यह वरुण देव का साक्षात् स्वरूप है।

इस पर भगवान् शिव ने कहा कि यह यंत्र तो त्रैलोक्य को मोहित करने वाला, महासौभाग्यदायक, सब अर्थों को देने वाला, गन्धर्व सर्प और राक्षसों को काबू में लाने वाला मारण, मोहन और विद्रेषण करने वाला, आनन्द करने वाली वाणी और कवित्व शक्ति देने वाला, गड़े हुए धन को आकर्षित करने वाला, काल पाश (मृत्यु) से छुड़ाने वाला और युक्ति देने वाला है, त्रैलोक्य में यह दुर्लभ है। यह यंत्र त्रैलोक्य को वश में कर देता है, क्षुद्र मानवों की तो कथा ही क्या है? जिस साधक के पास यह वरुण देव का यंत्र होता है, उसके निःसन्देह सब मनोरथ पूर्ण हो जाते हैं।

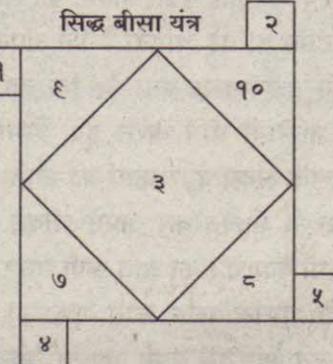
यह यंत्र सामान्य यंत्रों से अलग तथा इस प्रकार से बनाया जाता है कि इसका स्वरूप मेरुपृष्ठीय तथा कुल नौ कोठे होते हैं। सामने दिये गये चित्र के अनुसार ही बना हुआ बीसा यंत्र पूर्ण प्रभावशाली तथा शिवोक्त बीसा यंत्र कहलाता है। केवल यंत्र बना कर धारण कर लेने से ही फल की प्राप्ति नहीं हो जाती, पूर्ण विधि-विधान सहित शास्त्रोक्त पद्धति से इसका निर्माण कर इसका पूजन कर इसको धारण करने से ही यह यंत्र सिद्ध होता है और अपना पूर्ण फल देता है।

### यंत्र निर्माण विधान

इस यंत्र को केवल तीन मुहूर्तों में ही निर्माण कर प्राणप्रतिष्ठा की जा सकती है, ये तीन मुहूर्त हैं, गुरु पुष्य, रवि पुष्य सिद्ध योग, दीपावली है। इन विशिष्ट मुहूर्तों में गुरु शक्तिपीठ जोधपुर में मैं पुज्य गुरुदेव के निर्देशन में कुछ विशेष बीसा यंत्रों का निर्माण कर उनकी प्राणप्रतिष्ठा सम्पन्न की जायेगी। इस यंत्र निर्माण में शुभ मुहूर्त के साथ-साथ षोडशोपचार पूजन तथा लक्ष्मी बीज मंत्रों से आपूरित कर शिव सहस्र सिद्धि मंत्र से सम्पुटित किया जाना है और एक बार जब यंत्र की प्राण प्रतिष्ठा कर दी जाती है तो साधक को केवल इसका पूजन

शुद्ध बीसा यंत्र प्राप्त कर साधक उसे अपने पूजा स्थान में रखें और उस दिन सायं स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर अष्ट गन्ध से कागज या भोज पत्र 21 बार इस यंत्र को लिखें फिर त्रिलोह यंत्र और कागज पर लिखे यंत्रों का केसर व पुष्पों से पूजन कर धूप-दीप दें, अब निम्न मंत्र का एक हजार बार उच्चारण करें।

### यंत्र पूजन विधान



### मंत्र

॥ॐ श्री हीर्व कर्त्ता स्वहार ॥

इसमें सर्वप्रथम ॐकार है, बीच में लक्ष्मी बीज मंत्र 'श्री' है भुवनेश्वरी बीज मंत्र 'हीर्व', काम बीज 'कर्त्ता' है, अब इन कागज पर लिखित यंत्रों को आटे की रोटी में रख कर ऊपर 'त्रिलोह धातु' निर्मित यंत्र को रखें तथा किसी नदी, जलाशय पर जाकर रोटी सहित कागज पर लिखित यंत्रों को प्रवाहित कर दें तथा धातु निर्मित यंत्र को घर ले आएं।

इस प्रकार यह क्रिया सात दिन तक सम्पन्न करें तथा सातवें दिन पूजन करते समय जलाशय के किनारे वरुण देव का ध्यान करें और घर आकर इस यंत्र को गले में धारण करें। इस यंत्र को मुद्रिका रूप में भी बनाया गया है। साधक बांये हाथ में इस यंत्र को धारण कर सकते हैं।

साधक को चाहिए कि नियमित रूप से ऊपर लेखे मंत्र का जप अवश्य करते रहें।

बीसा यंत्र के प्रभाव से बड़े-बड़े संकट सरलता से कट जाते हैं और इसे तो 'त्रैलोक्य विजय यंत्र' कहा गया है, इसमें कोई सदेह नहीं। वास्तव में यह महा यंत्र परिवार के सभी सदस्यों को अवश्य ही धारण करना चाहिए।

# पूर्ण साधना के लिए आवश्यक ही है

## प्राण प्रतिष्ठित साधना उपकरण

पत्रिका के पिछले अंक में आपकी पूजा-साधना में अति आवश्यक दस उपकरणों गुरु चित्र, गुरु चंत्र, गुरु रहस्य माला, श्री चंत्र, पारद शिवलिंग, रुद्राक्ष माला, पारद गणपति, त्रिलक्ष्मी चंत्र, पारद लक्ष्मी, कमल गहे की माला में से प्रथम चार उपकरणों के बारे में विशेष विवेचन प्रस्तुत किया था, उसी कड़ी में इस बार प्रस्तुत है शेष उपकरणों के बारे में विवेचन -

### 5. पारद शिवलिंग

पारद शिवलिंग संसार का एक अद्वितीय और देवताओं की ओर से मनुष्यों को मिला हुआ वरदान है। संसार में बहुत कुछ प्राप्य है और प्रयत्न करने पर सब कुछ मिल सकता है, परन्तु मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित युक्त रस सिद्ध पारे से निर्मित पारद शिवलिंग प्राप्त होना सौभाग्य का सूचक है, इसके दर्शन से पूर्व जन्म के पाप क्षय हो जाते हैं तथा सौभाग्य का उदय होने लगता है।

संसार के सुप्रसिद्ध योगी पूज्य गुरुदेव स्वामी सच्चिदानन्द जी ने कहा है कि जो साधक पारद शिवलिंग अपने घर में रखकर उसकी पूजा करता है या मात्र उनके दर्शन ही करता है वह सभी पापों से मुक्त होकर अनेक सिद्धियों और धन-धान्य को प्राप्त करता हुआ पूर्ण सुख प्राप्त करता है।

रस मार्त्तण्ड में लिखा है हजारों - हजारों शिवलिंगों की पूजा करने से जो फल प्राप्त होता है, उससे भी करोड़ों गुना फल पारद शिवलिंग के पूजन से प्राप्त होता है, कई जन्मों का पाप भी पारद शिवलिंग के दर्शन करते ही दूर हो जाता है। स्पर्श करने से तो निश्चित रूप से मुक्ति प्राप्त होती है, यह स्वयं भगवान शिव का कथन है।

**लक्ष्मी का स्वरूप**

पारद शिवलिंग को भगवान शिव का विग्रह माना है, परन्तु से इसे धोया जाता है।

लक्ष्मी उपनिषद् और अन्य ग्रंथों में पारद शिवलिंग को लक्ष्मी का ही प्रतिरूप स्वीकार किया गया है क्योंकि स्वयं विष्णु ने कहा है कि जिसके घर में शिवलिंग स्थापित होता है, उसके घर में लक्ष्मी अवश्य ही अपनी सम्पूर्णता के साथ स्थापित होती है, और उसके जीवन में आर्थिक अभाव रह ही नहीं सकता।

पारद शिवलिंग से ही जीवन में पूर्ण सफलता और सिद्धि प्राप्त हो सकती है, क्योंकि ऐसा पारद ही शुद्ध, स्वच्छ और दिव्य होता है।

### 6. रुद्राक्ष माला

भगवान शंकर के मंत्र जप के लिए रुद्राक्ष माला शास्त्रसम्मत कही जाती है, माला में 108 मनके होते हैं तथा भगवान शंकर के मंत्रों से एक-एक मनके को शक्ति प्रदान करके चैतन्य किया जाता है तभी यह माला प्रभावशाली बन पाती है, भगवान शिव के जितने भी मंत्र हैं इस एक माला से ही मंत्र जप के बाद पूर्ण माने जाते हैं।

रुद्राक्ष का अर्थ है भगवान शंकर के नेत्रों से उत्पन्न पदार्थ विशेष, जो कि भगवान शंकर के नाम से ही सम्बन्धित है, इस माला को गूंथते समय शिव मंत्र से अनुप्राणित एवं प्राण प्रतिष्ठित करने के बाद सद्योजात मंत्र पढ़कर के पवित्र जल से इसे धोया जाता है।

## सद्योजात मंत्र

ॐ सद्योजातं प्रपदव्यामि सद्योजातवे नमो नमः ।  
भवे भवे नाति भवे भवस्वमाम भवोद्भवाद नमः ॥

## प्रार्थना

माले माले महा माले सर्वशक्ति समन्विते  
चतुर्बज्जर्ण त्वयिन्दिस्तः तस्मान् मे सिद्धिदा भव

इस प्रकार गुप्त मंत्रों से चैतन्य की हुई माला निश्चित रूप से आपके लिए सौभाग्यदायिनी ऊर्जा प्रदान करने वाली होगी ।

भगवान शंकर महादेव कहलाते हैं, ऐसे महान देवता का मंत्र जप किसी भी सामान्य माला से नहीं करना चाहिए, रुद्राक्ष माला मालाओं में अतिउत्तम मानी जाती है और उत्तम तभी है, जब उपरोक्त मंत्रों से उसे प्राण चैतन्यता दी जाए, इस तरह की दिव्य माला आपके पूजा स्थान में होनी चाहिए। इन मंत्रों से अनुप्राणित माला में कितनी शक्ति हो सकती है इसका अनुमान आप स्वयं लगा सकते हैं क्योंकि साधक के जीवन में एक ऐसा समय आता है जब उसे वह शक्ति अनुभव होने लगती है, जो शक्ति साधना सामग्री में निहित है।

## 7. पारद गणपति

पारद का महत्व सर्वविदित है, इसके महत्व का आंकलन रस रत्न समुच्चय नामक ग्रंथ की इस पंक्ति से किया जा सकता है -

“सिद्धरसे करिष्ये निदासिद्धयमगदं जगत्”

अर्थात् यदि पारा सिद्ध हो जाय, तो यह संसार रोग और दरिद्रता से मुक्त हो जायेगा।

इसी रस रत्न समुच्चय में आगे कहा गया है -

मानव शरीर को जरा रोग रहित रखने में कोई भी वनस्पति या धातु समर्थ नहीं है, क्योंकि सभी वस्तुएं पानी से भीगती हैं, आग में जलती हैं और ताप से सूखती हैं, किन्तु पारद ही एकमात्र ऐसी वस्तु है, जो इन सब से अप्रभावित रहता है। पारद को कुछ विशेष प्रक्रिया से बांधकर स्थिरीकरण प्रदान किया जाता है, तो वह अमृत हो जाता है, और इस प्रकार के बद्ध पारद के द्वारा असम्भव कों भी सम्भव बनाने की प्रक्रिया सम्पादित हो सकती है।

...और इसी बद्ध पारे के द्वारा जब भगवान गणपति का विग्रह बनाया जाता है, तो उन पारद गणपति की आराधना करने वाले साधक को विद्या, बुद्धि और समस्त सिद्धियाँ प्रथम विशेषता यह है, कि एक ही बार में व्यक्ति को तीन स्वतः ही प्राप्त होने लगती हैं, क्योंकि ऋद्धि-सिद्धि के पति महाविद्याएं सिद्ध करा देता है और वह भी बड़े सरल और होने के साथ ही साथ मंगलमूर्ति भगवान श्री गणेश वेदनिहित सुगम तरीके से।

समस्त कर्मों में प्रथम पूज्य नित्य देवता है।

सनातन हिन्दू धर्म का कोई भी मांगलिक कार्य बिना भगवान गणपति की पूजा के प्रारम्भ ही नहीं होता। इतना ही नहीं, प्रत्येक देवी-देवता की आराधना करने से पूर्व भगवान गणपति से ही प्राथना की जाती है, कि वे मेरी साधना पूर्ण होने में सहायक बनें। इतना महत्व किसी अन्य देवी - देवता को नहीं प्राप्त है, कितना असाधारण महत्व है भगवान गणपति का हिन्दू धर्म के उपास्य देवों में।

**गणेश का शब्दिक अर्थ है -**

गणों का स्वामी। मानव शरीर पांच कर्मेन्द्रियों, पांच ज्ञानेन्द्रियों और चार अन्तःकरण इन्द्रियों द्वारा संचालित होता है, और इनके संचालित होने के पीछे जो शक्ति है, वह विभिन्न चौदह देवताओं की शक्ति है, जिनके मूल प्रेरणा स्रोत हैं - भगवान गणपति।

भगवान गणपति का स्वरूप अत्यन्त मनोहर एवं मंगलप्रद है। वे एकदन्त और चतुर्भुज हैं। वे अपने चारों हाथों में पाश, वीणा, धान्य मञ्जरी और वर मुद्रा धारण किये हुए हैं। वे रक्त वर्ण हैं, लम्बोदर हैं, शूपकर्ण तथा रक्त वस्त्रधारी हैं। रक्त चंदन के द्वारा उनके समस्त अंग अनुलेपित हैं। उनकी पूजा रक्त पुष्पों द्वारा होती है। वे अपने साधकों पर कृपा करने के लिए साकार रूप में उपस्थित होते हैं। भक्तों की कामना पूर्ण करने के लिए ज्योतिर्मय जगत के कारण तथा प्रकृति और पुरुष से परे होकर वे आविर्भूत हुए हैं।

भगवान गणपति, जो मात्र अपने नाम का उच्चारण करने वाले साधक पर कृपा कर, उसके समस्त विघ्नों का नाश कर, उसके जीवन में सफलता का मार्ग प्रशस्त करते हैं, ऐसे श्री गणपति की आराधना साधना को यदि विशिष्ट क्रम से प्राण-प्रतिष्ठित पारद गणपति के श्री विग्रह पर सम्पन्न किया जाय, तो प्राप्त फल की गणना करना ही संभव नहीं है। इनकी साधना से, नाम स्मरण से, ध्यान, जप और आराधना से मेधा शक्ति का परिष्कार होता है, समस्त कामनाओं की पूर्ति होती है, और समस्त विघ्नों एवं दुःखों का विनाश होकर परम कल्याण होता है।

## 8. त्रिशक्ति यंत्र

यह त्रिशक्ति यंत्र तीन शक्तियों से मिलकर बना होता है - बगलामुखी, छिन्नमस्ता और महाकाली। इस त्रिशक्ति यंत्र की प्रथम विशेषता यह है, कि एक ही बार में व्यक्ति को तीन महाविद्याएं सिद्ध करा देता है और वह भी बड़े सरल और होने के साथ ही साथ मंगलमूर्ति भगवान श्री गणेश वेदनिहित सुगम तरीके से।

बगलामुखी सिद्धि से व्यक्ति को प्रत्येक क्षेत्र में विजय प्राप्त होती है, उसके समस्त शत्रु परास्त होते हैं, वह सहज ही यश, मान, पद, प्रतिष्ठा प्राप्त कर पाता है, वर्षी उसे अद्वितीय ज्ञान लाभ भी होता है, किसी भी विषय पर घंटों धारा प्रवाह बोलने की शक्ति उसके अन्दर स्थापित हो जाती है, बड़े से बड़े विद्वान के साथ भी शास्त्रार्थ कर वह विजयी ही रहता है, इन सब गुणों के कारण व्यक्ति के जीवन में एक सम्मोहन तत्व आ जाता है, उसकी आकर्षण शक्ति में वृद्धि हो जाती है।

**महाकाली का अर्थ है -** काल पर विजय प्रदान करने वाली देवी। अतः ऐसा व्यक्ति दीर्घायु होने के साथ-साथ स्वस्थ, सुन्दर एवं सम्मोहक शरीर का स्वामी होता है, यदि उसके जीवन में अल्पायु योग या आकस्मिक मृत्यु योग होता है, तो वह स्वतः ही नष्ट हो जाता है, ग्रह उस पर कुप्रभाव नहीं डाल पाते और उसके लिए अनुकूल बने रहते हैं। चूंकि महाकाली काल की देवी हैं, अतः ऐसा व्यक्ति विकालदर्शी होकर भूत-भविष्य वर्तमान को चलचित्र की भाँति स्पष्ट देख पाता है और उसे हमेशा भविष्य के बारे में ज्ञात होता है।

छिन्नमस्ता देवी की सिद्धि साधक के जीवन की आध्यात्मिक कमी को दूर करने में सक्षम है। जन मानस में प्रचलित है, कि छिन्नमस्ता उग्र देवी है तथा आध्यात्मिकता प्रधान देवी है।

जो छिन्नमस्ता का स्वरूप है, यदि उसका सूक्ष्म विवेचन किया जाय, तो स्वयं देवी जया और किन्या, ईड़ा और पिंगला और सुषुप्ता हैं। जब अहंकार रूपी सिर छिन्न-भिन्न हो जाता है, तो वहां से निकलने वाले अमृत तत्व से तीनों ही नाड़ियां आप्लावित होती हैं। जिससे जीवन में अमृत तत्व जाग्रत होता है।

...और यही सब सहजता से प्राप्त हो सकती है, इसे ही त्रिशक्ति कहते हैं, इसलिए यह त्रिशक्ति यंत्र कहलाता है। यह यंत्र तो प्रत्येक साधक के पूजा स्थान में अवश्य स्थापित होना ही चाहिए।

## 9. पारद लक्ष्मी

पारद लक्ष्मी के माध्यम से जीवन को ऐश्वर्यवान बनाया जा सकता है, कई बार अत्यधिक परिश्रम के बाद भी हम उसमें सफल नहीं हो पाते, हमारे सभी उपाय व्यर्थ पड़ जाते हैं, परिश्रम धरे रह जाते हैं, ऐसी स्थिति में ही पारद लक्ष्मी, जो प्राण प्रतिष्ठित हो, उसे अपने घर में अवश्य ही स्थापित कर उसका पूजन करना चाहिए।

यजुर्वेद में लक्ष्मी का आह्वान करते हुए स्पष्ट किया गया है कि यदि स्वर्ण ग्रास देकर पारद लक्ष्मी की प्रतिमा घर के अग्नि कोण में स्थापित करें और नित्य उसका पूजन करें तो

उस घर में निरन्तर धन की वर्षा होती रहती है। यजुर्वेद में भी स्वर्णविती के रूप में आह्वान करते हुए उसे पारदेश्वरी शब्द से सम्बोधित किया है। इसमें वर्णन मिलता है कि लक्ष्मी के श्रेष्ठ 108 रूपों में पारदेश्वरी लक्ष्मी अपने आप में अद्वितीय सिद्धि प्रदायक, श्रेष्ठ और सम्पन्नता प्रदान करने वाली है।

सामवेद की एक ऋचा में पारद लक्ष्मी की आराधना करते हुए लिखा है - 'निस प्रकार कल्पवृक्ष समस्त इच्छाओं को पूरा करता है, आप भी उसी प्रकार हमारे जीवन की समस्त कामनाओं की पूर्ति करें।'

धनंजय संचय में वर्णन है कि जो व्यक्ति अपने जीवन में धन ऐश्वर्य व सम्पन्नता प्राप्त करना चाहता है उसे चाहिए कि श्रेष्ठ गुरु के द्वारा अपने साधना कक्ष में पारद शिवलिंग ईशान कोण में तथा पारद लक्ष्मी की स्थापना अग्नि कोण में करे।

पारदेश्वर लक्ष्मी के पूजन से आर्थिक बाधाएं दूर होती हैं और नवीन लाभ प्रारम्भ होते हैं तथा समाज में सम्मान व यश प्राप्त होता है।

## 10. कमल गटे की माला

लक्ष्मी की आराधना मनुष्य जीवन की प्राथमिकता है। लक्ष्मी के अभाव में चाहे वह गृहस्थ हो या सन्न्यासी उसके जीवन में लक्ष्मी का समावेश होना ही चाहिए क्योंकि आज भी और भूतकाल में भी लक्ष्मी की आराधना हुई है और होती रहेगी क्योंकि पूर्वकाल की अपेक्षा आज वर्तमान में इसकी आवश्यकता और भी बढ़ गई है। यह अर्थप्रधान युग है इसलिए घर से बाहर एक पग रखते ही लक्ष्मी की आवश्यकता होती है, इसलिए अपने जीवन को सुचारुरूप से चलाने के लिए लक्ष्मी की आराधना मनुष्य से अपेक्षित है। विश्वामित्र और वशिष्ठ जैसे महर्षियों ने भी लक्ष्मी की आवश्यकता को समझते हुए, विरक्त और त्यागी होते हुए भी लक्ष्मी को अपनी साधना में उचित स्थान प्रदान किया और लक्ष्मीवान बने रहे, जिससे बड़े से बड़े राजा महाराजा इन वैभववान महापुरुषों के सामने न तमस्तक हुए।

दरिद्रता जीवन का अभिशाप है, इस अभिशाप को मिटाने के लिए प्रयास करना चाहिए। लक्ष्मी को कमलवासिनी कहते हैं, कमल उसका आसन है इसलिए लक्ष्मी आराधना यां उसका मंत्र जप कमल बीज की माला से, जिसे हम कमलगटे की माला कहते हैं, करना चाहिए। इस माला से मंत्र जप करने पर भगवती महालक्ष्मी शीघ्र ही प्रसन्न होकर साधक को धन-धान्य प्रदान करती है।

शेष पृष्ठ संख्या 40 पर

# गुरु ऋषाम जोधपुर

जिस भूमि पर सैकड़ों प्रयोग और असंख्य दीक्षाएं  
सम्पन्न हो चुकी हैं, उस सिद्धि चैतन्य दिव्य भूमि

पर ये दिव्य साधनात्मक प्रयोग

समस्त साधकों एवं शिष्यों के लिए यह योजना प्रारंभ हुई है। इसके अन्तर्गत विशेष दिवसों पर जोधपुर 'सिद्धाश्रम' में पूज्य गुरुदेव के निर्देशन में ये साधनाएं पूर्ण विधि-विधान के साथ सम्पन्न कराई जाती हैं, जो कि उस दिन शाम 6 से 8 बजे के बीच सम्पन्न होती हैं। यदि श्रद्धा व विश्वास हो, तो उसी दिन से साधनाओं में सिद्धि का अनुभव भी होने लगता है।

गुरुवार, 15-10-09

काली का स्वरूप सामान्य साधकों के लिये अत्यन्त डरावना है। ऐसे स्वरूप की सीधे साधना करना प्रत्येक साधक के लिए दुष्कर है। इसीलिए उसे काली के उस सौन्दर्यतम स्वरूप की साधना करनी चाहिए, जिसे सुमुखी काली कहा गया है। दक्षिण काली का सर्वाधिक सुन्दरतम स्वरूप सुमुखी काली ही है, जो वाम मार्गी प्रयोग होते हुए भी गृहस्थ साधकों के लिये उपयुक्त है। सुमुखी काली तंत्र सिद्धि, वशीकरण, शत्रु-मारण तथा भाग्यहीनता-निवारण सभी में सहायक है।

जीवन में आने वाली नित्य बाधाओं और परेशानियों से मुक्ति प्राप्त करने हेतु सुमुखी काली प्रयोग और गुरु चरणों में बैठ कर सुमुखी काली प्रयोग सम्पन्न करने मात्र से बढ़कर आपके लिए क्या सौभाग्य होगा? समाप्त कीजिए अपने जीवन की सभी विषमताओं को और आनन्द लीजिये आने वाले कल का।

शुक्रवार, 16-10-09

कनकधारा प्रयोग

यूं तो शांस्त्रों में अर्थ, ऐश्वर्य, सुख-प्राप्ति के अनेक प्रयोग लिखे गये हैं, परन्तु कुछ ऐसे प्रयोग हैं, जो सर्वकालिक श्रेष्ठ ही रहे हैं। उन्हीं प्रयोग में से एक प्रयोग है कनकधारा प्रयोग। इस प्रयोग को सम्पन्न करने से साधक को कई प्रकार के आर्थिक स्रोत प्राप्त होते हैं तथा उससे 'अर्थ का संचय भी होता है।

यदि आपके पास धन आता तो है लेकिन साथ ही साथ वापस भी उसी गति से चला जाता है तथा आप उस अर्थ से ऐश्वर्य की प्राप्ति नहीं कर पा रहे हों और आपको अनेक ऐसे कार्यों पर व्यय करना पड़ रहा हो, जो कि अनपेक्षित है, तो आप इस प्रयोग को अवश्य सम्पन्न करें। कनकधारा प्रयोग - सम्पन्न साधक के घर तो स्वयं कुबेरराज ही विराजमान रहते हैं।

शनिवार, 17-10-09

द्रव्य प्राप्ति गजलक्ष्मी प्रयोग

द्रव्य का तात्पर्य धन, लाभ, वृद्धि से है। धन की देवी हैं लक्ष्मी तथा इसके विभिन्न स्वरूपों में गजलक्ष्मी स्वरूप विशेष प्रभावदायक, फलदायक माना गया है, 'सौभाग्य कल्प लतिका' ग्रंथ के अनुसार यदि कार्यों में निरन्तर हानि हो रही हो, किसी को उधार दिया हुआ धन वापिस नहीं आ रहा हो, आर्थिक हानि त्रस्त कर रही हो तो साधक को लक्ष्मी की पूर्ण कृपा के लिए 'गजलक्ष्मी प्रयोग' अवश्य ही सम्पन्न करना चाहिए।

यह प्रयोग बहुत ही प्रभाव पूर्ण है। अगर इसे गुरु के सान्निध्य में सम्पन्न किया जाये तो ऐसा हो जाएगा कि सकता कि साधक को इसमें सफलता नहीं मिले। धन, सफलता, उत्तरि, लाभ आदि व्यक्ति के भौतिक जीवन में नितांत आवश्यक हैं।

इन तीनों दिवसों पर साधना में भाग लेने वाले साधकों के लिए निम्न नियम मान्य होंगे

1. आप अपने किन्हीं दो मित्रों अथवा स्वजनों को (जो पत्रिका के सदस्य नहीं हैं) मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका का वार्षिक सदस्य बनाकर जोधपुर, गुरुधाम में सम्पन्न होने वाले किसी एक प्रयोग में भाग ले सकते हैं। पत्रिका की एक सदस्यता का वार्षिक शुल्क रुपये 303/- है, जबकि आपको दो सदस्यों का शुल्क मात्र रुपये 570/- ही जमा करवाना है। प्रयोग से सम्बन्धित विशेष मंत्रसिद्ध, प्राण-प्रतिष्ठित सामग्री (यंत्र गुटिका, आदि) आपको निःशुल्क प्रदान की जाएगी।

2. यदि आप पत्रिका-सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं तथा अपने किसी एक मित्र के लिए पत्रिका की वार्षिक सदस्यता प्राप्त कर उपरोक्त किसी साधना में भाग ले सकते हैं।

3. पत्रिका-सदस्य बनाकर आप किसी एक परिवार को ऋषि-परम्परा की इस पावन साधनात्मक ज्ञान-धारा से जोड़कर एक पुनीत एवं पुण्यदायी कार्य करते हैं। यदि आपके प्रयास से एक परिवार में अथवा कुछ प्राणियों में ईश्वरीय चिन्तन, साधनात्मक चिंतन आ पाता है तो यह आपके जीवन की सफलता का ही प्रतीक है। उपरोक्त प्रयोग तो निःशुल्क हैं और गुरु-कृपा द्वारा ही वरदान स्वरूप साधक को प्राप्त होते हैं। प्रयोगों की न्यौछावर-राशि को अर्थ के तराजू में नहीं तोल सकते।

### गुरुधाम में दीक्षा व साधना का महत्व

शास्त्रों में वर्णन आता है कि मंदिर में मंत्र-जप किया जाए तो अति उत्तम होता है, उससे भी अधिक पुण्यदायी होता है; यदि नदी के किनारे करें, उससे भी अधिक समुद्र तट, और उससे भी अधिक पर्वत में करें तो; और पर्वत में भी यदि हिमालय में किया जाए तो और भी कई गुना श्रेष्ठ होता है। इन सबसे भी श्रेष्ठ होता है, यदि साधक गुरु चरणों में बैठकर साधना सम्पन्न करें; और यदि गुरुदेव अपने आश्रम, अर्थात् गुरुधाम में ही यह साधना प्रदान करें तो इससे बड़ा सौभाग्य तो और कुछ होता ही नहीं।

कुछ ऐसे स्थान होते हैं, जहां दिव्य शक्तियों का वास सदैव रहता ही है। जो सदगुरु होते हैं, वे सूक्ष्म रूप से अथवा सशरीर, प्रतिपल अपने धाम में अवस्थित रहते हुए प्रत्येक गतिविधि का सूक्ष्म रूप से संचालन करते ही रहते हैं। इसलिए यदि शिष्य गुरुधाम में पहुंच कर गुरु से साधना, मंत्र एवं दीक्षा प्राप्त करता है और गुरु-चरणों का स्पर्श कर उनकी आज्ञा से साधना प्रारम्भ करता है तो उसके सौभाग्य से देवगण भी इव्वर्या करते हैं।

तीर्थ-स्थल पुण्यप्रद हैं, पर शिष्य अथवा साधक के लिए सभी तीर्थों से भी पावन तीर्थ गुरुधाम होता है। जिस धाम में सदगुरुदेव का निवास स्थान रहा हो, ऐसे दिव्य स्थान पर गुरु-चरणों में उपस्थित होकर गुरु-मुख से मंत्र प्राप्त करने की इच्छा ही साधक में तब उत्पन्न होती है, जब उसके सत्कर्म जाग्रत होते हैं। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए साधकों के लाभार्थ गुरुदेव की व्यस्तता के बावजूद भी जोधपुर गुरुधाम में तीन दिवसों में तीन साधनात्मक प्रयोगों की श्रृंखला निर्धारित की गई है।

योजना केवल इन 3 दिनों के लिये 15-16-17 अक्टूबर 2009

किन्हीं पांच व्यक्तियों को वार्षिक सदस्य बनाकर उनका सदस्यता शुल्क  $300 \times 5 = \text{Rs.} 1500/-$  जमा करा के या उपरोक्त राशि का बैंक ड्राफ्ट मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान के नाम से बनाकर सदस्यों के डाक पते लिखवाकर उपहार स्वरूप ये दीक्षा आप निःशुल्क प्राप्त कर सकते हैं।

यदि दीक्षा फोटो द्वारा प्राप्त करना चाहें तो निर्धारित तिथियों के पूर्व ही अपना फोटो एवं पांच सदस्यों की सदस्यता शुल्क की राशि का ड्राफ्ट मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान के नाम से बनाकर जोधपुर कार्यालय के पते पर भेजें। आपका फोटो, पांच सदस्यों के नाम, पते एवं ड्राफ्ट हमें उपरोक्त तिथि से पूर्व ही प्राप्त हो जाने चाहिए। तत्र विलम्ब से मिलने पर दीक्षा संभव न हो सकेगी। यदि राशि मनीऑर्डर से भेजना चाहें तो फोटो एवं मनीऑर्डर जोधपुर कार्यालय भेजें।

शक्तिपात्र युक्त दीक्षा

## कमला दीक्षा

धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चार प्रकार के पुरुषार्थों को प्राप्त करना ही सांसारिक प्राप्ति का द्येय होता है और इसमें से भी लोग अर्थ को

अत्यधिक महत्व प्रदान करते हैं। इसका कारण यह है कि भगवती कमला अर्थ की अधिष्ठात्री देवी हैं। उनकी आकर्षण शक्ति में जो मातृ शक्ति का गुण विद्यमान है, उस सहज स्वाभाविक प्रेम के पाश से वे अपने पुत्रों को बांध ही लेती हैं। जो भौतिक सुख के इच्छुक होते हैं, उनके लिए कमला सर्वश्रेष्ठ साधना है।

यह दीक्षा सर्व शक्ति प्रदायक है, क्योंकि कीर्ति, मति, द्युति, पुष्टि, बल, मेधा, श्रद्धा, आदोग्य, विजय आदि देवीय शक्तियां कमला महाविद्या की अभिन्न सहयोगी देवियां हैं।

\* दीक्षा आज के युग में एक प्रामाणिक उपाय है कि सफलता की ऊँचाईयों को प्राप्त कर लेने का, जीवन के अमावस्या, अष्टमीपन को दूर कर देने का, जीवन में अतुलनीय बल, साहस, पौरुष एवं शौर्य प्राप्त कर लेने का, साधना में सिद्धि प्राप्त कर लेने का...।

\* गुरु-प्रदत्त शक्तिपात्र द्वारा शिष्य जिस कार्य के द्वारा दीक्षा प्राप्त करता है, उसमें नियुता प्राप्त कर लेता है, क्योंकि वह सफलता और श्रेष्ठता प्राप्त करने का एक लघु उपाय है...।

\* दीक्षा में भाग लेने वाले साधकों को जल से अमृत-अभिषेक करने के उपरान्त विशेष शक्तिपात्र प्रदान किया जाएगा। यह दीक्षा इन तीनों दिवसों में साथ 9 बजे प्रदान की जाएगी।



# पारद शंख



पारद अपने आप में द्विव्य धातु है तथा शिव संहिता में इसे शिव का वीर्य कहा गया है। इसको ठोस रूप प्रदान करने की प्रक्रिया बड़ी विशिष्ट होती है, तदुपरांत जो परिष्कृत पारद प्राप्त होता है वह पूर्ण समृद्धि एवं मोक्ष प्राप्ति में सक्षम होता है।

जब श्रीकृष्ण ने द्वारिका नगरी बसाई तो पहले उन्होंने वास्तुशास्त्र के आधार पर यह सुनिश्चित किया, कि नगरी का आकार शंख की भाँति हो और नगर में समृद्धि तथा सम्पद्धता हो, इसलिए उन्होंने स्वयं पारद शंख-साधना सम्पद्ध की, तभी द्वारिका नगरी अपने समय में सबसे धनी नगरों में सर्वोच्चता पर थी। धन, धान्य, अच्छ, आभूषण, रत्नों, भव्य प्रासादों से पूर्ण यह नगरी इन्द्रलोक के आकर्षण को भी धूमिल कर देती थी। ऐसी ही समृद्धि प्रदान करता है, यह 'पारद शंख', जिसका पूर्ण लाभ किसी भी बुधवार अथवा पुष्य नक्षत्र पर प्राप्त किया जा सकता है।

## जीवन का सर्वश्रेष्ठदान - 'ज्ञानदान'

ज्ञान दान को जीवन का सर्वश्रेष्ठ दान बताया गया है। 20 पूर्व प्रकाशित पत्रिकाएं प्राप्त कर मंदिरों में, अस्पतालों में, समारोहों में, मंगल कार्यों में, अपने मित्रों को, धार्मिक परिवारों को दान कर सकते हैं और इस प्रकार उनके जीवन को भी इस श्रेष्ठ ज्ञान के प्रकाश से आलोकित कर सकते हैं, जो अभी तक इससे वंचित हैं। इस क्रिया के माध्यम से अनेक मनुष्यों को साधनात्मक ज्ञान की शीतलता प्राप्त होगी और उनका जीवन एक श्रेष्ठ पथ पर अग्रसर हो सकेगा।

### क्या करें आप?

आप केवल एक पत्र (संलग्न पोस्टकार्ड क्रमांक 3) भेज दें, कि 'मैं यह अद्वितीय उपहार प्राप्त करना चाहता हूं एवं 20 पूर्व प्रकाशित पत्रिकाएं मंगाना चाहता हूं। आप निःशुल्क मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठित 'पारद शंख' 492/- (20 पूर्व प्रकाशित पत्रिकाओं का शुल्क 402/- + डाक व्यय 90/-) को वी. पी. पी. से भिजवा दें, वी. पी. पी. आने पर मैं पोस्टमैन को धन राशि देकर छुड़ा लूंगा। वी. पी. पी. छूटने के बाद मुझे 20 पत्रिकाएं रजिस्टर्ड डाक द्वारा भेज दें', आपका पत्र आने पर हम 402/- + डाक व्यय 90/- = 492/- की वी. पी. पी. से मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठित 'पारद शंख' भिजवा देंगे, जिससे कि आपको यह दुर्लभ उपहार सुरक्षित रूप से प्राप्त हो सके।

सम्पर्क :- अपना पत्र जोधपुर के पते पर भेजें।

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर - 342031, (राजस्थान)

फोन - 0291 - 2432209, 2433623 टेलीफैक्स - 0291 - 2432010

६३ 'सितम्बर' 2009 मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान '82' ६३

12-13 सितम्बर 2009

**श्री गुरु साधुज्य दरामहालिंगा शिविर**, सुन्दरनगर  
शिविर : जवाहर पार्क, P.W.D. रेस्ट हॉटस के सामने  
सुन्दर नगर, जिला-मण्डी (हि.प्र.)

A decorative horizontal separator at the bottom of the page, featuring a repeating pattern of diamond shapes.

19-20 सितम्बर 2009

आश्विन नवरात्रि साधना शिविर, चितरंजन

**शिविर :** हिन्दुस्तान के बल्स, हाईसकूल मैदान,  
रूपनारायणपुर, चितरंजन (पश्चिम बंगाल)

26-27 सितम्बर 2009

नवरात्रि चामुण्डा साधना शिविर, रामनगर

शिविर : जयराम जनता इंटर कॉलेज, रामगढ़, झि.  
आम्बेडकर नगर (उ.प्र.)

आयोजक: रामनगर: अशोक कुमार शुक्ला - 094504-38157  
○इन्द्रजीत सिंह - 094514-23304 ○अच्छेलाल यादव -  
094505-32131 ○कैलाश सिंह - 099187-96838 ○रमेश कुमार  
निषाद - 090051-80839 ○राजेन्द्र त्रिपाठी - 094151-65411  
○शक्ति प्रताप सिंह - 098389-25957 ○राम प्रसाद - 094517-  
32647 ○राम अजोर - 094504-95922 ○तालुकदार सिंह ○ओम  
प्रकाश पाण्डेय - 098386-22607 ○राम बचन निषाद - 097947-  
33507 ○दिनेश सोनी - 094539-86377 ○अमित कुमार यादव  
- 097210-73979 ○देव प्रभाकर उपाध्याय ○राम करन प्रजापति  
(पेन्टर बाबू) - 094518-60348 ○वीरेन्द्र प्रताप तिवारी  
○शिवशरण विश्वकर्मा ○दयाराम आजाद - 097531-74128  
○योगेन्द्र कृष्ण सिंह ○जियालाल सोनी ○देवी प्रसाद मिश्रा  
○संतलाल साहू ○दलसिंगर यादव ○रमेश चन्द्र सोनी  
○नीरज सोनी - 097945-14388 ○डॉ. राम मिलन ○लाल जी  
सिंह ○महेन्द्र प्रताप सिंह ○संजय मिश्रा ○नन्द लाल सिंह  
○उमाशंकर गुप्ता ○राकेश कुमार यादव ○कपिल देव तिवारी  
○सीताराम निषाद ○मुरली निषाद ○सुरेन्द्र प्रसाद यादव -  
097955-06149 ○राम आशीष यादव ○राजितराम मौर्य ○डॉ.  
अच्छेलाल यादव ○जय प्रकाश पाण्डेय ○तेज प्रकाश तिवारी  
○मलिन्द तिवारी ○इन्द्रमणि पाण्डेय ○रामवृक्ष सिंह ○राम  
प्रसन्न सिंह ○वीरेन्द्र सिंह (एड.) ○शम्भूनाथ कुशवाहा ○रमेश  
चन्द्र सोनी ○राम प्रवेश पासवान - 094507-89929 ○गौतम  
शुक्ला ○रवीन्द्र नाथ तिवारी ○वीरेन्द्र कुमार यादव ○यमुना  
○विनोद ○राधेश्याम ○डॉ. मदनलाल ○सिन्धू शुक्ला  
○शिवानन्द सोनी ○इन्द्रकुमार तिवारी ○महीपत उपाध्याय

○ अकबरपुरः अंगद पटेल ○ राजेश यादव ○ रमेश गुप्ता  
○ अशोक पाण्डेय ○ पंकज निषाद ○ दिनेश सोनकर ○ टाण्डा:  
लालमणि निखिल ○ प्रेम कुमार उपाध्याय ○ फैजाबादः आशीष  
मौर्य ○ अलख पाण्डेय ○ ईश्वर प्रसाद सिंह ○ रणविजय सिंह  
○ आजमगढः राजेन्द्र सिंह - 094500-28622 ○ फौजदार सिंह  
○ परमानन्द सिंह - 098396-04265 ○ हरि प्रसाद जायसवाल  
○ दोहरीघाटः रामकुमार राय ○ अजय कुमार राय ○ सुजीत  
राय ○ व्यास मिश्रा ○ दयाशंकर मिश्रा ○ रिंकु तिवारी  
○ गोरखपुरः राम नारायण पटवा ○ वैजनाथ पाण्डेय ○ बस्ती:  
दिनेश चन्द्र मिश्रा - 099185-04677 ○ रामफेर गुप्ता ○ वाराणसी:  
हरि नारायण सिंह 'विसेन' - 094153-18363 ○ अनुराग तिवारी  
○ राजेश सिंह ○ लक्ष्मी नारायण यादव ○ संदीप कुमार  
○ विवेक दूबे ○ इलाहाबादः ओम प्रकाश पाण्डेय - 090053-  
07769 ○ रायबरेलीः मोहनलाल वर्मा ○ जगदम्बा सिंह  
○ लखीमपुरः अनिल गुप्ता ○ सीतापुरः राम सिंह राठौर  
○ के.के.निखिल ○ बरेलीः एम.पी.सिंह ○ दीपक पाठक  
○ बीसलपुरः श्याम कुमार निखिल - 097617-49450 ○ राम  
कृष्ण वर्मा ○ हरिद्वारः संजय मिश्रा - 093193-72844  
○ शाहजहांपुरः चन्द्रपाल सिंह ○ रामबाबू सक्सेना ○ मनोज  
शुक्ल ○ प्रमोद मिश्रा ○ कायमगंजः प्रदीप भारद्वाज ○ संतोष  
भारद्वाज ○ लखनऊः इन्दु प्रकाश यादव ○ अजय सिंह  
○ खलीलाबादः डी.के. पाण्डेय ○ अश्विनी कुमार गुप्ता  
○ सोनभद्रः पंकज कुमार सिंह ○ गुडगांवः वंशबहादुर यादव  
(वंशी) ○ प्रद्युम्न शर्मा ○ रायपुरः ओमकार सिंह - 092002-  
01111 ○ बबला उपाध्याय ○ नेपालः डॉ. एस.के. धिताल  
○ धनीराम चौधरी ○ विष्णु न्यौपाने ○ दीपक उपाध्याय ○

4 अक्टूबर 2009

पूर्ण भाग्योदय साधना शिविर, मुम्बई

शिविर : रेल्वे ट्रैलफेरर हॉल, मद्या प्रदेश के सामने,  
अम्बेडकर रोड, वी.आई.पी. शोरूम के सामने,  
परेल (ईस्ट), मुम्बई

आयोजक: दिलीप शर्मा - 098678-38683 ○ तुलसी महतो -  
099671-63865 ○ जयश्री सोलंकी ○ पियुष एवं मानवेन्द्र -  
093217-88314 ○ सक्सेना परिवार - 098600-84969 ○ वेन्द्र एवं  
अल्का पंचाल ○ योगेश मिश्रा - 093217-91696 ○ राकेश तिवारी -  
098203-44819 ○ बुद्धीराम पाण्डे - 098190-00414 ○ अमरजीत -  
099676-73807 ○ लोबो - 098207-28386 ○ राहुल पाण्डे -  
098925-56363 ○ नागसेन - 099306-82545 ○ संतलाल पाल -  
096995-89647 ○ भास्करन परिवार - 099600-58894 ○ श्रीराम

- 093226-01979 ○ अनिल कुमारे - 098199-27898 ○ अशोक सोनी  
 ○ द्विवेदी जी - 098211-81782 ○ मनीर - 092246-28895 ○ अजय  
 - 099204-05717 ○ सूर्यकांत गुप्ता - 098693-00041 ○ राहुल पाण्डे  
 - 099875-29516 ○ राजकुमार शर्मा - 098194-65823 ○ प्रीतम  
 भारद्वाज - 099670-66996 ○ अनिता एवं हंसराज भारद्वाज -  
 093230-60793 ○ कवटे परिवार - 092241-47433 ○ जगदीश पारेख  
 - 098228-52451 ○ मूलचंद भाई - 094222-79452 ○ नटुभाई -  
 093200-90040 ○ अनिल भगोरा - 098202-77411 ○ गंगा बेन एवं  
 धनराज - 097631-94469 ○ दयालकर परिवार - 098694-  
 78653 ○ सुशीला बेन - 098198-53393 ○ नीलम बेन - 099306-  
 64579 ○ दीपक तिवारी - 098699-94455 ○ धनाजी - 092235-  
 15135 ○ विश्वकर्मा - 098201-69998 ○ सुजीत - 092261-  
 13660 ○ वृदावन - 098190-53360 ○ गुरमीत - 098196-  
 97877 ○ हरेकृष्ण पांडा - 093220-47593 ○ हर्ष - 098203-  
 69427 ○ वसंत पुरबिया - 098697-03251 ○ जितेन्द्र - 098600-  
 63498 ○ विलास - 090229-87068 ○ आनन्द ○ यशवंत - 098698-  
 02170 ○ पाठक परिवार - 094233-69984 ○ राजकुमार मिश्रा -  
 093205-84850 ○ आर.एस.उपाध्याय - 099696-75905 ○ शैलेश  
 - 25100873 ○ अशोक - 098692-34397 ○ दिनेश - 93231-  
 39860 ○ करिसा बेन ○ कलपेश तिवारी - 093224-37701 ○ हंसल  
 सामिया - 098332-97691 ○ जैसवाल जी - 098927-  
 72846 ○ जांगले जी - 093230-40675 ○ मंगला एवं एस.एम. चित्ते  
 - 093724-39807 ○ घुरा परमार - 092240-11502 ○ अनिल चौधरी  
 - 098927-75998 ○ धुबर ○ सुधीर ○ भावेश लाल ○ चन्द्रकांत  
 ढांडे ○ गुडा भाई ○ योगेन्द्र शर्मा ○ शैलेश पटेल ○ शिव पूजन  
 चौहान ○ डॉ. शिंदे ○ खेरनार - 092262-14798 ○ एस.सी.कालरा  
 - 098198-96353 ○ लम्बेर सिंह - 098190-88466 ○ सुधीर सेठिया  
 - 099201-16856 ○ पंकज बगुल - 096191-61067 ○ सुनैना -  
 099300-91797 ○ पी.आर.अबिल - 098698-63994 ○ सुरेन्द्र  
 भोथरा - 098202-20432 ○ राजेश यादव - 099877-99149 ○ वंदना  
 - 093205-61333 ○ संतोष मौर्या - 69560812 ○ विकास भारद्वाज  
 - 099202-06701 ○ एस.के.यादव - 093230-02844 ○ विकरांत -  
 099208-58757 ○ स्मिता - 098700-30708 ○ विरेन्द्र ○

♦♦ ♦♦ ♦ ♦♦ ♦♦♦ ♦♦ ♦ ♦♦ ♦♦♦

### 11 अक्टूबर 2009

### कुबेर साधना शिविर, बडोदा

शिविर : पटेल पार्टी प्लॉट, किस्ना सिनेमा कम्पाउण्ड,  
 सिद्धनाथ रोड, खड़ेराव मार्केट, बडोदा (गुजरात)

आयोजक: निरंजन पंचाल - 099792-79563 ○ रामदास तडवी -

094271-57415 ○ महेश्वरी भाई - 098250-05963 ○ सुनिल सोनी  
 - 094265-98298 ○ रश्मि रावल - 098987-43110 ○ उषा पंचाल  
 - 099138-20088 ○ पी.डी.झाला - 099259-20594 ○ योगेश पटेल  
 - 099257-32428 ○ सुशील जम्बुसरीया - 099092-05754 ○ राजेश  
 प्रजापति - 099254-91217 ○ वीरेन्द्र राज - 097268-06006 ○ महेन्द्र  
 पंचाल - 099783-69090 ○ नर्मदा बहन - 099097-00241  
 ○ वी.एन.दर्जी - 094267-99591 ○ चिमन पटेल - 099250-13816 ○  
 योगेश तिवेदी - 094270-57325 ○ शैलेन्द्र सिंह - 099981-50980 ○  
 जीतु भाई - 099130-16302 ○ भरत पटेल ○ मनुभाई प्रजापति  
 - 094283-21536 ○ राहोड भाई - 097373-19910 ○ एरनीश  
 सोनी - 099796-95065 ○ मीनाक्षी पंचाली - 099095-63524  
 ○ रसीक पटेल - 099792-67306 ○ अरुण तडवी - 096877-  
 66867 ○ अशोक पंचाल - 099139-11556 ○ वरिष्ठ जी - 093762-  
 15561 ○ मनोज भाई ○ राजू दुमाल - 093762-11404 ○ चिराग  
○ जयेश भाई - 098250-097275 ○ जयनि भाई परमार - 098797-  
 75290 ○ मुकेश भाई - 093272-02775 ○ राहुल भाई - 099099-  
 95599 ○ रावजी मास्टर ○ मनीष भाई - 093282-39042 ○ टीना  
 भाई ○ विद्याभूषण शर्मा - 094275-38339 ○ बाबू भाई झाला -  
 098793-90070 ○ सी.डी.झाला - 096623-71244 ○

♦♦ ♦♦ ♦ ♦♦ ♦♦♦ ♦♦ ♦ ♦♦ ♦♦♦

### 16-17 अक्टूबर 2009 दीपावली महोत्सव, जोधपुर

शिविर स्थल : गुरुदाम, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर.  
 हम सभी जोधपुर स्थित गुरु भाई-बहन गुरु परिवार एवं  
 परम वन्दनीय माता जी की ओर से आपको आमंत्रित कर रहे  
 हैं। हमारे साथ सम्मिलित होकर इस दीपावली साधना उत्सव  
 को मनाने हेतु।

♦♦ ♦♦ ♦ ♦♦ ♦♦♦ ♦♦ ♦ ♦♦ ♦♦♦

### 1-2 नवम्बर 2009

### संद्यास दिवस महोत्सव, भाटापारा

शिविर : कॉलेज ग्राउण्ड, भाटापारा, जिला - रायपुर (छ.ग.)  
 नोट - भाटापारा - मुम्बई-हावड़ा रेलमार्ग पर रायपुर  
 से बिलासपुर के मध्य का मुख्य स्थान है।

आयोजक: अन्तराष्ट्रीय सिद्धाश्रम साधक परिवार (छ.ग.)  
 ○ बबला उपाध्याय - 094255-73575 ○ के.के.तिवारी - 098279-  
 55731 ○ संतोष सोनी - 098265-16245 ○ सुदामा चंद्रा - 094255-  
 74265 ○ ए.के.रंगारी - 093011-91016 ○ महेश देवांगन - 094241-  
 28098 ○ एस.आर.शिंदे - 093003-12599 ○ आर.के. सोनी -  
 093294-16806 ○ अमृत लाल साहू - 094063-01306 ○ भगवती

साहू - 099261-32321 ○ वकील शर्मा - 094252-50670 ○ पवन  
 देवांगन - 093009-74920 ○ भाटापारा: ओंकार सिंह - 092002-  
 01111 ○ राजकुमार सौंव - 093030-62119 ○ गोवर्धन शर्मा -  
 098271-18152 ○ संजय मिश्रा - 093018-15370 ○ गजेन्द्र साहू -  
 096911-58229 ○ बाबूलाल साहू - 098261-58894 ○ परमानंद  
 टण्डन - 099776-80668 ○ मोतीलाल विश्वकर्मा - 092297-  
 49438 ○ अनिल यदु - 092299-53380 ○ संतोष लाहने - 093012-  
 11762 ○ बलौदा बाजार: लेखराम सेन - 098269-57606 ○ दिनेश  
 ठाकुर - 099261-55305 ○ देवनारायण वर्मा - 099776-  
 37110 ○ ताराचन्द्र साहू - 099932-31873 ○ डामन साहू - 099265-  
 29912 ○ लेखराम चन्द्राकार - 099261-14722 ○ रायपुर:  
 बी.सी.साहू - 094252-04172 ○ आत्माराम ध्रुव - 097543-  
 42287 ○ आनन्द शुक्ला - 098274-74721 ○ सुरेश साहू - 097520-  
 61509 ○ ढालूराम साहू - 097529-03003 ○ पवन साहू - 098271-  
 82257 ○ अर्जुन नापित - 094252-15368 ○ मानिक सिन्हा -  
 094242-27038 ○ सिलतरा मांडर: लंकेश्वर चंद्रा - 098274-  
 92838 ○ संतराम साहू - 098266-05904 ○ सिमगा: टीकाराम  
 साहू ○ किंगेश्वर: जागेश्वर साहू - 099261-18986 ○ गरियाबंद:  
 जी.आर.घाटो - 094255-25748 ○ मैनपुर: कुं. आरती ध्रुव -  
 094060-48189 ○ श्रीमती बिन्दु ○ कुम्हारी: कोदूराम साहू -  
 099818-94299 ○ दुर्ग भिलाई: मनोज दुबे - 098274-  
 96080 ○ मंगलदास - 099079-52421 ○ राजेश कुमार - 097523-  
 78732 ○ बालोद: डॉ. महेश्वर नाथ योगी - 099933-  
 16290 ○ एस.आर.कल्याणी - 096854-36499 ○ डॉडी-दल्ली:  
 श्रीमती अनु चौबे - 099813-75631 ○ टिकेश्वर सोनकर - 099267-  
 44288 ○ सुरेश साहू - 092298-40014 ○ नवागढ़: चैन सिंह ठाकुर  
 - 099263-53736 ○ एल.आर.कोरी - 099261-94965 ○ राजनांद  
 गांव: वेदनाथ खोब्रागढ़ - 091795-26837 ○ डागेश्वर वर्मा -  
 094077-11396 ○ बी.एल.वर्मा - 094063-28883 ○ चन्द्र किशोर  
 - 097701-70926 ○ यादेराम कोठारी - 099779-39907 ○ गनपत  
 नेताम - 094060-12157 ○ धमतरी: श्रीमती शैल छाबड़ा - 094060-  
 63631 ○ दिलीप मीनपाल - 098271-87947 ○ सत्यनारायण  
 मीनपाल - 099932-94649 ○ एन.सी.निराला - 093292-  
 78047 ○ सोहन लाल साहू - 099071-34251 ○ रमेश पंसारी -  
 07722-231172 ○ चेतन देवांगन - 094252-90926 ○ मगरलोड़:  
 व्ही.एल.साहू - 097701-26672 ○ दुष्यंत पटेल - 097704-  
 75721 ○ तोरण सिन्हा - 097553-11186 ○ नगरी: तिलक सोनी  
 - 099360-17903 ○ लखन लाल ○ नरोत्तम लाल साहू - 094061-  
 20629 ○ रमेश कुमार मरकाम - 094242-10616 ○ कांकेर: कु.  
 विनीता ठाकुर - 094255-93123 ○ मेहत्तर राम दुर्जे - 093017-

12-13 दिसम्बर 2009

# पूर्ण सौभाग्य साधना शिविर, धनबाद

शिविर स्थल: सिंजुआ स्टेडियम (धनबाद), झारखण्ड

आयोजक: आर.के.राय - 094319-54268 ○ जे.पी.सिंह - 092347-  
 94944 ○ रामलग्नन निषाद - 099312-33407 ○ रामनाथ राउत -  
 098353-60137 ○ सकलदीप रवानी - 092341-23654 ○ सपन  
 कुमार - 099552-94658 ○ सुधीर सुमन - 098355-71588 ○ लैखो  
 कुमार सिंह ○ रंजित पासवान - 097987-56338 ○ उत्तम कुमार  
 चौहान - 090067-60458 ○ रामदेव प्रसाद गुप्ता - 0326-  
 2372548 ○ अनुज कुमार सिन्हा - 098353-69456 ○ सत्येन्द्र कुमार  
 - 0326-2374538 ○ सहदेव प्रसाद चौहान - 099317-  
 82382 ○ मनोहर सिंह - 093340-49826 ○ लालबाबू गुप्ता - 098355-  
 07202 ○ अर्जुन व्यास - 092346-71689 ○ समरशक्ति सिंह -  
 099055-27225 ○ विजय सिंह - 092347-22322 ○ राधानाथ महतो  
 - 098357-71809 ○ लता देवी - 092348-13810 ○ प्रदीप भद्रानी -  
 098355-62509 ○ मनु चौधरी - 093440-1567 ○ गोविन्द ठाकुर -  
 099395-81531 ○ संजय कुमार सिंह - 094313-20502 ○ ओम  
 प्रकाश कुशवाहा - 094315-07549 ○ दिलीप प्रसाद गुप्ता - 098359-  
 60235 ○ अतुल कलिंदी - 099315-22416 ○ जनेश्वर प्रसाद -  
 094315-07559 ○ सच्चिदानन्द धारी - 092348-17179 ○ ओम  
 प्रकाश उपाध्याय - 099345-53341 ○ उमेश झा - 094319-  
 54441 ○ डॉ. मुखर्जी - 094303-45816 ○ महाराज धारी - 098357-  
 06871 ○ पी.के.चक्रवर्ती - 094307-55357 ○ पी.एन.सिंह ○ मनोज  
 गुप्ता - 098351-46254 ○ पी.आर. ता. - 094317-30663 ○ सुरेश  
 सावे - 094313-16453 ○ आर.पी.चौरसिया - 094313-  
 15463 ○ रामनाथ चौहान - 098353-76478 ○ अरुण कुमार सिंह  
 - 094317-31552 ○ सुजान महतो - 094311-91792 ○ श्रीदाम महतो  
 - 093400-4552 ○ राजु साव - 098357-67850 ○ राम कुमार महतो  
 - 098355-97276 ○ चन्दन सिंह - 093343-94092 ○ शैलेन्द्र कुमार  
 सिन्हा - 098351-29018 ○ हौसला पंडित - 098353-  
 03527 ○ वी.एस.वी.राव - 093341-98077 ○ युधिष्ठीर महतो -  
 093340-18463 ○ अरुण कुमार - 092340-79296 ○ दुख हरण  
 पासवान ○ राजेश राव - 099345-11440 ○ गौरी पासवान  
 ○ गनौरी पासवान - 093340-64539 ○ रामजनम पासवान -  
 094313-40365 ○ सुदर्शन सिंह - 099055-53162 ○ रामप्रसाद  
 महतो - 093349-16181 ○ विजय राम - 093348-53933 ○ श्रीप्रकाश  
 सिंह - 098355-71731 ○ जनार्दन प्रजापति - 03262-  
 311326 ○ राजेश कुमार - 093081-10113 ○ विविक बर्मन -  
 094319-14047 ○ अम्बिका प्रसाद ○ ओम प्रकाश जयसवाल -  
 099055-26545 ○ कैलाश शर्मा ○ ओम प्रकाश ओझा - 098355-  
 72543 ○ सच्चिदानन्द सिंह ○ बबन सिंह - 098357-  
 29172 ○ सत्यनारायण राय - 098355-36839 ○ योगेन्द्र राय -  
 098354-90715 ○ बी.पी.सिंह - 093340-11450 ○ डॉ. विजय कुमार  
 - 098355-27315 ○ रविन्द्र प्रसाद ○ अशोक सिंह ○ बी.के.मंडल

- 099343-69579 ○ अजित मंडल ○ हिरा कुमार - 094313-  
 16398 ○ विजयभर ○ हरिश्चन्द्र कहार ○ संजय कुमार शर्मा  
 ○ दयानन्द यादव ○ जनार्दन चौबे - 092341-24010 ○ रंजित  
 कुमार सिंह ○ रंजित पासवान - 097987-56338 ○ उत्तम कुमार  
 चौहान - 094313-20255 ○ श्यामसुन्दर राजभर ○ एनुअल हरिजन  
 ○ बंगाली पासवान - 097987-56338 ○ अनिल विश्वकर्मा -  
 099311-81575 ○ धर्मेन्द्र कपुर - 098523-77830 ○ डॉ.डी.सिंह  
 ○ सिधेश्वर प्रसाद - 098357-06479 ○ दशरथ ठाकुर ○ सुखदेव  
 विद्रोही - 098355-36530 ○ समस्त अन्तर्राष्ट्रीय सिद्धाश्रम  
 साधक परिवार, सिन्हुआ (धनबाद) ○ बोकारो: अन्तर्राष्ट्रीय  
 सिद्धाश्रम साधक, बोकारो ○ पी.एन.पाण्डे - 094311-  
 27345 ○ सुभेश्वर झा - 094317-39993 ○ डॉ.एस.के. बरियार -  
 094307-68664 ○ विजय झा - 094313-79234 ○ गोपाल ठाकुर -  
 094311-45601 ○ संतोष ठाकुर ○ मोहन सिंह ○ अरुण कुमार  
 वर्मा ○ बेरमो (फुसरो): धनेश्वर निखिल - 099553-  
 32125 ○ भगवान दास - 099341-17533 ○ गोमिया: श्रीराम -  
 094315-04350 ○ रामगढ़ तोपाः शोलो मनी - 094313-  
 95121 ○ टाटा: वाई.एन.मुर्ति - 093047-90006 ○ अभय कुमार  
 वर्मा - 098355-63288 ○ रांची: विनोद कुमार सिन्हा - 094315-  
 79976 ○ श्याम चन्द्र सवासी - 093344-33652 ○ सुभाष पोद्दार  
 ○ इन्द्रदेव राम ○ विमल पाठक ○ पटना: डॉ.बी.के.आर्य -  
 092348-88896 ○ हावड़ा: विजय शंकर दीक्षित - 033-  
 2658403 ○ हजारीबाज, विष्णुगढ़: गोपाल सिंह मौर्य - 098355-  
 42120 ○ बासदेव महतो ○ महेन्द्र साव ○ जगदीश प्रसाद  
 स्वर्णकार ○ महेन्द्र महतो ○ डॉ.एस.एन.लाल - 094311-  
 40675 ○ पाकुड़: हरिकिशोर मंडल - 094312-75415 ○ खगड़िया:  
 राममोहर प्रसाद - 093341-07730 ○ अनिरुद्ध झा ○ अजीत  
 सिंह ○ डॉ. अशोक कुमार ○ गया: विरेन्द्र कुमार वर्मा - 097988-  
 62061 ○ नवादा: बाढ़न मिस्त्री - 094300-25917 ○ कोडरमा:  
 रामअवतार प्रसाद - 094319-82587 ○

♦♦ ♦♦ ♦♦ ♦♦ ♦♦ ♦♦ ♦♦ ♦♦ ♦♦

20 दिसम्बर 2009

**नवग्रह शांति साधना शिविर, पुणे**

शिविर स्थल : बालकृष्ण मंगल कार्यालय, डांगे चौक,  
थेरगांव, विचवड पुणे (महाराष्ट्र)

साधना-सामग्री मंगाने हेतु आप कार्यालय में फोन द्वारा  
 आईर लिखा सकते हैं, तोकिन इसमें कई बार थोड़ी चूक हो  
 जाती है। यदि आपके लिये संभव हो तो आप कार्यालय में  
 0291-2432010 पर फैक्स द्वारा आईर भेजें।

स्फटिक की मणिमाला को लेकर उसके प्रत्येक मनके में विधिवत् पूजन और गोपनीय क्रियाओं इत्यादि के द्वारा लक्ष्मी के एक-एक स्वरूप को समाहित कर इस दिव्य और देव दुर्लभ माला का निर्माण किया जाता है। लक्ष्मी का प्रभाव होता ही इतना व्यापक है। इस चराचर जगत में लक्ष्मी ही तो है, जो सभी को मोह लेने में समर्थ है, फिर यदि एक गृहस्थ इसकी कामना करता है, तो उसमें आश्चर्य ही क्या?

माला के रूप में लक्ष्मी का यह समाहितीकरण जहां व्यक्ति के वक्षस्थल को निरंतर सम्पर्कित कर देता है, वहीं लक्ष्मी के सम्पूर्ण स्वरूपों की प्राप्ति व्यक्ति को हो जाने से उसके अन्दर सम्मोहनकारी गुण भी पनपने लगते हैं।

जीवन के अलग-अलग रूपों में आश्चर्यजनक रूप से वह वर-वरद माल्य सहायक सिद्ध होती है। केवल धन-प्राप्ति के क्षेत्र में ही नहीं अथवा व्यापार की उज्ज्ञति के रूप में ही नहीं, वरन् यदि कोई दुष्प्रभाव जीवन अथवा व्यापार आदि के साथ चल रहा हो, तो उसका भी निराकरण स्वतः ही कर देती है। ऋण, दरिद्रता, तनाव, निर्दग्धता, अङ्गरेज़ आदि ऐसी कई दुखद स्थितियां इसके माध्यम से समाप्त हो जाती हैं।

घर में स्त्री हो अथवा पुरुष, इस दिव्य माला को बिना किसी भ्रेद-भाव के कोई भी धारण कर सकता है।

मांगलिक अवसरों पर यदि गृह लक्ष्मी को इस दिव्य लक्ष्मी वर-वरद माल्य को उपहार में दिया जाए, तो न केवल उससे उस स्त्री का सम्पूर्ण जीवन संवर जाता है वरन् उसके माध्यम से उसके घर में ऐसी 'श्री' का प्रादुर्भाव हो जाता है, जिससे जीवन श्रेष्ठ और सफलता युक्त बन जाता है।

यह कोई साधारण माला नहीं है। यह तो एक ऐसी अलौकिक रचना ही कही जा सकती है, जो कभी-कभी ही किसी योग्य व ज्ञाता गुरु के निर्देशन में ही रची जा सकती है, और जिसको तैयार करने में प्रायः एक वर्ष लग जाता है। यह तो एक ऐसी सौगंत होती है जिसे संजोकर रख लिया जाता है, और जो आने वाली पीढ़ियों के लिए अनुपम उपहार सिद्ध होती है।

यह माला किसी साधना का उपकरण नहीं है वरन् यह माला प्राप्त करना ही अपने-आप में सम्पूर्ण साधना है, क्योंकि जिनके पुण्य उद्दित हो जाते हैं, जिनके जीवन में श्रेष्ठता, यश, मान और ऐश्वर्य की प्राप्ति के क्षण आ जाते हैं, वे ही इस प्रकार की देव-दुर्लभ माला प्राप्त कर एक झटके में ही जीवन में उन सभी स्थितियों को प्राप्त कर लेते हैं।

इस बार पत्रिका पाठकों के लिये यह लक्ष्मी वर-वरद माल्य विशेष रूप से तैयार किया गया है, समय रहते इसे अवश्य प्राप्त कर लें।

वर-वरद माल्य - 450/-

सम्पर्क :

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.)

फोन: 0291-2432209, 2433623, फैक्स: 0291-2432010



## COLLECTION OF VARIOUS

- HINDUISM SCRIPTURES
- HINDU COMICS
- AYURVEDA
- MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with



By

Avinash/Shashi

[creator of  
hinduism  
server]

दिल्ली कार्यालय - सिद्धाश्रम 306, कोहाट एन्कलेव पीतमपुरा, नई दिल्ली-34, फोन : 011-27352248, टेली फैक्स 11-27356700

रजिस्ट्रेशन नं. 35305/81

With Registrar Newspapers of India  
Posting Date 06-07 every Month

A.H.W

Postal No. JU/65/2009-11  
Licence to post Without pre payment  
Licence No. RJ/WR/PP04/2009-11



## माह : अक्टूबर में दीक्षा के लिए निर्धारित विशेष दिवस

स्थान  
गुरुधाम (जोधपुर)  
03-04-05 अक्टूबर

पूज्य गुरुदेव निम्न दिवसों पर साधकों से मिलेंगे  
व दीक्षा प्रदान करेंगे। इच्छुक साधक निर्धारित दिवसों  
पर पहुंच कर दीक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

स्थान  
गुरुधाम (जोधपुर)  
15-16-17 अक्टूबर

प्रेषक -

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान

डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी,  
जोधपुर - 342031 (राजस्थान)  
फोन : 0291-2432209, 2433623,  
टेलीफैक्स - 0291-2432010

वर्ष - 29

अंक - 09

	Mem. No. 64525
September - 2009	Upto 01/2010
MRS. KALPANA .JHA 20/1 A S.K.DAW LANE	
Post :KOLKATA	Pin : 700054
Distt :KOLKATA (W.B.)	